धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

अप्रेल-2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी
जन्म कल्याणक 2016

श्री मधुकर महावीर, पेपराल

मोटा महावीर

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- दि. 8 अप्रेल को भीनमाल व 11 अप्रेल को 72 जिनालय भीनमाल में एवं दि. 14 अप्रेल से नवपद ओली में सान्निध्यता।
- दि. 19 अप्रेल को 72 जिनालय पर महावीर जयंती महोत्सव एवं दि. 22 अप्रेल को चातुर्मास घोषणा।
- दि. 24 अप्रेल से दि. 30 अप्रेल तक मधुकर ज्ञानायतन भाग-4 धार्मिक शिक्षण शिविर 72 जिनालय भीनमाल में।
- दि. 4 से 12 मई सियाणा में।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

इस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

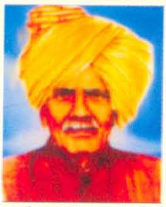

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तत्वतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

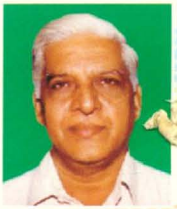
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सूरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

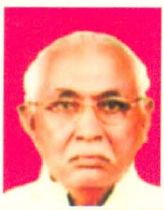

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

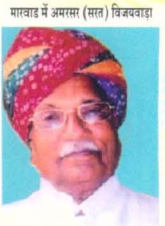

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा.पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

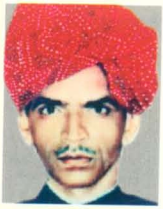
श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोतामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामाणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाबेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाथाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्तु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, साथला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

श्री डींगामलजी
भंवरलालजी पटवारी

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(बकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

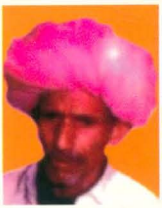
श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मडवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा, जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौबाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलामन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर (भीनमाल)

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अप्रेल-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 4
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

आत्म निन्दा से केवल ज्ञान

गुरु कौशिक का रूप रौद्र हो उठा। शिष्य अंगर्षि लकड़ी की भारी लेकर उपस्थित था लेकिन उसके साथी रूद्रक ने शरारत कर दी थी। प्रातः गुरु ने दोनों शिष्यों को जंगल से लकड़ियाँ लाने का आदेश दिया था।

अंगर्षि आज्ञा पालक, सौम्य स्वभाव एवं अनुशासन प्रकृति का था। उसने जंगल में जाकर लकड़ियाँ काटी तथा भारी बना दी। भारी को उठाकर आश्रम की ओर लौटने लगा।

उसका साथी रूद्रक शरारती तथा उद्दण्ड था। वह खेलकूद में रह गया। उसने लकड़ियाँ नहीं काटीं। वह गुरु के आदेश के पालन पर विचार करने लगा, तभी जंगल में एक बुढ़िया लकड़ियाँ लेकर आती हुई दिखाई दी। रूद्रक प्रसन्न हो गया। उसने बुढ़िया को मारकर लकड़ियों की भारी छीन ली तथा अंगर्षि से पहले गुरु के पास पहुंच कर उसने कान भर दिए कि अंगर्षि कामचोर है। उसने कुछ परिश्रम नहीं किया, उलटा बुढ़िया की हत्या कर लकड़ी छीन लाया।

गुरु कौशिक यह सुनकर गुस्सा-गुस्सा हो गये। थके अंगर्षि के आश्रम पहुंचने पर गुरु ने उसकी झड़ती ली तथा उसे आश्रम से निष्कासित कर दिया।

अंगर्षि गुरु की आज्ञा से एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। वह रोने लगा तथा रोते-रोते आत्म निरीक्षण करते हुए आत्मनिंदा करने लगा।

आत्मविकास का ऐसा दौर चला कि अंगर्षि क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ हो गया। वहीं जंगल में वृक्ष के नीचे उसने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	सर्वनाशकारकः लोभ (1) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-33) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-33) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	16
4.	प्रश्नोत्तरी	19
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	20
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	21
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	22
8.	तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी (मुनिराज डॉ.सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	24
9.	महावीर : सर्वधर्म समन्वयाचार्य (आचार्य श्री विनोबा)	26
10.	श्री भगवान महावीर स्वामी का वीतराग दर्शन (डॉ. श्री चंचलमल चोरड़िया)	32
11.	प्रभु महावीर की अंतिम वाणी-उत्तराध्ययन सूत्र (शांतिलाल बोहरा)	37
12.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	39
13.	चिंतन की चांदनी-1	41
14.	अति सर्वत्र वर्जयेत् (साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी)	42
15.	संसार वर्धक माया (संकलन-साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी)	44
16.	आत्मा नित्य है (साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी)	46
17.	वीर सुश्रावक श्री दयाल शाह (मेवाड़) (संकलन-विमलकुमार चोरड़िया, भानपुरा)	48
18.	घृणा और प्रेम (आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी)	51
19.	श्रमण भगवान महावीर स्वामी (जसराज देवड़ा धोका)	53
20.	नर-नारी के भेद से दुनिया दंग (विजयसिंह लोढ़ा, निम्बाहेड़ा)	55
21.	माता वामा देवी	56
22.	युग पुरुष पू. आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म. (डॉ. प्रदीप संघवी)	57
23.	सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी (संकलन-मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी)	58
24.	अबाधित साधना करें तीनों वर्ग-धर्म, अर्थ और काम की (शांतिलालजी सगरावत, मन्दसौर)	60
25.	गुजराती संभाग	62-78
26.	कुमकुम सने पगलिये	79-91
27.	श्री संघ सौरभ	92-97
28.	परिषद् प्रांगण से	98-101
29.	जैन विश्व	102-108
30.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	109-110

प्रवचन

सर्वनाशकारकः लोभ (1)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी अंतिम उपदेश की भूमिका प्रस्तुत करते हुए शिष्यों से कह रहे हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।

संयोगों से विमुक्त अनगार भिक्षु के लिए मैं विनय का स्वरूप प्रकाशित करने वाला हूँ। क्रमशः आप मेरी बात सुनिये-

क्रोध, अभिमान और माया के बाद आत्मा को कलुषित करने वाली चौथी कषाय का नाम है-लोभ। आइये, आज से इसी विषय पर विचार करें। लोभ किसी भी विषय का हो सकता है, परन्तु धन का लोभ सबसे अधिक घातक है। क्रोध, अभिमान और माया को जीतने वाले भी लोभ से हारते हुए देखे जाते हैं। जो लोभ पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, वे धन्य हैं।

इसी उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में लिखा है-

'लोभविजएणं भंते! जीवे किं जणयइ? लोभविजएणं संतोसभावं जणयंइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च कम्मं निज्जरेइ।'

शिष्य ने पूछा- हे भगवान! लोभ के विजय से जीवन को कौन सा लाभ होता है?

प्रभु ने उत्तर दिया- 'लोभ विजय से संतोष उत्पन्न होता है। लोभ वेदनीय कर्म का बंधन नहीं होता तथा पूर्वबद्ध कर्म की निर्जरा होती है।'

लोभी व्यक्ति धन एकत्र करने में लगा रहता है। बेईमानी से व्यापार करने में उसे कोई संकोच नहीं होता। व्यापार को 'व्हेपार' भी कहते हैं, जिसका अर्थ है कि 'तू पार हो जा अन्यथा डूब जायेगा।' राजस्थानी में एक पद है-

'लोभरो कूड़ो घणो कँवेतो, ईंसूँ बचे राम राखे तो!'

लोभ का कुँआ बहुत गहरा होता है। राम यदि रक्षा करे तो जरूर जीव उससे बच सकता है, अन्यथा नहीं।

क्रोध प्रीति को, अभिमान विनय को और माया मित्र को नष्ट करती है, परन्तु लोभ सर्वनाश करने वाला है।

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयणासणो।

माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो।।

सर्वनाशक होने से ही लोभ चारों कषायों में सबसे बड़ी कषाय मानी गई है। अन्य कषायों की तरह इसके भी चार भेद माने गये हैं-

1. अनंतानुबंधी लोभ- इसकी उपस्थिति में संसार का अंत नहीं होता। किरमीची रंग के समान इसका रंग बहुत ही पक्का होता है। इसकी स्थिति जीवन भर रहती है। यह सम्यक्त्व से जीव को दूर रखता है। इस कषाय के कारण जीव की नरक गति होती है अर्थात् शरीर छूटने पर वह जीव नरक में उत्पन्न होता है।

2. अप्रत्याख्यानावरणीय लोभ – यह जीव को प्रत्याख्यान से रोकता है। अंजन (काजल) के दाग की तरह यह कठिनाई से छूटता है। इसकी स्थिति एक वर्ष की होती है। यह जीव को देश-विरत नहीं होने देता। इस कषाय की उपस्थिति में मरने वाले जीव की तिर्यंच गति होती है। शरीर छूटने पर जीव पशु या पक्षी के रूप में उत्पन्न होता है।

3. प्रत्याख्यानावरणीय लोभ – यह सर्व विरति में बाधक बनता है। कपड़े पर लगे हुए कीचड़ के दाग के समान यह जल्दी छूट जाता है। इसकी स्थिति केवल चार मास तक रहती है। इस कषाय की मौजूदगी में शरीर छोड़ने वाला जीव मनुष्य गति पाता है। मनुष्य शरीर में जन्म लेता है।

4. संज्वलन लोभ – यह जीव के यथाख्यात के चारित्र में बाधा डालता है। पतंग के रंग के समान इसका रंग जल्दी ही उड़ जाता है। इसकी स्थिति अंतर्मुहूर्त मानी गई है। इसकी उपस्थिति में जीव केवल ज्ञानी नहीं बन सकता। इस कषाय में जिस जीव का शरीर छूटता है, उसकी देवगति होती है। मरकर वह स्वर्गवासी होता है। देवलोक में उत्पन्न होता है।

लोभ के 'लालच', 'तृष्णा' आदि बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। भर्तृहरि ने कहा था- 'तृष्णा को बुढ़ापा नहीं आया, हमें ही आ गया।'

तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।

लोगों का शरीर बूढ़ा हो जाता है, परन्तु तृष्णा सदा तरुण बनी रहती है।

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरङ्कितं शिरः।

गात्राणि शिथिलायन्ते, तृष्णैका तरुणायते।।

जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः, दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः।

जीर्यतश्चक्षुषी श्रोत्रे, तृष्णैका तरुणायते।।

मुखमंडल पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं, मस्तक सफेद बालों से भर गया है, शरीर ढीले हो गये हैं, परन्तु अकेली तृष्णा ही है, जो जवान होती जा रही है (शरीर की दुर्दशा का तृष्णा पर कोई प्रभाव

ही नहीं पड़ा)। ज्यों-ज्यों व्यक्ति बूढ़ा होता जाता है, त्यों-त्यों उसके बाल (केश), दाँत, आँखें और कान भी जीर्ण होते जाते हैं, परन्तु अकेली तृष्णा ही है, जो जवान होती जाती है।

जिसके पास नौ रुपये होते हैं, वह सोचता है कि कहीं से एक रुपया और मिल जाये तो एक पूरा दस का नोट बन जाय। दस वाला बीस, बीस वाला पचास, सौ वाला एक हजार रुपये एकत्र करने के चक्कर में पड़कर परेशान है। फिर हजार वाला क्या चाहता है? संत कवि सुन्दरदास के मत्तगयन्द सवैये के माध्यम से सुनिये-

जो दस बीस पचास भये सत, होइ हजार तु लाख मँगेगी।
कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य, धरापति होने की चाह जगेगी।।
स्वर्ग-पाताल का राज्य करूँ, तृसना मन में अति ही उमगेगी।
'सुन्दर' एक संतोष बिना सठ! तेरी तो भूख कभौं न मिटेगी।।

इसी से मिलती-जुलती बात एक संस्कृत सुभाषित में भी कही गई है-

निःस्वो वष्टि शतं शती दश शतं, लक्षं सहस्राधिपो,
लक्षेशः क्षितिराजतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः सुरराजतां सुरपति-ब्रह्मास्पदं वाञ्छति,
ब्रह्मा विष्णुपदं हरिःशिवपदं, तृष्णावधिं को गतः?

निर्धन सौ रुपयों की इच्छा रखता है, इसी प्रकार सौ वाला हजार की, हजार वाला लाख की, लखपति राजा बनने की, राजा चक्रवर्तित्व की, चक्रवर्ती इन्द्रत्व की, इन्द्र ब्रह्मा की, ब्रह्मा विष्णु पद की और विष्णु शिवत्व (शंकर बनने) की इच्छा करता है। तृष्णा की सीमा किसने पाई है? किसी ने भी नहीं।

हिन्दी के कवि केशवदास ने तो अपने महाकाव्य 'रामचन्द्रिका' में एक जगह तृष्णा की तुलना अंधेरी रात से कर डाली है। अंधेरी रात में जिस प्रकार आँख वाले भी अंधे हो जाते हैं और धैर्यशालियों के भी छक्के छूट जाते हैं, उसी प्रकार तृष्णा में भी व्यक्ति अंधे (विवेकहीन) हो जाते हैं तथा धैर्यहीन (धन के लिए अधीर) हो जाते हैं।

आँखिन आछत आँधरो, जीव करे बहु भाँति।
धीरन धीरज बिन करे तृष्णा कृष्णा राति।।

हम देखते हैं कि चाँद को जैसे राहु ग्रस लेता है, उसी प्रकार अच्छी-अच्छी वस्तुएँ विकृत हो जाती हैं। यौवन अच्छा है, परन्तु वार्धक्य (वृद्धावस्था) आकर उसे नष्ट कर देता है। रोग, स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं (अच्छे से अच्छा पहलवान को भी उदरशूल या मलेरिया हो जाए तो उसे खाट पकड़नी पड़ती है।) जीवन के अंत में मृत्यु लगी रहती है (सभी जन्म लेने वाले प्राणियों को अनिवार्य रूप से मरना पड़ता है।) परन्तु तृष्णा एक ऐसी चीज है, जिस पर कोई उपद्रव नहीं आता। -क्रमशः....

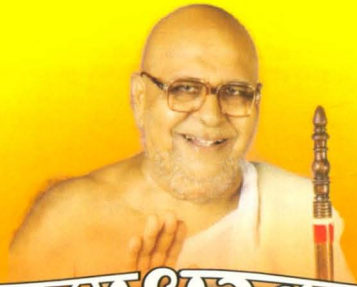

गणधरवाद

प्रवचनकार
सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

इन्द्रभूति– वेद के किस वाक्य में यह कहा गया है कि भूतों के अभाव में भी विज्ञान है?

महावीर–वेद में एक वाक्य है– 'अस्तमिते आदित्ये याज्ञवल्क्य। चन्द्रमस्यस्तमिते शान्तेऽनो, शान्तायां वाचि किं ज्योतिरेवायं पुरुषः? आत्म ज्योतिरेवायं सम्राडिति हो वाच'– अर्थात् हे याज्ञवल्क्य! जब सूर्य अस्त हो जाता है, चन्द्र अस्त हो जाता है, अग्नि शान्त हो जाती है, वचन शान्त हो जाता है, तब पुरुष में कौन सी ज्योति होती है? सम्राट! उस समय आत्म ज्योति रहती है। इस वाक्य में 'पुरुष' में कौन सा तेज है? इस प्रश्न के उत्तर में बताया है कि पुरुष में आत्म ज्योति है। यहाँ पुरुष का अर्थ आत्मा है और ज्योति का अर्थ है ज्ञान।

इसका तात्पर्य यह है कि जब बाह्य सभी प्रकाश अस्त हो जाते हैं, तब भी आत्मा में ज्ञान रूप प्रकाश है। अतः ज्ञान को भूतों का धर्म नहीं कहा जा सकता।

इसके अतिरिक्त तुमने जो यह कहा कि भूतों के साथ ज्ञान का अन्वय व्यतिरेक है, वह भी युक्तिसंगत नहीं है। क्योंकि भूतों के अभाव में भी मुक्तावस्था में ज्ञान है। इसलिए भूतों का ज्ञान के साथ अन्वय या व्यतिरेक असिद्ध है। और न ज्ञान को भूत धर्म माना जा सकता है। जैसे घट धर्म का स्वभाव होने पर भी पट का सद्भाव नियमतः नहीं होता और घट का अभाव होने पर भी पट का सद्भाव हो सकता है, क्योंकि दोनों भिन्न हैं। इसलिए पट को घट से भिन्न माना जाता है। इसी प्रकार ज्ञान को भी भूतों से भिन्न मानना चाहिये। वह भूतों का धर्म संभव नहीं है।

इससे यह सिद्ध होता है कि उक्त वेद पद का अर्थ तुम नहीं जानते। अथवा यों कहना चाहिये कि तुम सभी वेद पदों का अर्थ नहीं जानते, क्योंकि वेद पदों को सुनते ही तुम्हें संदेह होता है कि इसका अर्थ क्या होगा? क्या वेद का अर्थ श्रुतिमात्र है? विज्ञान मात्र है, या वस्तुभेद रूप है? अर्थात् क्या वह अर्थ शब्द रूप

है? या शब्द उत्पन्न होने वाला विज्ञान रूप है? बाह्य वस्तु विशेष रूप है? तथा बाह्य वस्तु विशेष में भी क्या जाति रूप अर्थ है या द्रव्य रूप अर्थ है या गुण रूप अर्थ है या क्रिया रूप अर्थ है? इस पद का कौन सा अर्थ माना जाये ऐसा सन्देह तुम्हें सभी वेद पदों के बारे में है। इससे यह कहना चाहिये कि तुम वेद के किसी भी पद का सम्यक् अर्थ नहीं जानते। लेकिन तुम्हारा ऐसा संदेह अयुक्त है, क्योंकि अमुक वस्तु का धर्म अमुक ही है, और दूसरा नहीं है, ऐसा निश्चय किया ही नहीं जा सकता।

इन्द्रभूति- आप किस आधार से ऐसा कहते हैं?

महावीर- क्योंकि संसार की सभी वस्तुएँ सर्वमय हैं।

इन्द्रभूति - वह कैसे?

महावीर- वस्तु की पर्यायें दो प्रकार की होती हैं-स्व-पर्याय और पर-पर्याय। इन दोनों पर्यायों की अपेक्षा से विचार किया जाये तो वस्तु सामान्य रूप से सर्वमय सिद्ध होती है। किन्तु मात्र स्वपर्यायों की विवक्षा की जाये तो सभी वस्तुएँ विविक्त हैं, सबसे व्यावृत्त हैं, असर्वमय हैं। इस प्रकार यदि वेद के प्रत्येक पद के विवक्षाधीन अर्थ का विचार किया जाये तो उसे सामान्य विशेषात्मक ही होना चाहिये। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि उसका अमुक अर्थ आशय है और अमुक प्रकार का नहीं है। क्योंकि वस्तु चाहे वाच्य हो या वाचक शब्द रूप हो, लेकिन स्व-पर पर्यायों की दृष्टि से तो वह विश्व रूप ही है।

इस प्रकार सामान्य विवक्षा से घट शब्द सर्वात्मक होने से वह द्रव्य गुण क्रिया आदि समस्त अर्थों का वाचक है, किन्तु विशेष विवक्षा से वह प्रतिनियत रूप वाला होने से विशिष्ट आकार वाले मिट्टी आदि के पिण्ड का ही वाचक सिद्ध होगा। इसी प्रकार प्रत्येक शब्द के बारे में कहा जा सकता है कि सामान्य विवक्षा से वह सभी अर्थों का वाचक बन सकता है किन्तु विशेष अपेक्षा से जिस एक अर्थ में वह रूढ़ हो, उसका वाचक बनता है।

इस प्रकार जब जन्म-मरण से मुक्त सर्वज्ञ महाप्रभु महावीर के युक्तिसंगत वचनों से इन्द्रभूति गौतम की संशय ग्रंथि निर्मूल हो गयी, मन की गाँठ खुल गयी, ज्ञान पर गिरा हुआ आवरण उपमार्जित हुआ और भगवान महावीर की सर्वज्ञता एवं वीतरागता पर अटूट विश्वास हो गया तो वे श्रद्धावनत हो कर विनयपूर्वक प्रार्थना करने लगे- भन्ते! मैं आपके तर्कयुक्त वचनों के प्रति श्रद्धा, आस्था, निष्ठा व्यक्त करता हूँ। मेरे मन के संशयों का उच्छेद हो गया है। मैं आपके ज्ञान को लोक कल्याणकारी मानता हूँ। प्रभु! मुझे अपना शिष्य बनाइये, अपनी आचार विधि की दीक्षा दीजिए एवं मुक्ति का सच्चा मार्ग दिखाइये। और व्यक्त हृदयोद्गारों के साथ अपने समस्त पूर्व व्यामोहों का संप्रदाय एवं संप्रदायगत चिन्हों का परित्याग करके साधना का मार्ग अपनाने के लिए श्रमणोत्तम के समक्ष सर्वात्मना समर्पित हो गया। -(क्रमशः)

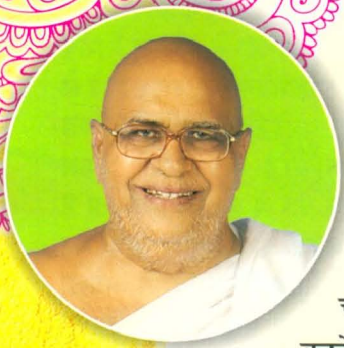

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

नगर श्रेष्ठी के प्रहारों को देखने से ऐसा लग रहा था मानों वह कोई प्रशिक्षित सैनिक हो। संघर्ष इस समय चरम सीमा पर था। दोनों ही पक्ष एक-दूसरे को परास्त करने की लड़ाई लड़ रहे थे। तभी नगर श्रेष्ठी के एक प्रहार से दस्यु सरदार आहत हो अश्व से नीचे गिर पड़ा। दस्यु सरदार के नीचे गिरते ही नगर श्रेष्ठी ने अश्व से छलांग लगाकर अपनी तलवार उसके कंठ पर रख दी और एक पैर उसके वक्ष पर रखकर खड़ा हो गया। जब यह दृश्य अन्य दस्युओं ने देखा तो उनके छक्के छूट गए। नगर श्रेष्ठी ने सिंह गर्जना करते हुए कहा-

'यदि अपने सरदार को जीवित देखना चाहते हो तो सब समर्पण कर दो।' इस घोषणा के साथ ही संघर्ष रुक गया। नगर श्रेष्ठी के संकेत पर सुरक्षा सैनिकों ने सभी दस्युओं को रस्सियों से जकड़ दिया। दस्यु सरदार को भी रस्सी से बांध दिया गया। काफिला दस्युओं को लेकर आगे बढ़ चला।

अपराह्न के समय काफिला एक गांव के निकट पहुँचा। यहीं पड़ाव डाल दिया गया। स्वर्णप्रभा अपने रथ से उतर कर दस्युओं को देखने गई। सभी खूँखार थे, किन्तु इस समय निरीह पशु की भांति लग रहे थे। स्वर्णप्रभा ने एक-एक कर सभी दस्युओं के चेहरे को गंभीरता से देखा। किसी भी दस्यु का साहस नहीं हुआ कि वह उससे आँख मिला सके। उसने दस्युओं को शांतिपूर्वक जीवनयापन करने की बात कही। बंधुत्व का, अहिंसा का महत्व बताया। भगवान महावीर के 'जिओ और जीने दो' का संदेश न केवल सुनाया वरन् उसका महत्व

भी समझाया। उसके पश्चात् उसने सुरक्षा सैनिकों को आदेश दिया–'इन सबके बंधन खोल दिये जाएं।'

'आप यह क्या कह रही हैं? बंधन खुलते ही ये दस्यु उपद्रव खड़ा कर सकते हैं।' प्रधान सुरक्षा सैनिक ने कहा।

'जैसा हमने कहा, वैसा किया जावे।' स्वर्णप्रभा ने दृढ़ आत्मविश्वास के साथ कहा। प्रधान सुरक्षा सैनिक ने नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर की ओर देखा। नगर श्रेष्ठी ने भी आज्ञा पालन करने का संकेत दिया। अधूरे मन से प्रधान सुरक्षा सैनिक ने दस्युओं को बंधन मुक्त करने का आदेश दिया। दस्यु बंधन से मुक्त हुए। उन्होंने नगर श्रेष्ठी और स्वर्णप्रभा को प्रणाम किया। उसके पश्चात् प्रधान सुरक्षा सैनिक को प्रणाम किया और बिना कुछ बोले ही वहां से जाने लगे। उन्हें जाते हुए देखकर स्वर्णप्रभा ने कहा–'बन्धुओं! आप ऐसे नहीं जा सकते। आपको जाना ही है तो भोजन करके जाइये।' दस्युओं के बढ़ते कदम थम गए।

भोजनोपरांत सभी दस्यु नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर और उसकी पत्नी स्वर्णप्रभा के सामने आकर बैठ गए। नगर श्रेष्ठी यह नहीं समझ पा रहा था कि ये लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं, जबकि उन्हें अब चले जाना चाहिये था। स्वर्णप्रभा चुपचाप बैठी हुई थी। इस समय वातावरण पूर्णतः शांत था। ठंडी हवा बह रही थी। सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। पक्षी अपने घोंसलों की ओर लौटने लगे थे। पशु भी अपने स्वामियों की देखरेख में अपने स्थानों की ओर लौट रहे थे। पश्चिमी आकाश सिंदूरी हो गया था। कुल मिलाकर दृश्य बहुत ही सुन्दर लग रहा था।

'बाई सा.! हमसे जीवन में कई अपराध हुए हैं। अनेक यात्रियों को लूटा है। जीत तो हुई ही पर कभी–कभी हारे भी। हार कर भागे भी। एक–दो बार पकड़े भी गए थे। जैसे–तैसे सार्थवाह की कैद से

मुक्त होकर भाग निकले थे, किन्तु आज की हमारी हार और आपका अपनत्व भरा व्यवहार देखकर हमें लग रहा है कि हमने अभी तक जीवन में केवल पाप ही किया है। अपने जीवन को बर्बाद ही किया है। अपने किये के लिए हम आपसे क्षमा चाहते हैं। आपको वचन देते हैं कि भविष्य में हम अब कभी भी यह कार्य नहीं करेंगे। हम अच्छा बनने का प्रयास करेंगे।' दस्यु सरदार ने कहा। उसकी आवाज में कुछ कम्पन भी था। पश्चाताप स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था।

'यह आपसे किसने कहा कि आप बुरे हैं या पापी हैं? जो कुछ बीता उसे भूल जाओ और वह करो जो मनुष्य मात्र के लिये कल्याणकारी हो। इस बात का सदैव ध्यान रखना कि तुम्हारे कार्यों से किसी भी प्राणिमात्र को कष्ट नहीं हो। जब कभी भी हमारी मदद की आवश्यकता हो, हमारे यहां चले आना।' स्वर्णप्रभा ने कहा। वह समझ गई थी कि दस्युओं का हृदय परिवर्तित हो गया है। वे इस समय पश्चाताप कर रहे हैं। स्वर्णप्रभा ने पुनः दस्युओं को संबोधित कर कहा–'आज मैं तुम्हें एक अनमोल उपहार दे रही हूँ...' (क्रमशः)...

प्राण

एक व्यक्ति के घर में चोर घुस गया। पूरा घर छान मारा मगर कुछ नहीं मिला। सेठ-सेठानी सो रहे थे। चोर ने उन्हें उठाया और रिवाल्वर दिखाते हुए कहा ''अभी मैं तुम दोनों के प्राण ले लूँगा।'' दोनों घबरा गये, कांपने लगे और चोर के पैर पकड़ कर हाथ में तिजोरी की चाबी थमाते हुए कहने लगे कि तू हीरे जवाहरात, सोने, चांदी सब ले लो, किन्तु हमारे प्राण छोड़ दो।

बात समझ में आई होगी। जीवन भर तो प्राण की परवाह नहीं की ओर हीरे-जवाहरात, सोने, चांदी इकट्ठा करते रहे। आज जब वक्त आया तो प्राण बहुमूल्य हो गया और जिसको जीवन भर बहुमूल्य माना वे वस्तुयें गौड़ हो गई।

भाईयों और बहनों कहने का तात्पर्य यह है कि भौतिकता के पीछे मत भागो।

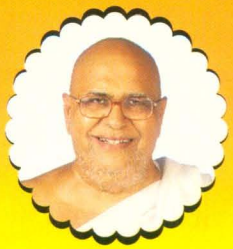

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

ज्ञानावरणीय कर्म के पांच प्रकार

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. आयु कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म से आत्मा चार गतियों में रुकी रहे उसे आयुकर्म कहते हैं। जैसे- निगड़ (खोड़े) में डाल देने से मनुष्य पराधीन हो जाता है।

प्र. नाम कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म से आत्मा गति आदि नाना पर्यायों का अनुभव करे अथवा शरीर आदि बने उसे नाम कर्म कहते हैं। जैसे - चित्रकार तरह-तरह के चित्र बनाता है।

प्र. गोत्र कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म के उदय से आत्मा को ऊँच-नीच कुल की प्राप्ति हो। जैसे कुम्भकार छोटे-बड़े उत्तम, सामान्य बर्तन बनाता है।

प्र. अन्तराय कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म से दान आदि में अन्तराय (विघ्न) हो, उसे अन्तराय कर्म कहते हैं। जैसे राजा की आज्ञा होने पर भी भंडारी दान में विघ्न डाल देता है।

प्र. ज्ञानावरणीय कर्म के कितने प्रकार हैं?

उ. ज्ञानावरणीय पांच प्रकार का है- 1. मति ज्ञानावरणीय, 2. श्रुतज्ञानावरणीय, 3. अवधिज्ञानावरणीय, 4. मनःपर्यय ज्ञानावरणीय, 5. केवलज्ञानावरणीय।

प्र. मति ज्ञानावरणीय आदि किसे कहते हैं?

उ. जो इन्द्रिय और मन से पैदा होने वाले ज्ञान का आवरण करे, वह मति ज्ञानावरणीय है। इसी प्रकार जो श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान और केवल ज्ञान का आवरण करे, उन्हें क्रमशः श्रुत ज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञानावरणीय, मनः पर्यय ज्ञानावरणीय और केवल ज्ञानावरणीय कहते हैं।

प्र. दर्शनावरणीय कर्म के कितने भेद हैं?

उ. दर्शनावरणीय कर्म के नव भेद हैं- 1. चक्षु दर्शनावरणीय, 2. अचक्षु दर्शनावरणीय, 3. अवधि दर्शनावरणीय, 4. केवल दर्शनावरणीय, 5. निद्रा, 6. निद्रानिद्रा, 7. प्रचला, 8. प्रचलाप्रचला, 9. स्त्यानगृद्धि

प्र. चक्षुदर्शनावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. चक्षु इन्द्रिय से होने वाले मतिज्ञान के पहले जो सामान्य ज्ञान होता है, उसे जो आच्छादित करे उसे चक्षु दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं।

चलो भीनमाल! चलो भीनमाल!

वाघजीभाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ)

आगामी 22 अप्रैल 2016, शुक्रवार को सुविशाल गच्छाधिपति, हम सभी के गुरुदेव, हमारी आस्था के निमित्त जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. भीनमाल में स्थित विश्वविख्यात विशाल तीर्थ बहत्तर जिनालय के परिसर में आयोजित धर्मसभा में अपने आगामी चातुर्मास की घोषणा करेंगे। यह हम सभी के लिए चातुर्मास घोषणा पर्व है। इस पर्व में भाग लेने की तैयारी पूरे देश में स्थित श्रीसंघों में चल रही है। वहां के श्रीसंघ नर-नारी समुदायों को एकत्रकर भीनमाल भेजने की प्रेरणा कर रहे हैं। भीनमाल में इस पर्व के आयोजन के लाभार्थी बहत्तर जिनालय के निर्माता शां. सुमेरमलजी हजारीमलजी लुंकड़ परिवार के प्रमुख श्री रमेशजी लुंकड़ श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं। उनकी भावना तथा हमारा आह्वान है कि इस अवसर पर पूरे देश के अधिकाधिक श्रीसंघ गुरुदेव के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए भीनमाल पधारें।

पूज्य गुरुदेव जैनाचार्य अमृत पुरुष श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. वर्तमान में समग्र जैन समाज में ऐसी आध्यात्मिक हस्ती हैं जिनकी गणना प्रथम पंक्ति में हो रही है। इसका कारण इनकी बहुमुखी प्रतिभा, समाजोन्नति की दक्षता, भव्य जीवों का बेडा पार करने की दिव्य अंतर्भावना, जैन संस्कृति के आनुष्ठानिक जगत् को उपलब्धियों से भरचक करने का पराक्रम तथा सद्गुणों की अनुपम ध्वनि है। इनके चातुर्मास में तप-जप तथा ज्ञान-ध्यान की आराधना के कीर्तिमान स्थापित होते हैं। आप वचनसिद्ध, प्रभावशाली व्यक्तित्व से समृद्ध, आत्म कल्याण की भूमिका के सृजनहार हैं। हर श्रीसंघ आपका चातुर्मास करवा कर आध्यात्मिक प्रकाशपुंज अपने यहाँ प्रभासित करना चाहता है। अतएव वह पूर्ण उत्साह तथा जय-जयकार के आकाशस्पर्शी निनादों के साथ आपकी सेवा में उपस्थित होकर अपने यहाँ चातुर्मास किये जाने की विनती करता है।

आईये, आगामी चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को अधिकाधिक संख्या में भक्तिभाव सहित भीनमाल बहत्तर जिनालय के परिसर में पधारकर चातुर्मास घोषणा पर्व को सफल बनाइये, गुरुदेव के प्रति श्रद्धाभाव समर्पित कीजिए।

सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना को सफल बनावें ।

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन आगामी जुलाई मास में होने जा रहा है । अप्रेल मास में परीक्षा आवेदन-पत्र भरने की प्रक्रिया प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर होगी । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की समस्त शाखाओं को इसमें अभिरूचि लेना है तथा सुविशाल गच्छाधिपति ज्ञान उद्धि युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के धार्मिक ज्ञान प्रसार तथा शिक्षा विस्तार की योजना को भरपूर उत्साह से सफल बनाना है । प्रत्येक शाखा छात्रों को प्रेरित करे, परीक्षा केन्द्र स्थापित करें तथा अपने कर्त्तव्य का पालन करें ।

ज्ञानपीठ परीक्षाओं के माध्यम के लिये छात्रों को अधिक प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना इस वर्ष से लागू की जा रही है। इसकी योजना इस प्रकार है-

* कक्षा-1 उदय, कक्षा-2 इष्ट की परीक्षा मौखिक ली जावेगी ।
* कक्षा-1, 2 तथा 3 की परीक्षा एक साथ देने के अभिलाषी छात्र-छात्राओं को लिखित परीक्षा देनी होगी ।
* कक्षा 1 से 5 तक परीक्षा 2016 में जिन छात्रों को अस्सी प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त होंगे उनका कक्षावार क्रमशः रू. 150 रू, 200 रू, 250 रू, 500 रू तथा 1000 रू श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ द्वारा बहुमान किया जायेगा । शिक्षक-शिक्षिकाओं का भी योग्य बहुमान होगा तथा उनके नाम शाश्वत धर्म में प्रकाशित किये जावेंगे ।

सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना के लिये परमपूज्य ज्ञानपीठ संस्थापक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से सम्पूर्ण लाभ पू. मधुश्री विजयाबेन बकुभाई चीमनलाल धरू परिवार (पेपराल-थराद) ने लिया है ।

आशा है छात्र-छात्राएं इस योजना का अधिकाधिक लाभ लेकर धार्मिक ज्ञान अभिवृद्धि अभियान में भाग लेंगे ।

अंतर्जातीय विवाह और उसके नतीजे

विवाह गृहस्थाश्रम का एक अनिवार्य संस्कार है। मार्गानुसारी जीवन के पैंतीस गुणों में एक गुण उचित विवाह है। यों मानव के लिए ब्रह्मचर्य का पालन सर्वश्रेष्ठ है लेकिन संस्कृति ने विवाह को भी रेखांकित किया है। वर्तमान में विजातीय विवाह की संख्या बढ़ रही है तथा इनकी विफलता के उदाहरण भी निरंतर सामने आ रहे हैं, फिर भी ऐसे विवाहों पर कोई सामाजिक नियंत्रण नहीं हो पा रहा है। समय है कि इस बढ़ती हुई कुरीति पर व्यापक तौर से विचार किया जाए।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

वैसे पूर्व में जातियों का दायरा काफी विस्तृत था। वैदिक संस्कृति के अनुसार प्रचलित वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत चारों वर्णों के परिवार अपने-अपने वर्ण में शादियाँ करते थे। बाद में वर्ण अन्तर्गत जातियाँ तथा उपजातियां विकसित हुईं और उन्होंने भी अपनी सीमाएं निर्धारित कर दीं। इन सीमा को भंग करने वालों को समाज याने जाति या उपजाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था। आज इन जातियों व उपजातियों तथा विशेषतः जैन समाज में इनकी सीमाएं ढीली पड़ गई हैं। जाति से तात्पर्य होना चाहिये संस्कृति, आचार-विचार, रीति-रिवाज, खान-पान, धार्मिक मान्यताओं तथा संस्कारों की समानता। जहाँ ये आधार घिचपिच हो जाते हैं, वहां प्रेम के नाम पर वासना का उग्र रूप उत्तम भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। ऐसे सम्बन्ध सुखद, स्थायी, अच्छे परिवार प्रेरक नहीं हो पाते हैं। तलाक के उदाहरण तो हैं ही, इससे पूर्व पति-पत्नि का कलह तथा एक दूसरे के प्रति अत्याचारपूर्ण व्यवहार एवं जानलेवा आक्रमण होना भी सामान्य है। अंतर्जातीय विवाहों के परिणाम दुःखद आ रहे हैं। इनका दाम्पत्य जीवन संघर्ष की स्थिति में नारकीय बन जाता है। हत्याओं एवं आत्महत्याओं की मिसालें अहिंसक जैन समाज में भी कहीं-कहीं हो रही हैं।

उत्पीड़न तथा दलन की घटनाएं तो प्रायः गुप्त ही रहती हैं, प्रकट नहीं हो पाती हैं।

वर्तमान में भोगवादी जीवनशैली बढ़ रही है। टीवी, मोबाइल, कम्प्यूटर और इंटरनेट ने संस्कार विकृत कर दिए हैं। मादक द्रव्यों का सेवन भी कहीं-कहीं है। अंतर्जातीय विवाह इन सभी दुष्प्रभावों का दूषित परिणाम भी है। टीवी पर, फेसबुक में नई उम्र के जो लड़के-लड़कियाँ सम्पर्क में आते हैं, वे पागलों की भांति सम्मोहित हो जाते हैं। कभी-कभी लड़कियों के साथ धोखा भी होता है, जिससे उन्हें जान से हाथ धोना पड़ता है। हाल ही में इन्दौर की जैन समाज की ही एक युवती के साथ जो कुछ हुआ वह समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ है। लड़के ने उसे अपने नगर (उत्तर प्रदेश) में बुलवाया। वहाँ होटल में ठहराया। चर्चा विफल रहने पर लड़के ने एक लाख रु. की मांग की। युवती द्वारा नहीं दिए जाने पर उसे रोकने की कोशिश की गई। वापसी के लिए उसके ऑटो रिक्शा में बैठ कर रेल्वे स्टेशन जाने के प्रयास में युवती को गोलियों से उड़ा दिया गया।

एक और नकारात्मक तथ्य है। जैन समाज कठोरतापूर्वक शाकाहारी है। एक शाकाहारी कन्या जब अंतर्जातीय विवाह के चक्कर में पड़कर मांसाहारी परिवार में पहुंच जाती है तो बड़ी गड़बड़ होती है। कन्या को या तो मांसाहारी बनना पड़ता है अन्यथा पारिवारिक विवाद होते हैं। इसे रोका जाना समाज का कर्त्तव्य है। ऐसा होना तभी रुक सकता है जब जैन समाज आंतरिक रूप में पूरे जैन समाज को दृष्टिगत रखते हुए अपने रीति-रिवाजों, सगाई के बंधनों को उदार बनाये। वैसे यह तथ्य भी सही है कि लिंगानुपात में असमानता की स्थिति में जैन समाज के कुछ युवक सूचनाओं के आधार पर अन्य प्रदेशों की लड़कियों से संबंध बना रहे हैं। कई मामलों में ये लड़कियाँ पेशेवर होती हैं तथा गहने व कीमती सामान लूटकर भाग जाती हैं।

अंतर्जातीय विवाह चाहे लड़की की खुदगर्जी से हो अथवा लड़के के स्वार्थ से, अधिकांशतः विफल ही रहते हैं। इससे या तो परिवार विकृत होते हैं या लड़कियाँ विकृत परिवारों में पहुंच जाती हैं। इस कुपरम्परा के कई कारण हैं। खेद है कि समाज इन कारणों पर विचार कर, इनका समाधान करने की दिशा में तत्पर नहीं है। समग्रता की अवधारणा तैयार करने और जैन समाज अन्तर्गत ओसवाल, पोरवाल, अग्रवाल, हुमड़, खंडेलवाल, भटेवरा, जायसवाल, नरसिंहपुरा आदि-आदि जो जातियाँ हैं, उन्हें भी निकट लाने की दिशा में विचार करना चाहिए। वर्तमान में प्रतिवर्ष सैकड़ों अन्तर्जातीय विवाह हो रहे हैं, समाज इन पर मौन रहकर अपना अहित ही करेगा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

तीर्थंकर प्रभु श्री ऋषभदेवजी के जन्म के समय 56 दिक्कुमारियाँ और 64 इन्द्र अपनी अद्भुत देव ऋद्धि के साथ तीर्थंकर प्रभु के जन्मगृह, मेरूपर्वत एवं नंदीश्वर द्वीप में उपस्थित हो, हर्षोल्लास से उत्सव मनाते हैं। प्रभु श्री ऋषभदेवजी के जन्माभिषेक एवं जन्मोत्सव को मनाने के लिए सर्वप्रथम अधोलोक में रहने वाली भागंकरा आदि आठ दिक्कुमारियां अपने परिवार के साथ प्रभु के जन्मग्रह में उपस्थित होती हैं। माता मरूदेवी और प्रभु ऋषभदेवजी को नमन कर, उनकी स्तुति कर अपना परिचय देकर, माता मरूदेवी से प्रभु का जन्मोत्सव करने की आज्ञा लेती हैं। माता मरूदेवी को आश्वस्त कर उन्होंने रजकण, तृण, धूलि, दुरभिगंध आदि को दूर कर जन्मग्रह और उसके चारों ओर एक योजन की परिधि में भूमि और भूमंडल को स्वच्छ, सुरम्य व सुरभित बना दिया। इसके पश्चात् विशाल देवी समूह के साथ वे गीत गाती हुईं माता मरुदेवी के चारों ओर खड़ी हो जाती हैं। उसी समय ऊर्ध्वलोक में रहने वाली मेघंकरा आदि आठ दिक्कुमारियां भी अपने दैवीय समूह के साथ जन्मग्रह में आती हैं और नमन कर सुगंधित जलकणों की वृष्टि और दिव्य धूप की सुगंध से जन्मग्रह के परिमंडल को देवागमन योग्य सुमनोज्ञ-सुरम्य बना देती हैं। तदन्तर पूर्व के रूचक कूट पर रहने वाली नंदुत्तरा आदि आठ दिक्कुमारियां हाथों में दर्पण लिए, दक्षिण के रूचक पर्वत पर रहने वाली समाहारा आदि आठ दिक कुमारियां हाथों में भारियां लिये, पश्चिम दिशा के रूचक पर्वत से इलादेवी आदि आठ दिक्कुमारियां हाथों में पंखे लिये, उत्तर दिशा में रूचक पर्वत पर रहने वाली अलम्बुषा आदि आठ दिक्कुमारियां हाथों में चामर लिये व मंगल गीत गाते हुए वहाँ आती हैं।

तदुपरान्त विदिशा के रूचक पर्वत पर रहने वाली चित्रा, चित्र-कनका, सतेरा और सुदामिनी हाथ में दीपक थामे, चारों ओर दिव्य प्रकाश करते हुए मध्य रूचक पर्वत पर रहने वाली रूपा, रूपांशा, सुरूपा, रूपकावती चार महत्तरिका दिक्कुमारियां भी वहाँ आती हैं और माता मरूदेवी एवं प्रभु को वंदन एवं प्रणाम करती हैं। प्रभु के समीप जाकर भगवान की नाभिनाल को चार अंगुल छोड़, काटकर उसे भवन प्रांगण में गड्ढा खोदकर गाढ़ देती हैं और गड्ढे को भांति-भांति के रत्नों से भरकर उस पर हरताल की पीठिका बांधती हैं।

इसके बाद मध्यरूचक पर्वत पर रहने

वाली रूपा आदि चारों दिक्कुमारियां माता और पुत्र दोनों के शरीर का शतपाक, सहस्त्रपाक तेल से धीरे-धीरे मर्दन कर, उनके शरीर पर दिव्य सुगंधित गंधपुड़े की पीठी करती हैं। पीठी के पश्चात् क्रमशः गंधोदक, पुष्पोदक और शुद्धोदक से स्नान कराती हैं। स्नान के पश्चात् अरणी द्वारा अग्नि उत्पन्न कर अपने आभियोगिक देवों द्वारा मंगवाई हुई गौशीर्ष चन्दन की काष्ठ से हवन करके भूतिकर्म निष्पन्न कर, रक्षापोटली बांधती हैं। सभी क्रियाविधियों को संपन्न कर माता मरूदेवी और प्रभु को जन्मग्रह में लाती हैं।

उसी समय सौधर्मेन्द्र देवराज, देवों एवं देवियों के विशाल परिवार, अपने अलौकिक वैभव के साथ जन्म ग्रह में आते हैं। शक नामक सौधर्मेन्द्र माता की स्तुति करने के पश्चात् माता मरूदेवी को अवस्वापिनी निद्रा में निद्राधीन कर प्रभु ऋषभ का दूसरा स्वरूप बनाकर, उनके पास रख देते हैं। स्वयं भी वैक्रिय शक्ति से अपने पांच स्वरूप बनाते हैं। एक स्वरूप से प्रभु को अपने करतल में उठाते हैं, दूसरे से प्रभु पर छत्र धारण करते हैं, दो स्वरूपों से क्रमशः शंख धारण करते हैं व चामर डुलाते हैं। पांचवा शक हाथ में वज्र धारण किए चलता है। इस तरह स्वयं इन्द्र भी प्रभु की सेवा का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहते थे। सभी देवी-देवता, 64 इंद्र-इंद्राणी आदि अपने-अपने विशाल परिवार के साथ मेरू पर्वत स्थित पंडक वन में 1008 स्वर्ण कलश सहित विपुल सामग्री से प्रभु का अभिषेक करते हैं। अभिषेक के पश्चात् इंद्रादि देव प्रभु को जन्मग्रह में वापस ला, पुनः माता के पास सुला देते हैं। प्रभु के दूसरे स्वरूप को हटाकर माता की अवसर्पिणी निद्रा का हरण करते हैं। तदन्तर देवराज इन्द्र, कुबेर को बुलाकर उन्हें तीर्थंकर प्रभु के जन्मग्रह में 32 करोड़ मुद्राएं आदि रखने का आदेश देते हैं।

बाल जिनेश्वर प्रभु का जन्मोत्सव महाराजा नाभि एवं उनकी प्रजा द्वारा भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भगवान ऋषभ कुमार जिस समय एक वर्ष से कुछ कम आयु अवस्था के थे उस समय देवराज प्रभु की सेवा में उपस्थित हुए। बाल जिनेश्वर इन्द्र से इक्षुदण्ड प्राप्त कर उसके रस का पान करते हैं। नामकरण के कुछ मास पश्चात् घटित इस घटना के बाद प्रभु का वंश भी काश्यप नाम से विख्यात हुआ। कल्पसूत्र में भगवान ऋषभदेव का क्रमशः ऋृषभ, प्रथम राजा, प्रथम भिक्षाचर, प्रथम जिन एवं प्रथम तीर्थंकर के रूप में भी उल्लेख है। मनुस्मृति में भगवान ऋषभदेव को 'उरुकमः' के नाम से भी अभिहित किया गया है। भगवान ऋषभदेव जिस समय माता के गर्भ में आये, उस समय कुबेर ने हिरण्य की वृष्टि की, इस कारण उनका एक नाम हिरण्यगर्भ भी है।

उत्तरकालीन आचार्यों, विद्वानों एवं जैन इतिहासकारों ने धर्म का आद्य प्रवर्तक होने के कारण भगवान ऋषभदेव का आदिनाथ नाम से भी उल्लेख किया है। जनसाधारण में भी भगवान ऋषभदेव प्रायः आदिनाथ के नाम से ही विख्यात हैं।

(क्रमशः...)

महावीर : सर्वधर्म समन्वयाचार्य

(आचार्य श्री विनोबा)

'सर्वधर्म समभाव' एक नया शब्द हमें मिला है। लेकिन महावीर के विचारों से जो परिचित हैं, उनके लिए यह कोई नयी बात नहीं है। मेरी निगाह में महावीर **'सर्वधर्म समन्वयाचार्य'** हैं। सत्य का एक-एक पहलू लेकर लोगों के सामने भिन्न-भिन्न पंथ के रूप में एक-एक नय पेश किया जाता है, लेकिन पूर्ण सत्य उन सब सत्यांशों को ग्रहण करने पर ही हाथ में आता है। यह है महावीर का मुख्य विचार। अहिंसा तो उसके पेट में सहज समा जाती है।

ढाई हजार साल पहले महावीर स्वामी ने इस भूमि पर अवतार लिया था। उन्होंने जो विचार दिया, वह नया नहीं था। महावीर स्वामी तो जैनों के आखिरी के, यानी 24 वें तीर्थंकर माने जाते हैं। उनके हजारों साल पहले जैन विचार का जन्म हुआ था। ब्राह्मण और श्रमण संस्कृति प्राचीन जमाने से साथ-साथ चलती आई है, ऐसा दिखता है। ऋग्वेद में **मुनयो वातरशना**: ऐसे शब्दों में मुनियों का वर्णन है। वह जैन विचारों का चिह्न मान सकते हैं। ऋग्वेद में भगवान की प्रार्थना में एक जगह और कहा है **अर्हन् इदं दयसे विश्वमभ्वम्** (ऋसा:2,6,7)- हे अर्हन्! तुम इस तुच्छ दुनिया पर दया करते हो। इसमें 'अर्हन्' और 'दया' दोनों जैनों के प्यारे शब्द हैं। मेरी तो मान्यता है कि जितना प्राचीन हिन्दूधर्म है, शायद उतना ही प्राचीन जैनधर्म भी है। लेकिन किसी धर्म का प्राचीन होना ही बड़ी बात नहीं है। अगर कोई अर्वाचीन भी है, लेकिन उसमें सही बात है, तो उसकी कीमत है और कोई धर्म अतिप्राचीन है, लेकिन सही बात उसमें नहीं है, तो उसकी कोई कीमत नहीं। दरअसल कीमत सही विचार की है।

महावीर की विशेषता यह है कि किसी के हृदय में, धक्का दिये बिना, कुशलता से प्रवेश करना। दीवार में से प्रवेश करने की कोशिश की तो टकरायेंगे, इसलिए दरवाजे में से प्रवेश करना चाहिए। मनुष्य कितना भी गरीब हो, उसके घर में कम-से-कम एक दरवाजा तो होगा ही। हृदय में जो गुण हैं, वे दरवाजे हैं, और दोष हैं, वे दीवारें हैं। एकाध गुण तो हरएक में होता ही है। उस दरवाजे से अंदर प्रवेश करेंगे और फिर उसको दूसरी खिड़की बनाने की सलाह देंगे। इसलिए महावीर स्वामी जो भी मनुष्य उनके पास आता था, उसके अनुकूल विचार क्या है, यह प्रथम देखते थे। तो चर्चा के लिये आया हुआ मनुष्य मानता था कि उसके विचार का मंडन हुआ और उसकी प्रतिष्ठा हो जाती थी। बेसिक फिलॉसफी मिल गयी फिर विचार की दूसरी बाजू भी हो सकती है। यह उनका अहिंसा का विचार था। सत्य बीच में होता

है। इधर कुछ सत्य का अंश होता है, उधर कुछ सत्य का अंश होता है। बीच में पूर्ण सत्य है। यह उनकी दृष्टि है। बाद में लोगों ने उसको बहुत बड़ा नाम दे दिया– 'स्यादवाद'।

महावीर का मौलिक चिन्तन

मैंने उसे नाम दिया है 'अपि सिद्धान्त'। यह भी ठीक है, वह भी ठीक है। मेरे ही पास पूर्ण सत्य है, ऐसा नहीं। सामने वाले के पास भी सत्य का अंश है। सत्य का एक अंश एक में तो दूसरा अंश दूसरे में भी होगा। सामने वाले के सत्य के अंश को ग्रहण करना चाहिये। उसमें नया जोड़ सकते हैं। इसे मैंने सत्यग्राही दृष्टि नाम दिया है।

मैं तो महावीर का दासानुदास हूँ। उनका मुख्य सिद्धान्त अनेकान्तवाद है– सत्यग्राही वृत्ति। बाबा ने वह पूरा मान्य किया है। हर प्रकार से हर एक के पास जितना सत्य होता है उतना सत्य ग्रहण करने की कोशिश बाबा करता है। तो महावीर की अत्यन्त कृपा है बाबा पर और उनका स्मरण बाबा को नित्य निरंतर रहता है। मुझ पर गीता का गहरा असर है। उसके साथ ही महावीर का असर भी मेरे चित्त पर बहुत अधिक है। उसका कारण है महावीर ने जो आज्ञा दी 'सत्यग्राही बनो' वह बाबा को पूर्ण मान्य है।

अनेकान्तवाद यानी किसी चीज का आग्रह रखना नहीं। हर एक के पास सत्य का कुछ न कुछ अंश होता है। हिन्दुओं के पास, बौद्धों के पास, मुसलमानों, ईसाइयों के पास सत्य का अंश होता है। उसे अच्छी तरह ग्रहण करें, सबके साथ मेल कर लें। ऐसा करने से किसी के साथ झगड़ा नहीं होगा। इस तरह हर एक के साथ मेल कर लेना, जैनों की उत्तम वृत्ति है, उसका असर सारे भारत पर पड़ा है और सारे समाज पर पड़ा है। हिन्दू हो, बौद्ध हो, सिक्ख हो, सब पर पड़ रहा है।

अनेकान्तवाद यह वाद नहीं, एक पहचान है, दृष्टि है। सत्य को ग्रहण करना है, तो बीच के पूर्ण सत्य को पकड़ना चाहिये। हर एक के पहलू को महत्व देना चाहिये, तब सर्वांगीण सत्य का ग्रहण होगा। अहिंसा और तप– ये महावीर की खास विशेषताएँ नहीं, लेकिन यह जो मध्यस्थ दृष्टि है, यह उनकी खूबी है। भाष्यकार एक पहलू को गौण मानते हैं और एक को मुख्य मानते हैं। इस प्रकार गौण–मुख्य भेद करके वे अर्थ करते हैं। लेकिन महावीर गौण–मुख्य भेद नहीं करते थे। यह नहीं कह सकते कि महावीर के पहले इस प्रकार का प्रयत्न हुआ ही नहीं। जरूर हुआ; लेकिन उसका स्पष्ट दर्शन महावीर ने करवाया।

यह मध्यस्थ दृष्टि महावीर की अहिंसा है। प्राणियों की हिंसा न करना, यह तो ठीक ही है। लेकिन विचारों का आग्रह रखते हैं, तो उससे लड़ाइयाँ होती हैं। इसलिए अहिंसा का मूल पकड़ना है तो मध्यस्थ दृष्टि, समत्व की दृष्टि आनी चाहिये। जैनों ने प्रहार नहीं किया, उपहार दिया। महावीर की पद्धति उपहार की, प्रेम से चर्चा करने की थी।

अहिंसा और मध्यस्थ दृष्टि

अहिंसा के साथ सत्य जुड़ा हुआ रहता

है। अहिंसा के समान ही सत्य की महिमा जैन आगमों ने गायी है। लेकिन कितने ही जैन ऐसे हैं, जो व्यापार में बेखटके असत्य का उपयोग करते हैं और मानते हैं कि हम खेती नहीं करते; व्यापार करते हैं इसलिए हिंसा से बचे हुए हैं। हिंसा से बचने का यह तरीका नहीं है। अगर सत्य नहीं रहा तो अहिंसा की भी रक्षा नहीं हो सकती।

इसलिए हम तो सत्य को ही परम धर्म मानते हैं और कहते हैं-**न हि सत्यात् परो धर्मः**- 'सत्य से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं।' उसी में से सारी साधना निकलती है और उसी में सारी साधना की परिसमाप्ति होती है।

लोग समझते हैं कि जैनों की सबसे बड़ी देन अहिंसा है। लेकिन वह बड़ी बात नहीं। उपनिषद् में भी अहिंसा का उल्लेख है- **तपो दानं आर्जवं अहिंसा सत्यवचनम्।** अब यह कहना मुश्किल है कि उपनिषद् पहले था कि जैन शास्त्र पहले था, लेकिन अहिंसा बहुत पहले के जमाने से चलती आयी थी। उसको विशेष रूप देने का प्रयत्न जैन, गौतम बुद्ध, वैष्णव संत वगैरह ने किया। यह भी ठीक है कि जैन लोग बहुत तपस्वी थे। लेकिन वह भी पहले से मानी हुई बात थी। विद्यार्थी गुरु के पास गया, तो उससे कहा गया- **तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व** (तै.19)। मैं ये दोनों महावीर की विशेषताएँ नहीं मानता। यद्यपि दोनों बातें महावीर के जीवन में विशेषरूपेण प्रकट हुई थीं।

महावीर स्वामी के जीवन में मध्यस्थ दृष्टि जगह-जगह प्रकट होती है। जब कोई ब्राह्मण उनके पास उपदेश के लिए आते तो उपनिषदों के वचनों का आधार देकर वे उन्हें समझाते थे। जिसकी जो श्रद्धा हो, उसी का उपयोग करके उसे वे आत्मा का निर्लिप्त स्वरूप समझाते थे।

जैनधर्म की मुख्य विशेषताएँ हैं: अहिंसा और मध्यस्थ दृष्टि। जो इन दोनों को मानते हैं, वे जैन हैं।

महावीर स्वामी को 'वर्धमान' कहते हैं। वर्धमान यानी नित्य बढ़ने वाला। आज का कल नहीं, रोज-रोज विकसित होने वाला। चित्त का विकास, गुणों का विकास रोज होता है, ऐसी महावीर की स्थिति थी। काल के साथ लड़कर वे 'वीर' बने, फिर 'वीर' से 'महावीर' बने। इसलिए यह वर्धमान नाम उनको शोभा देता है। शारीरिक आयु तो सभी की बढ़ती है, लेकिन उतने मात्र से सबको 'वर्धमान' नहीं कह सकते। आत्मा का आयुष्य बढ़ाने वाला 'वर्धमान' है। वर्धमान पुरुषों का क्षीण होना ही उनकी वृद्धि है और मृत्यु ही नवजीवन। वर्धमान पुरुष मर जाता है तब एकदम ऊपर चढ़ता है। ऐसे पुरुष देह के बाहर रहकर भी ज्ञान दे सकते हैं। आप लोगों को महावीर प्रेरणा दे रहे हैं, ज्ञान दे रहे हैं, वे कहाँ देह में हैं?

महावीर और बुद्ध

महावीर स्वामी का इतिहास अद्भुत है। महावीर के चालीस वर्षों के बाद गौतम

बुद्ध हुए। दोनों का संचार (विहार) एक ही प्रदेश में हुआ, इसलिए संभव है बुद्ध ने महावीर स्वामी को देखा भी हो। तब महावीर वृद्ध और बुद्ध युवा होंगे।

बुद्ध और महावीर भारतीय आसमान के दो उज्जवल नक्षत्र हैं। गुरु-शुक्र के समान तेजस्वी और मंगल-दर्शन। बुद्ध का प्रकाश दुनियाभर में और महावीर का प्रकाश भारत के हृदय में गहराई तक पहुँचा। बुद्ध ने मध्यम मार्ग सिखाया, महावीर ने मध्यस्थ दृष्टि दी। दोनों दयावान और अहिंसाधर्मी थे। बुद्ध बोध-प्रधान थे, महावीर वीर्यवान तपस्वी थे।

बुद्ध और महावीर दोनों कर्मवीर थे। लेखन वृत्ति उनमें नहीं थी। वे निर्ग्रन्थ थे। किसी भी शास्त्र की उन्होंने रचना नहीं की, परन्तु वे जो बोलते थे उसी में से शास्त्र का निर्माण होता था। उनका बोलना सहज था। उनके बिखरे हुए विचारों का संग्रह भी बाद में लोगों को करना पड़ा।

महावीर ज्ञानप्राप्ति के पहले तप करते थे, वह तो समझ सकते हैं, लेकिन ज्ञानप्राप्ति के बाद भी उन्होंने तपस्या चालू रखी, उसका कारण एक तो यह हो सकता है कि उन्हें ज्ञान ही प्राप्त न हुआ हो और या तो तप को ही वे मोक्ष मानते हों। सब मानते हैं कि वे ज्ञानी थे। इसका मतलब वे तप को ही मोक्ष मानते थे। उनका वह तप करुणामूलक था। भगवान बुद्ध करुणावतार थे। परन्तु दोनों की धारणा में अंतर था। बुद्ध मुख्यतया मानवतावादी थे जबकि महावीर में भूतमात्र के लिए आत्यंतिक करुणा थी। यह करुणा यहाँ तक आगे जाती है कि मनुष्य जीवन ही हिंसा है। इसलिए खाना भी वे पाप समझते थे। जितना खाना कम, उतनी हिंसा कम, इस विचार से यानी प्राणी मात्र के विषय की अत्यन्त सूक्ष्म करुणा के कारण वे यथासंभव निराहारी ही रहते थे।

बुद्ध का धर्म करुणामूलक लेकिन वैराग्यप्रधान है और उनका क्षेत्र मानवता है। जैनों का धर्म भी करुणामूलक तो है ही पर क्षेत्र केवल मानवता नहीं समस्त जीवजगत् है। उसमें न विह्वलता है, न व्याकुलता, न क्षोभ है, उसमें तटस्थता है।

महावीर की निरालम्बन प्रचार-पद्धति :- विचार-प्रचार की दो पद्धतियाँ हैं सालम्बन और निरालम्बन। भगवान बुद्ध ने अहिंसा के प्रचार के लिए यज्ञबलिनिषेध का आलम्बन लिया और प्रचार किया। महावीर स्वामी, बुद्ध भगवान से चालीस साल बड़े थे। दोनों का स्थान एक ही बिहार प्रदेश था। काशी से लेकर नेपाल सीमा तक; लेकिन महावीर ने विचार-प्रचार के लिए कोई आलम्बन नहीं लिया। वे केवल शुद्ध अहिंसा का उपदेश देते रहे और उसके लिए निरन्तर तप करते रहे और उसी में संतुष्ट रहे। महावीर की भूमिका बड़ी ऊँची है। महावीर की करुणा निर्गुण थी, बुद्ध की व्याकुल दया। मेरा मानसिक झुकाव महावीर की पद्धति की तरफ ज्यादा है, परन्तु अभी मेरा जो काम चला है, वह बुद्ध भगवान के तरीके से चला

है। वैसे दोनों में विरोध नहीं है। महावीर का तरीका यह था कि वे लोगों से बात करते थे, तो कोई मसला हाथ में है, कोई विचार फैलाना है, ऐसी उनकी दृष्टि नहीं थी। वे जहाँ पहुँचते, व्यक्तियों के साथ बात करते, तो सामने वाले का विचार समझ लेते और उसके जीवन में समाधान हो, ऐसी राह उसे दिखाते थे। हरएक के लिए अलग राह दिखाते थे। कोई उपनिषद् पर श्रद्धा रखने वाला ब्राह्मण आता, तो उसे उपनिषद् के आधार से समझाते; कोई दूसरे ग्रंथ पर श्रद्धा रखने वाला आता तो उसे उसी ग्रंथ के आधार पर समझाते और कोई किसी भी ग्रंथ पर श्रद्धा न रखने वाला होता तो उसे बिना ग्रंथों के ही समझाते थे। इस तरह वे अहिंसा का मूलभूत विचार मध्यस्थ दृष्टि रखकर ही समझाने का कार्य करते थे।

आलम्बन और निरालम्बन के गुण दोष:- कोई आलम्बन लिया जाये या न लिया जाये, यह अलग बात है। परन्तु उस आलम्बन का अर्थ स्थूल हो जाये और जिस सूक्ष्म वस्तु के प्रकाश के लिए वह हो, वही गौण हो जाये- बाह्य आकार ही प्रधान हो जाये, आलम्बन ही बलवान हो जाये और जिस विचार के लिए वह लिया था, वह विचार छिप जाये तो खतरा पैदा हो जाता है। आलम्बन न लेने से विचार बिखर जाता है। सद्भावना अव्यक्त रूप में फैलती है, परन्तु विचार घनाकार नहीं बनता। समझने वालों को उसका विशेष आकर्षण होता है, परन्तु आम समाज को उसका कोई आकर्षण नहीं रहता। इस तरह आलम्बन लेने में एक खतरा है और आलम्बन न लेने में दूसरा खतरा है। आलम्बन लेने में एक गुण है और आलम्बन न लेने में दूसरा गुण है।

महावीर राजपुत्र थे। सब छोड़कर निकल पड़े लोकसेवा के लिए। इतने साल हुए महावीर को कोई भूलता नहीं। तो क्या बुद्ध, महावीर, राजनीति के पचड़े में रहते तो उन्हें कोई याद करता? छोड़कर निकल पड़े इसलिए उनको आज तक याद किया जाता है।

महावीर अत्यन्त निर्भीक थे:- वे अत्यन्त निर्विकार थे, नग्न घूमते थे। उनकी इस निर्भयता की मेरे चित्त पर गहरी छाप पड़ी है। इसीलिए मुझे महावीर का विशेष आकर्षण है। बुद्ध की महानता बड़ी है। सारी दुनिया में उनकी कारुण्य भावना का फैलाव हो रहा है। इसलिए उनके व्यक्तित्व में कोई कमी रही होगी, ऐसी बात नहीं है। महापुरुषों की वृत्ति भिन्न-भिन्न होती है। बुद्ध की वृत्ति को व्यावहारिक भूमिका का स्पर्श हुआ, लेकिन महावीर को व्यावहारिक भूमि स्पर्श नहीं कर सकी और परिणामस्वरूप उन्होंने स्त्री-पुरुष में भेद नहीं माना, यह सत्य है। इस विषय में वे दृढ़निश्चयी रहे इसलिए मेरे मन में उनके लिए विशेष आदर है और इसी में उनकी महावीरता है।

अहिंसा और अपरिग्रह

अहिंसा का सिद्धान्त व्यापक है, गहरा है। लेकिन उसका कम-से-कम अर्थ किया जाये तो वह है माँसाहार-मुक्ति। यानी माँस,

मछली, अंडे नहीं खाना। यह कम-से-कम है और जैनों ने उसका उत्तम पालन किया है। जैनों की कुल दुनिया के लिए यह बहुत बड़ी देन है। जैनधर्म ने हमें सिखाया है-'मनुष्य की मानवता दूसरे प्राणियों की रक्षा करने में है। उन्हें अपना आहार बनाना गलत है।' यह विचार दुनिया को जैनधर्म की बड़ी देन है।

सामुदायिक माँसाहार निवृत्ति का सर्वाधिक श्रेय शायद जैनों को है। फिर वैष्णव, ब्राह्मण आदि ने यह विचार उठाया।आज इस देश में करोड़ों लोग पूर्ण रूपेण माँसाहार-मुक्त हैं और जो माँसाहार करते हैं, वे भी उसे अच्छा मानकर तो कदापि नहीं करते हैं, यह जैन विचार की विजय है।

माँसाहार-मुक्ति की आवश्यकता यूएनओ (यूनाइटेड नेशन्स आर्गनाइजेशन या संयुक्त राष्ट्र संघ) ने भी मान्य की है। 'यूएनओ' ने कहा कि सब दुनिया को अनाज पहुँचाना है, तो माँसाहार छोड़ना होगा। हम प्राणियों को खायें और प्राणी अनाज खायें, इसमें अनाज का बहुत ज्यादा क्षय होता है। माँसाहार करने वालों को शाकाहार करने वालों की अपेक्षा चार गुना ज्यादा जमीन चाहिये। इसलिए माँसाहार छोड़ना पड़ेगा, तब सब दुनिया की भूख मिटेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि जैनों का यह जो सिद्धान्त है, अहिंसा वह मान्य हो गया।

जैनों ने भी अहिंसा का नाम लिया और गांधीजी ने भी। लेकिन हमने देखा कि गांधीजी की अहिंसा से जो शक्ति पैदा हुई वह जैनों की सांप्रदायिक अहिंसा से नहीं हुई, क्योंकि उन्होंने उसका अर्थ संकुचित कर लिया। अहिंसा का यहाँ तक संकुचित अर्थ किया गया कि अहिंसा के ख्याल से खेती करना भी गौण मान लिया गया, क्योंकि खेती में कीड़ों की हिंसा होती है। अहिंसक को व्यापार की मनाही नहीं है। खेती में पैदा हुए माल का व्यापार होता है। आचार्यों ने 'कृत, कारित और अनुमोदित' तीन प्रकार की हिंसा बतायी है। कृषि में अगर हिंसा है तो कृषि में पैदा हुए अनाज का व्यापार करना, उस हिंसा का अनुमोदन ही हुआ। कई जैन ऐसे हैं, जो चींटियों को शक्कर खिलाते हैं। हमारे वर्धा में एक दयालु पुरुष हैं। मैंने देखा है, कि वे गाँव से बाहर दूर तक घूमने जाते हैं और इधर-उधर शक्कर डालते हैं। एक दिन वे शक्कर डाल कर गये; काफी चींटियाँ जमा हो गईं। थोड़ी ही देर बाद मैंने देखा, एक बैल आया, जिसके पाँव पड़ने से सैकड़ों चींटियाँ खत्म हो गईं। अगर वह भला आदमी शक्कर न डालता तो यह सब हिंसा न होती। जीव-जंतुओं को पालना हम अहिंसा समझते हैं, लेकिन वह गलत विचार है। जिसने पालन करने की जिम्मेदारी उठायी, उसको संहार करने और जन्म देने की भी जिम्मेदारी भी उठानी चाहिये। मनुष्य इतनी भारी जिम्मेदारी नहीं उठा सकता। वह तो ईश्वर का ही काम है। इस तरह की दया करने जाते हैं तो हिंसा से बचते ही हैं, सो बात नहीं।

श्री भगवान महावीर स्वामी का वीतराग दर्शन

(डॉ. श्री चंचलमल चोरड़िया)

महावीर का दर्शन पूर्णतः वैज्ञानिक

इस संसार में समय-समय पर अनेक महापुरुष हुए जिन्होंने पीड़ित मानवता को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास किया। प्रायः सभी धर्म प्रवर्तक अपनी-अपनी विशिष्टताओं से अलंकृत रहे। उन्होंने देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार अपनी-अपनी प्रज्ञा के अनुसार तत्कालीन समस्याओं के समाधान में सहयोग करते हुए मानव को उसके परम लक्ष्य एवं कर्तव्यों का बोध कराया। नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा बनने की कला सिखलाई। उनमें आस्था रखने वाले विभिन्न धर्मावलंबी अनुयायी आज भी उसका आचरण करने का प्रयास करते हैं। प्रायः सभी व्यक्ति अपने-अपने धर्म अथवा आचरण को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। परन्तु धर्म क्या है? उसका आचरण क्यों और कैसे किया जाना चाहिये? धर्म तो सदैव कल्याणकारी होता है, अपरिवर्तनीय होता है। उसमें वैमनस्य, विरोध और विभेद को कोई स्थान नहीं। धर्म अलग है और साम्प्रदायिकता अलग है। धर्म तो प्राणी मात्र को जन्म-जरा एवं मृत्यु रूपी चक्रव्यूह से मुक्त करता है। धर्म की प्रामाणिकता उसके मानने वाले अनुयायियों की संख्या के आधार पर नहीं, अपितु उसके सिद्धान्तों की सूक्ष्मता पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से जितना स्पष्ट, तर्कसंगत, वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म विश्लेषण भगवान महावीर ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

महावीर जैन धर्म के प्रवर्तक नहीं

जैन परम्परा में तीर्थंकरों का स्थान सर्वोपरि है। वे साक्षात ज्ञाता, दृष्टा, वीतरागी होते हैं। भगवान महावीर के पूर्व भी इस अवसर्पिणी काल में तेईस तीर्थंकर हुए, जिन्होंने धर्म के शाश्वत स्वरूप का बोध कराया। महावीर ने किसी नये धर्म का प्रतिपादन नहीं किया, परन्तु उसी सनातन सत्य का साक्षात्कार कर प्राणीमात्र के कल्याण हेतु उसका उपदेश दिया। सभी सर्वज्ञों के उपदेश सिद्धान्ततः समान होते हैं, क्योंकि सत्य सनातन होता है। आवश्यकता है उसके सही स्वरूप को समझने एवं अपनाने की। धर्म आचरण की वस्तु है, थोपने की नहीं। इसी कारण जैनियों के महामंत्र नमस्कार, मंगलपाठ एवं अनुष्ठानों की साधना में गुणों को ही महत्व दिया गया। किसी महापुरुष के नाम से पूजा अथवा गुणगान नहीं किया गया है। अतः यह मानना गलत होगा कि वर्तमान में जैन धर्म के नाम

से प्रचलित धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर थे।

महावीर मात्र नाम नहीं

महावीर शब्द का संबंध कर्म से है, कथन मात्र से नहीं। जो वे करना चाहते थे, उसका पहले स्वयं उन्होंने अनुभव किया। शारीरिक बल से मानसिक बल ज्यादा शक्तिशाली होता है, और आत्मबल के सामने सारे बल तुच्छ हैं। युद्ध में हजारों योद्धाओं को जीतने की अपेक्षा अपने आपको जीतना, स्वयं को संयमित, नियमित, नियंत्रित, अनुशासित रखना ज्यादा दुष्कर है। आत्मा पर आये कर्मों का आवरण हटते ही व्यक्ति सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, त्रिकाल ज्ञाता, त्रिकाल दृष्टा बन जाता है। सम्पूर्ण आत्मानुभूति की अवस्था में विज्ञान की भौतिक जानकारी तो होती ही है, परन्तु उससे भी कहीं अधिक ब्रह्माण्ड के वर्तमान, भूत एवं भविष्य की सूक्ष्मतर एवं सम्पूर्ण जानकारी भी हो जाती है। वास्तव में वे जीवन के सर्वोच्च कलाकार, पथ प्रदर्शक एवं सर्वोच्च वैज्ञानिक होते हैं। उनका उपदेश भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए न होकर जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति हेतु होता है।

महावीर को समझने के लिए हमें पहले अपने सभी पूर्वाग्रहों को छोड़ना होगा। उनका प्रत्येक आचरण एवं उपदेश सनातन सत्य पर आधारित है, जिन्हें समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। उनके उपदेश विषम परिस्थितियों एवं काल के थपेड़ों के बावजूद आज भी अक्षुण्ण बने हुए हैं। आध्यात्मिक साधना में उनका दृष्टिकोण सम्पूर्णता की खोज पर आधारित था। अनुशासनहीनता के बीच उनका जोर आत्मानुशासन पर था। उन्होंने आत्मविकास के लिए ज्ञान एवं क्रिया के समन्वित प्रयासों को आवश्यक बताया। वे उस ढोंगवाद को नहीं मानते, जो भोगी होते हुए भी अपने आपको परम योगी मानते हैं। भोगी, निर्विकारी कैसे हो सकता है? जो मन में होगा वही तो आचरण में प्रदर्शित होगा। उन्होंने भाव क्रिया के महत्व को भी उजागर किया। मात्र जड़ क्रिया-कांडों से व्यक्ति का उत्थान नहीं हो सकता। उन्होंने यतना अर्थात् विवेक में ही धर्म माना। यदि हमारा प्रत्येक कार्य विवेक एवं प्रज्ञानुसार हो तो नवीन कर्मों के बंध की संभावनाएं कम हो जाती हैं। उनके अनुसार प्रमाद, आत्म विकास में सर्वाधिक बाधक है। प्रमाद अर्थात् सुषुप्त अथवा असावधानी। अज्ञानी ही प्रमादी होता है। जो स्वयं सजग नहीं, अपने प्रति ईमानदार नहीं, वह दूसरों को कैसे जगा सकेगा। अतः भगवान महावीर ने स्वयं साढ़े बारह वर्ष तक उग्र साधना कर पूर्णता प्राप्त की। जब तक सर्वज्ञ न बने, पूर्णतः मौन रहे। परन्तु जागृत होने के पश्चात् संसार को सही मार्ग का उपदेश देने में कंजूसी नहीं की। जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति की जितनी सूक्ष्मतम, तर्क संगत व्याख्या और विवेचन महावीर स्वामी ने श्रमणाचार की नियमावली

में किया है उसकी अन्यत्र कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज भी बढ़ती मायावृत्ति एवं शिथिलाचार के बावजूद महावीर की परम्परा के श्रमण और श्रमणी वर्ग, जिस सूक्ष्म अहिंसा का पालनकर अपनी जीवनचर्या चलाते हैं, वैसी कठोर आचार संहिता अन्यत्र ढूँढना कठिन है। वास्तव में महावीर का उपदेश प्राणीमात्र के लिए उपयोगी है। वहां भेदभाव और आशंकाओं की कोई गुंजाईश नहीं। न तो किसी के साथ भेदभाव, न अपने भक्तों के लिए विशेष रियायत। उनके विराट व्यक्तित्व को चंद प्रसंगों के आधार पर परखा जा सकता है।

प्रतिकूलता आत्मबल की कसौटी

महावीर ने साधना हेतु राजपाट छोड़ा। पद, सम्पदा और परिवार का त्याग किया। अगर चाहते तो वे अपने राज्य में भी एकान्त साधना कर सकते थे, परन्तु उन्होंने साधना के लिए प्रतिकूल क्षेत्र चुना जहाँ उनका कोई परिचित न था। वे जानते थे कि आत्मबल की परीक्षा प्रतिकूलता में ही हो सकती है। परन्तु आज हम प्रतिकूलताओं को पसंद नहीं करते। उन्होंने पद, संपदा और परिवार का मोह त्यागा परन्तु आज प्रायः हम इन्हीं चीजों के दीवाने बन, अपने आपको भगवान महावीर स्वामी का अनुयायी समझने का अहम् करें तो यह कितना अप्रासंगिक है। इस पर सारे पूर्वाग्रह छोड़ शुद्ध चिन्तन अपेक्षित है।

स्वावलंबन के उद्घोषक

महावीर आत्म साधना में स्वावलंबन के पक्षधर थे। मनुष्य को अपने कर्मों का क्षय अपने ही पुरुषार्थ से करना होता है। अतः वे साधना पथ पर अकेले ही आगे बढ़े। जब देव सम्राट शकेन्द्र उनकी सेवा में उपस्थित हो प्रार्थना करने लगे कि-'भगवन्! आपको साधना काल में भयंकर उपसर्ग (कष्ट) आने की संभावना है और मैं आपकी सेवा में रहकर उन उपसर्गों से आपकी रक्षा करना चाहता हूँ' तो इसके प्रत्युत्तर में भगवान महावीर ने कहा -'आज तक कोई भी प्राणी दूसरों की सहायता से अपने कर्मों से मुक्त नहीं हुआ है। किये हुए कर्मों का भुगतान तो स्वयं को ही करना पड़ता है।' इस प्रकार उन्होंने प्राणी मात्र को स्वावलंबी बन अपनी सुषुप्त चेतना को जागृत करने की प्रेरणा दी। स्वावलंबन की पहली शर्त है स्वाधीनता। पराधीनता जो दासता में जकड़ती है, दुःख का कारण है। स्वाधीनता में ही सुख है। वही आत्म शक्तियों के विकास का केन्द्र बिन्दु है। स्वाधीनता से ही अपनी अनन्त शक्तियों का द्वार खुलता है, जिससे सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र प्रकट होता है। महावीर कठोर परन्तु हृदयग्राही, आत्मानुशासन के प्रवर्तक थे। साधक यदि कठोर मार्ग पर न चले तो उसके फिसलने की संभावना सदैव बनी रहती है। अतः वे स्वयं भी कठोर चर्या में रहे तथा अपने शिष्य समुदाय के लिए भी उन्होंने कठोर श्रमणाचार का निर्देशन किया। उन्होंने भक्त और भगवान के बीच की खाई को समाप्त करने का उपदेश दिया। वे भक्त को सदैव भक्त ही रखने के

पक्षधर नहीं थे। अवतारवाद की मान्यता उन्हें स्वीकार नहीं थी। उन्होंने प्राणीमात्र के अन्दर उस परम परमात्म पद को पहचाना। इसी कारण उनके सम्पर्क में आकर सम्यक् साधना में पुरुषार्थ करने वाले अनेक साधक उनके समकक्ष सर्वज्ञ बने।

अनन्त करुणामय व्यक्तित्व

दुनिया में मातृत्व में ही इतनी शक्ति है कि बच्चे के प्रति अनुराग होने से माता के स्तनों में दूध आने लगता है। महावीर के जीवन के अलावा संसार में आज तक ऐसा दृष्टान्त उपलब्ध नहीं कि चण्डकौशिक जैसा भयंकर विषधारी सर्प काटे और रक्त के स्थान पर दूध की धारा बहे। प्राणीमात्र के प्रति कितनी दया, करुणा,अनुकम्पा और कल्याण की भावना होगी, ऐसे महापुरुष में, इसकी सहज कल्पना भी नहीं की जा सकती।

नारी उत्थान

भगवान महावीर के युग में भारतीय नारी की बहुत दुर्दशा थी। नारी उत्पीड़न की तरफ जनसाधारण का ध्यान आकर्षित करते हुए भगवान महावीर स्वामी ने अपने साधना काल में तेरह बोलों का कठोर अभिग्रह (संकल्प) लिया। इसके अनुसार उन्होंने तब तक भिक्षा ग्रहण नहीं करने का निश्चय किया जब तक कोई तीन दिन की भूखी, रोती हुई, भूतकाल की राजकुमारी, हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेडियां पहने, सिर से मुंडित, अबला उन्हें भिक्षा नहीं देगी। कैसी उपेक्षित थी नारी उस युग में? सहज ही कल्पना की जा सकती है। ऐसे समय में नारी को अपने धर्म-संघ में दीक्षित कर श्रमणी बनाना तथा अपने धर्म तीर्थ में साधु और श्रावक के समकक्ष क्रमशः साध्वी तथा श्राविका को स्थान देना उस युग का कितना क्रांतिकारी कदम होगा, यह विचारणीय है।

जातिवाद का प्रतिकार

भगवान महावीर स्वामी की स्पष्ट घोषणा थी कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। हरिकेशबल जैसे नीच कुल में जन्में क्षुद्र को दीक्षित कर अपने धर्म संघ में लेकर जातिवाद का उन्होंने प्रतिकार किया। वर्तमान में भी जातिवाद के नाम पर राष्ट्र में विघटन करने वालों एवं अपने स्वार्थों की पूर्ति से प्रेरित हो अनुसूचित एवं छोटी जातियों के उत्थान का दावा करने वालों को महावीर स्वामी के जीवन प्रसंगों का अध्ययन कर अहम् छोड़ देना चाहिए।

पाप से घृणा करो पापी से नहीं

भगवान महावीर ने अर्जुन माली जैसे 1141 व्यक्तियों की हत्या करने वाले को अपने धर्मसंघ में दीक्षित कर उसे साधना के क्षेत्र में इतना गतिमान किया कि छः मास के अन्दर ही उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। भगवान महावीर ने इस घटना के माध्यम से जनसाधारण को प्रतिबोधित किया कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। पापी कभी भी पाप छोड़ धर्मी बन सकता है, परन्तु पाप कभी धर्म नहीं हो सकता।

राग द्वेष त्यागे बिना मोक्ष नहीं

सम्पूर्ण सत्य की व्याख्या और उसका

सूक्ष्मतम विश्लेषण वही कर सकता है, जो स्वयं वीतरागी है। उसका न तो किसी के प्रति राग होता है और न किसी के प्रति द्वेष। जब तक राग और द्वेष रहेगा अपने भक्तों के प्रति ममत्व और अन्य की उपेक्षा होने की संभावना रहेगी। विश्व इतिहास में शायद ही अन्यत्र कहीं ऐसा दृष्टान्त मिलता हो कि भक्त अपने परम लक्ष्य मोक्ष को तब तक प्राप्त न कर सका जब तक उसका अपने आराध्य के प्रति राग था। भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य गणधर गौतम को भी तब तक केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई जब तक कि उनका भगवान के प्रति राग समाप्त नहीं हुआ। आज साम्प्रदायिक कट्टरता से धर्म की बदनामी हो रही है, धर्म का रूप विकृत हो रहा है, अपने को ही अच्छा और अन्य को बुरा बतलाकर जो घृणा का वातावरण बनाया जा रहा है, ऐसा करने वाले उन सभी धर्म के ठेकेदारों को चिन्तन करना होगा कि कहीं उनका आचरण उनके आत्म विकास में बाधक तो नहीं है।

सम्यक्त्व ही साधना का केन्द्र

भगवान महावीर ने मिथ्यात्व अथवा गलत धारणा, गलत मान्यता, गलत बातों के प्रति श्रद्धा को मोक्ष साधना में सबसे बड़ा बाधक माना। सम्यक्त्व (सही दृष्टि) के बिना ज्ञान और आचरण सम्यक् नहीं हो सकता। उनकी साधना का लक्ष्य था समभाव से वीतरागता की प्राप्ति करना। समता ही धर्म का लक्षण है। वह विवादों से परे होता है। उतार-चढ़ाव, मान-अपमान, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने आपको विचलित न होने देने का यह मूल मंत्र है। दूसरी बात यह है कि जब तक जीव-अजीव का सूक्ष्मतम भेद समझ में नहीं आएगा अहिंसा का पालन पूर्ण रूप से संभव नहीं होगा। पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल में चेतना को सर्वज्ञ ही जान सकते हैं। विज्ञान की वर्तमान पहुँच से भी यह कहीं आगे है। इसी कारण अन्य धर्मों में सूक्ष्म हिंसा से बचने का प्रावधान एवं सोच नहीं है। इन्हें केवल जैन श्रमणाचार की नियमावली में ही बारीकी से प्रतिपादित किया गया है।

महावीर का दर्शन सभी के लिए जीवन्त है, अलौकिक है। उसके अभाव में ज्ञानी का ज्ञान, पंडित का पांडित्य, विद्वान की विद्वत्ता, धार्मिक का धर्म आचरण, भक्तों की भक्ति, अहिंसक की अहिंसा, न्यायाधीश का न्याय, राजनेता की राजनीति, वैज्ञानिक का वैज्ञानिक शोध, चिकित्सक की चिकित्सा, चिन्तकों का चिंतन, लेखकों का लेखन, कवि का काव्य अधूरा रहेगा, सर्वकालिक सत्य नहीं हो सकता। कहने का सारांश यही है कि महावीर के सिद्धान्तों से मतभेद रखना, उन्हें अस्वीकार करना, चिंतनशील, प्रज्ञावान, विवेकवान व्यक्ति के लिए संभव नहीं है, चाहे वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से संबंधित क्यों न हो। उनके दर्शन में अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह का समग्र दर्शन है, जिसे शाश्वत सत्य की आधारशिला पर प्ररूपित किया गया है।

प्रभु महावीर की अंतिम वाणी -उत्तराध्ययन सूत्र

(श्री शांतिलाल बोहरा)

उत्तराध्ययन के सभी छत्तीस अध्ययन स्वतंत्र एवं अलग-अलग विषय पर होते हुए भी इन सबमें एक सापेक्ष समन्वय, क्रमबद्ध श्रृंखला है। ये सभी अध्ययन एक माला के मणियों की तरह हैं। ये मणियाँ साधक को विनय से कदम बढ़ाते हुए जीव-अजीव के भेद विज्ञान तक पहुंचा कर जीवत्व से सिद्धत्व को प्राप्त कराती हैं।

जिस प्रकार संसार के सभी रसों का आधार पानी,सदा नीचे की ओर बहता हुआ जगत की गंदगी को दूर करता है एवं ताप के माध्यम से हल्का बनकर ऊपर आकाश में जा चढ़ता है, उसी प्रकार संसार एवं अध्यात्म के सभी गुणों का आधार विनय है। विनय जीवात्मा के कर्ममल को दूर कर उसे लोकाग्र पर स्थापित कर देता है। जो विनीत बन गया वह अवश्य ही सिद्ध भी बन जायेगा।

विनीत एवं समर्पित साधक ही परीषह को जय करता दुर्लभ चार अंगों की सार्थकता से जीवन की क्षणभंगुरता रूप असंस्कृतता को गहराई से जानता हुआ प्रमाद रहित साधना करते हुए समाधि मरण को प्राप्त करने के साधना पथ पर सभी प्रकार के बंधनों को काटता हुआ निर्ग्रन्थ बनकर चरण बढ़ाता है। साधक बनने मात्र से ही सफलता नहीं मिल जाती है बल्कि साधना पथ में त्याग का भाव जरूरी है अन्यथा रस लोलुपता के कारण भंवरे और मेमने जैसी दुर्दशा होते भी देर नहीं लगती है।

इस प्रकार सात अध्ययनों में गुण-दोषों के परिचय में कपिल के गुणग्राही जीवन के उदाहरण में लोभ का त्याग एवं नमिराजर्षि की प्रवज्या से उनकी दृढ़ वैराग्य भावना का स्वरूप समझाया है। प्रवज्या जैन दर्शन की सर्वोच्च साधना है। इस साधना में प्रमाद को रंच मात्र भी स्थान नहीं है। इसी तथ्य को द्रुमपत्रक के उदाहरण से प्रस्तुत किया गया है।

अप्रमत्त साधक ही बहुश्रुत पूज्य बन सकता है एवं बहुश्रुत की तेजस्विता में हरिकेशी जैसे जन्मना चाण्डाल भी कर्मणा देव पूज्य बन जाते हैं। पूजनीय बाह्य साधना करते हुए भी चित्त-संभूत मानसिकता में परिवर्तन से एक त्यागी एवं दूसरा आगे चलकर निदान के वशीभूत भोगी बनकर दुर्गति का शिकार बनता है। भोग एवं योग के परिणाम बताकर योग साधना हेतु त्यागमय जीवन जीने के लिए इषुकार अध्ययन के माध्यम से वैराग्य का उद्बोधन किया गया है। वैराग्य युक्त

साधक ही सद्भिक्षु हो सकता है। सद्भिक्षु की साधना हेतु अनुकूल स्थल, अनुकूल वातावरण एवं त्यागमय जीवन की झलक है। ब्रह्मचर्य समाधि स्थान। परन्तु यदि साधक समाधि स्थान का सम्यक् पालन न करे तो पाप श्रमण बनते भी देर नहीं लगती है।

अठारहवें से तेईसवें तक के छह अध्ययनों में अलग-अलग कथा प्रसंगों में कहीं साधुचर्या का तो कहीं विरक्ति हेतु नारकीय दुःखों का वर्णन किया गया है। साधक कहीं पाप श्रमण न बन जाए इस हेतु संजयीय में राजर्षि संजय एवं क्षत्रिय राजर्षि के संवाद में मिथ्यावादों से बचने एवं बचाने वाली अनेक महान आत्माओं की कथाओं का वर्णन है। मृगापुत्र के माध्यम से नारकीय वेदना एवं संयमचर्या का वर्णन किया गया है। महा निर्ग्रन्थीय (अनाथी मुनि) के प्रसंग में संसारी वैभव की निरूपयोगिता को बताकर श्रमणचर्या का विस्तृत वर्णन किया गया है। समुद्रपाल के माध्यम से देश-काल की स्थिति के साथ श्रमणाचार का स्वरूप समझाया है। रथनेमि के प्रसंग से अस्थिरता से स्थिर होने के मार्ग का, केशी गौतमीय के माध्यम से कालक्रमानुसार आचार भेद का दिग्दर्शन कराया गया है।

अनेक प्रकार के श्रमणाचार प्रस्तुत करने के उपरान्त श्रमणाचार की आधारभूत साधना के रूप में प्रवचन माता का एवं प्रवचन माता के आराधक कैसे होते हैं इस हेतु यज्ञीय में सच्चे ब्राह्मण का स्वरूप बताया है।

सच्चे श्रमण या माहण की दिनचर्या हेतु समाचारी एवं खलुंकीय रूप दुष्ट शिष्य के माध्यम से समाचारी का पालन न करने वाले से परिचित कराते हुए दुष्ट शिष्यों का त्याग कर मोक्ष मार्ग में गति की प्रेरणा दी है। मोक्ष मार्ग में प्रगति हेतु सम्यक्त्व पराक्रम के माध्यम से साधना मार्ग का विशद् वर्णन करके साधक को विभिन्न तप-आराधन हेतु तपोमार्ग गति का उपदेश दिया है। हेय-ज्ञेय-उपादेय की आराधना हेतु चरणविधि की प्ररूपणा कर विधि अनुसार संयम यात्रा करने, प्रमाद स्थान के त्याग की प्रेरणा दी गई है।

प्रमाद से कर्मबंधन एवं अप्रमादी की मुक्ति होती है। यह तथ्य कर्मप्रकृति के माध्यम से समझाते हुए कर्म बंधन का एक प्रमुख कारण लेश्या का विभिन्न द्वारों से विशद् वर्णन किया है। कर्मों से मुक्ति हेतु प्रमाद एवं अशुभ लेश्या का त्याग करने वाले साधक, उसकी साधना, और इससे संबंधित कुछ प्रमुख अंगों का वर्णन अनगार-मार्ग-गति में करके अंत में जीव एवं अजीव का विशद् वर्णन जीवाजीव विभक्ति में किया गया है। जीव एवं जड़ के भेद विज्ञान को समझकर जड़ की आसक्ति से ऊपर उठकर संलेखणा की आराधना से मुक्ति की प्राप्ति, मुक्त सिद्ध जीवों का स्वरूप समझाया है साथ ही कांदर्पी आदि अशुभ भावों से बचने का उपदेश दिया गया है।

इस प्रकार उत्तराध्ययन सूत्र में सभी प्रकार के विषयों का वर्णन करते हुए प्रभु महावीर ने सम्पूर्ण साधना मार्ग की प्ररूपणा की है।

युग प्रधानाचार्य श्री हारिल सूरि

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

युग प्रधानाचार्य श्री हारिल सूरिजी म.सा. के संबंध में 'दुस्समा समणसंघ' थयं अवचूरि के अंत में अभिमत दिये गये हैं। इसमें पहले अभिमत के अनुसार उनका जन्म वीर नि.सं.943 में, दीक्षा वीर नि.सं.960 में होना दर्शाया गया है। दूसरी अवधारणा के अनुसार उनका जन्म वीर नि.सं.953 में और दीक्षा वी.नि.सं.970 में होने का उल्लेख है। उक्त दोनों मान्यताओं से आचार्य हारिलसूरिजी का युग प्रधानाचार्य काल वीर नि.सं. 1001 से वी.नि.सं. 1055 तक कुल 54 वर्ष माना गया है। तथ्यों की दृष्टि से यह फलित होता है कि आचार्यश्री का जन्म वीर नि.सं.943 में दीक्षा सं. 960 में, युग प्रधानाचार्य पद वीर नि.सं.1001 में और स्वर्गारोहण वीर नि.सं.1055 में हुआ। वीर नि.सं.1000 में 28 वें युग प्रधानाचार्य आर्य सत्यमित्र के स्वर्गावास होने पर आचार्य हारिल को 29 वें युग प्रधानाचार्य के रूप में पद पर आसीन किया गया। आपके जीवन की ऐतिहासिक एवं धार्मिक घटनाओं से यह मालूम होता है कि जैन शासन में आप एक अप्रतिम प्रतिभा सम्पन्न युग पुरुष हुए। एक घटना के अनुसार जब भारत पर विदेशी हूण आक्रमणकारियों के विनाशकारी आक्रमण हो रहे थे, उनके अत्याचारों से भारत के अनेक भू-खण्डों की प्रजा त्रस्त होकर, राजनीतिक एवं धार्मिक रूप से विच्छिन्न हो रही थी, ऐसे कठिन काल में आचार्यश्री हारिलसूरिजी ने एक सच्चे युगपुरुष एवं धर्मपुरुष के रूप में धैर्य, अडिग साहस एवं सूझबूझ से उन आततायियों का अहिंसात्मक तरीके से प्रतिकार कर उन्हें मानवता का पाठ पढ़ाया और प्रजाजनों को अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। आचार्य हारिल के उपदेशों एवं उनकी अलौकिक प्रतिभा से प्रभावित होकर हूणराज तोरमाण हिंसा छोड़कर आपकी शरण में आ गया और सदा के लिये आपका उपासक बन गया। तोरमाण जैसे भयानक आततायी को मानवता का पाठ पढ़ाने और उसे अहिंसा के मार्ग पर लाकर धार्मिक कार्यों में लीन करने के कारण युग प्रधानाचार्य श्री हारिल सूरिजी की कीर्ति दूर-दूर तक फैली।

एक अन्य तथ्य एवं 'तस्स गुरु हरिउत्तो आयरिणो आसि गुप्तवंसाओ' गाथा से यह प्रमाणित होता है कि आचार्य हारिल का जन्म गुप्त राजवंश में हुआ, जिन्हें आचार्य हरिगुप्त के नाम से जाना जाता था। आचार्य ने पव्वइसा नगरी में कुछ समय के लिए निवास किया था। श्री उद्योतक सूरिजी ने आचार्य हारिल के गुप्त राजवंश में जन्म लेने के विषय में अहिच्छत्रा से मिले ताम्र के सिक्कों को भी अनुमानित प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया। ताम्र के सिक्कों से अनेक विद्वानों द्वारा यह अनुमान लगाया जाता है कि आचार्य श्री हारिल श्रमण धर्म में दीक्षित होने से पूर्व संभवतः अहिच्छत्रा के गुप्तवंश के महाराजा थे। ईस्वी सन् 1884 में सर कनिंघम को प्राप्त ताम्र सिक्के के एक ओर 'श्री महाराज हरिगुप्तस्य' वाक्य उल्लेखित है एवं सिक्के के दूसरी ओर पद्मपुष्प के पिधान वाले कुंभ कलश की आकृति अंकित है। पद्म पुष्प सहित कुंभ कलश वस्तुतः जैन परम्परा में मान्य अष्टमंगलों में से एक मंगल है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अहिच्छत्रा के गुप्त वंशीय राजा हरिगुप्त जैन धर्मावलंबी थे। पुरातत्ववेत्ता हरिगुप्त के इस सिक्के को विक्रम की छठी शताब्दी का मानते हैं और यही काल युगप्रधानाचार्य श्री हारिल अर्थात् हरिगुप्त सूरि का भी रहा है। इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि आचार्य हारिल अपने श्रमण जीवन से पूर्व गुप्तवंशीय महाराजा थे।

आचार्य हारिल द्वारा किये गये अनन्य उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए किसी कवि ने उनके स्वर्गारोहण की घटना को स्मृतिरूप चिरस्थायी बनाने के लिए ऐतिहासिक गाथा में लिखा है कि विक्रम संवत् 585 में हरिभद्रसूरि नामक सूर्य अकस्मात् ही अस्त हो गया। वह भव्य प्राणियों के कल्याण का पथ प्रदर्शित करे। इस गाथा में युग प्रधानाचार्य श्री हरिभद्रसूरि (हारिल सूरिजी) को सूर्य की उपमा दी गई है। इससे यही स्पष्ट होता है कि युग प्रधानाचार्य हारिल जिनके नाम हरिगुप्त एवं हरिभद्र भी उपलब्ध होते हैं, अपने समय के एक महान युगप्रवर्तक, अनुपम प्रकाण्ड पंडित एवं श्रमणश्रेष्ठ थे। यह गाथा श्री मेरूतुंग सूरिजी ने अपनी कृति 'विचारश्रेणि' में भी उद्धृत की है।

भलमनसाहत

दिये हुए दान को गुप्त रखें, घर आये हुए शत्रु का भी सत्कार करें, परोपकार करके भूल जाएं, दूसरे के अपने प्रति किये हुए उपकार की सर्वत्र चर्चा करें, धन सम्पन्न होकर गर्व न करें और पराये व्यक्ति की पीठ पीछे कभी निंदान करें, यही भलमनसाहत है। भले लोगों में इतनी बातें स्वभावतः ही होती है।

चिंतन की चांदनी-1

शरीर बलवान तब बनता है जब उसे भोजन मिलता है; आत्मा बलवान तब बनती है जब ज्ञान प्राप्त करती है। विचार करें जीवन में शरीर को बलवान बनाने की कोशिशें ज्यादा की हैं अथवा आत्मा को!!!

– आ.श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी

हर बात होठों पर लाई नहीं जाती, मौत भी बेवक्त बुलाई नहीं जाती।
हर परेशानी ख्यालों में लाई नहीं जाती, हर रस्म खुशी से निभाई नहीं जाती।

–डॉ. मुनि सिद्धरत्न विजयजी

पुण्याधीन जो प्राप्त हो उस पर अहंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि अहंकार ही दीनता तथा हीनता की शुरूआत है। याद रखें जो चढ़ता है, वह नीचे भी गिरता है।

–मुनि श्री अपूर्वरत्नविजय जी

गुणों से युक्त गुरु लौह चुंबक जैसे होते हैं। वे किसी को बुलाते नहीं, सब स्वप्रेरित हो प्रेम से उनके पास आते हैं।

–मुनि श्री चारित्ररत्न विजय जी

गुरु की डांट से दुःख का अनुभव नहीं होता वही व्यक्ति दुनिया में सबसे ज्यादा सुखी होता है।

–मुनि श्री निपुणरत्न विजयजी

इस दुनिया में कभी भी बिना गलती के कोई सजा नहीं होती इसलिए दुःख को भी समभाव से सहन करना चाहिए।

–मुनि श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी

ये मनुष्यभव सुख भोग के लिए नहीं है
ये मनुष्यभव संपदा इकट्ठा करने के लिए नहीं है,
ये मनुष्यभव परिवार को खुश रखने के लिए भी नहीं है,
भाई! ये मनुष्यभव सिर्फ और सिर्फ संयम जीवन की साधना करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए है।

– मुनि श्री जिनागमरत्न विजयजी

मन के शुभ विचार, शुभ वचनों के मधुर उच्चार, काया से शुभ आचार में ही जीवन की पवित्रता है।

– मुनि श्री पवित्ररत्न विजय जी

शरीर को पानी जैसा बनाओ। जैसी परिस्थिति मिले वैसे ही सेट हो जाओ।

–मुनि श्री प्रत्यक्षरत्न विजय जी

अति सर्वत्र वर्जयेत्

(साध्वी प्रीतिदर्शना श्रीजी)

दोहा –

निद्रा भोजन अल्प हो, मर्यादित हो बात।
जयन्तसेन प्रसन्न वह, स्वस्थ रहे मन गात।।

अर्थ–

प.पू. गुरुदेव जयन्तसेन सूरिश्वरजी म. मानव को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि यदि तुम जीवन में प्रसन्न रहना चाहते हो, तन और मन को स्वस्थ रखना चाहते हो तो निद्रा, भोजन में अल्पता और बातों में मर्यादा का ध्यान रखें।

भावार्थ–

सृष्टि में मनुष्य सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं प्राणवान तत्व है। मनुष्य जन्म की सफलता के लिए मनुष्य का जाग्रत रहना आवश्यक है। निद्रा दो प्रकार की होती है। एक दर्शनावरणीय कर्म के उदय से होने वाली द्रव्य निद्रा और दूसरी दर्शन मोहनीय कर्म के उदय से होने वाली भाव निद्रा। द्रव्य निद्रा और भाव निद्रा दोनों प्रकार की निद्रा पापकर्म के उदय से आती हैं। दोनों का निराकरण करना आवश्यक है। साधारण अर्थों में भी यदि निद्रा को अल्प नहीं किया तो हमारे जीवन का आधा भाग तो सोने में ही निकल जाएगा। एक स्वस्थ व्यक्ति को अधिक से अधिक 6 घंटे ही सोना चाहिए। अधिक सोने से आलस्य बढ़ता है, स्फूर्ति का नाश होता है। प्रातःकाल का स्वर्णिम समय प्रतिक्रमण, सामायिक, प्रभु भजन, आत्मचिंतन में लगना चाहिए जो अन्यथा सोने में ही निकल जाता है। 'जो सोए वह खोए- जो जागे वह पाए' कहावत प्रसिद्ध है। आलस्य जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है। जीवन को सफल करना हो तो चाहे रविवार का दिन हो, या ठंड का मौसम, सूर्योदय के पहले ही निद्रादेवी को समय पर विदा कर देना चाहिए। निद्रा को देवी स्वरूप में ही स्वीकार करें। देर तक निद्रा में मगन रहने पर देवी रूप नहीं रहती डायन हो जाती है जो हमारे जीवन के अति महत्वपूर्ण पलों को खा जाती है। इसी तरह दिन में भी कभी नहीं सोना चाहिए। निद्रा अवस्था में दर्शनावरणीय कर्म अधिक बंधते हैं। गुरुदेव प.पू.राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने क्रियोद्धार के बाद कभी 3 घंटे से अधिक निद्रा नहीं ली। भगवान महावीर स्वामी ने साधना के दौरान साढ़े बारह वर्ष में मात्र अन्तर्मुहूर्त निद्रा ली और भाव निद्रा तथा द्रव्य निद्रा दोनों पर सदा के लिए विजय प्राप्त की। अतः मोह निद्रा से जागकर द्रव्य निद्रा को अल्प करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। निद्रा और भोजन दोनों की ही मात्रा को हम अभ्यास से जितना चाहें घटा सकते हैं और जितना चाहे

बढ़ा भी सकते हैं। निरोगी और स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है कि निद्रा और भोजन अल्प संतुलित मात्रा में हो।

अल्प भोजन से तन स्वस्थ रहेगा और स्वस्थ तन में मन भी स्वस्थ रहेगा। इसलिए हर व्यक्ति को खाने-पीने की वस्तुओं से ममत्व भाव हटाकर उनका परिमाण निश्चित करना चाहिए। जिनशासन में परम तारक परमात्मा ने बारह प्रकार के तपों में एक तप 'ऊणोदरी तप' बताया है। यदि हम खुराक से कम खाते हैं तो वह तप कहलाता है, इससे स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। शास्त्र में पुरुष का आहार 32 कवल और स्त्री का 28 कवल का प्रमाण बताया है। इससे अल्प भोजन उणोदरी तप है। अति मात्रा में आहार लेना, स्वाद के वशीभूत होकर बाहर की वस्तुएँ खाना अधर्म है, पेट के साथ भी अत्याचार है। अतः अल्प निद्रा और अल्प भोजन की बात को गांठ बांध लें।

तीसरी बात है अल्प और मर्यादित रूप से बात करने की। मौन स्वयं में तप है। इससे भी अधिक महत्ता वाणी पर संयम रखने की है। वाणी पर संयम रखने के लिए मन पर नियंत्रण आवश्यक है। वाणी के 8 गुणों में प्रथम गुण है 'स्तोकं' से आशय 'थोड़ा, मधुर और हितकर' बोलने से है। एक पौंड दूध से मिली शक्ति व्यर्थ में बोले एक शब्द में खर्च हो जाती है। इसे शक्ति का अपव्यय मानें। अधिक बोलने वाले की बातों का मान नहीं रहता, वचनों की कीमत नहीं रहती है। प्रायः इससे कलह होता है, राग-द्वेष बढ़ता है। जो विवेकपूर्वक अल्प बोलते हैं उनकी बातों को सभी ध्यान से सुनते हैं। इसलिए कहते हैं-

'कम खाओ, गम खाओ,
कोई बोले तो चुप हो जाओ।'

सुख के लिये नुस्खा

एक अखबार वाले ने मुझसे पूछा था-'सुख के लिये आपका नुस्खा क्या है ? मैं चिकित-सा सोचता रहा।' सुख के लिये मेरा नुस्खा क्या है ?

फिर अपने आप ही उत्तर मिल गया -मैं उस समय अपने को सुखी और प्रसन्न अनुभव करता हूँ, जब मैं अपने लिये नहीं, बल्कि अपने प्रियजनों के लिये, अपने काम के लिये जी रहा हूँ। हाँ, सुख के लिये मेरा यह नुस्खा है-अपने बाहर जिओ, अपने बारे में जितना कम हो सके, उतना कम सोचा।

सुख के लिये मेरा नुस्खा ?.... जो चीज आपके पास नहीं है और न कभी हो सकेगी, उसके बारे में दिवास्वप्न देखने के बजाय, जो कुछ आपको उपलब्ध है उसका आनन्द लीजिये। काम करना, प्रेम करना, अपने अस्तित्व को बिसरा देना, यह है सच्चा सुख। अपने प्रियजनों के जीवन को आनन्द-भरा और आसान बनाने का प्रयत्न करने वाले नर-नारियों का सुख यही तो होता है।

आगमोद्धारक नवम्बर-2012

संसार वर्धक माया

(संकलन-साध्वी श्री तृप्तिदर्शना श्रीजी)

शिष्य के हित में जिसका चित्त हो, वह गुरु। जन्म और मरण के बीच में होती हुई प्रवृत्ति का नाम है जीवन। गुरु के कमल रूप चरणों में सदा भ्रमर रूप गुंजन करने वाले का नाम है शिष्य।

शिष्य दो प्रकार के होते हैं। एक सरल और दूसरा मायावी। अन्दर के भाव से गुरुभक्ति करने वाला शिष्य पहले प्रकार का है। गुरु के प्रति बहुमान के बिना केवल बाहर से गुरुभक्ति का दिखावा करने वाला शिष्य दूसरी प्रकार का याने मायावी कहलाता है। माया संसार की माता है। सरल शिष्य क्रोध आदि कषाय करते हैं किन्तु फिर उसका पश्चाताप करके गुरु के समक्ष दोषों की आलोचना कर लेते हैं। गुरु के द्वारा दिए गए प्रायश्चित को धारण करते हैं, जिससे उनकी मुक्ति हो जाती है। मायावी शिष्य को कभी पश्चाताप नहीं होता। वह आलोचना-प्रतिक्रमण किए बिना संसार चक्र में भ्रमण करता रहता है। माया से भवांतर में तिर्यंच गति, स्त्रीवेद आदि अशुभ प्रवृत्ति का बंध होता है। सरल शिष्य शुद्ध और सिद्ध हो जाता है, इसलिए जल्दी ही मोक्ष में जाता है। मायावी शिष्य माया करता है इससे वह न शुद्ध व सिद्ध होता है न ही मोक्ष में जाता है। अतः मोक्ष की इच्छा रखने वाले शिष्यों को माया का सर्वथा त्याग करना चाहिए।

स्वयं के कार्य को सफल करने के लिए दिखावे के मधुर वचनों से, बिना भाव से गुरु का काम कर, गुरु को प्रसन्न करने वाले शिष्य के प्रयास करोड़ का जहाँ लाभ मिलता हो वहां एक कोड़ी प्राप्त करके खुश होने जैसे हैं। गुरु को खुश करने के उसकी सभी क्रियाएं नट की भांति होती है। नट मात्र अभिनय करता है। अंदर से स्वयं को अलग ही मानता है। ऐसा ही कुछ मायावी शिष्य के साथ होता है। गुरु के समक्ष मीठा वचन बोलता है, भक्ति करता है लेकिन उसके हृदय में गुरु की इच्छा पूरी करने, अपने कर्मों की निर्जरा करने का कोई शुभ भाव नहीं होता। शिष्य के रूप में उसके कार्य में कोई विघ्न नहीं आए, इसलिए बाहर से गुरुभक्ति करता है। गुरु को प्रसन्न करने और उनकी आज्ञा प्राप्त करने का उद्देश्य आत्मकल्याण नहीं होता। गुरु प्रसन्न हो सभी प्रकार की अनुकूलता देंगे, अच्छी गोचरी देंगे, अच्छे वस्त्र-पात्र आदि देंगे। सभी उसके वचन को मानेंगे, लोक में उसे यश मिलेगा, पदवी मिलेगी, उसे शिष्य बनाके देंगे और मन में धारे सभी दूसरे कार्य भी पूर्ण करेंगे। यही भावना रहती है।

गुरु को खुश करने के लिए मायावी शिष्य गुरुदेव के सम्मुख ऐसे वचन बोलता

है कि 'गुरुदेव! आप की भक्ति ही मेरा जीवन है। आप मेरे प्राण हो, आपके बिना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता। मेरा जीवन आपके अधीन है। मैं मन-वचन-काया से आपके चरणों में समर्पित हूँ। बिना आपकी आज्ञा के कोई कार्य नहीं करता हूँ। जिस दिन आपकी भक्ति नहीं होती उस दिन को मैं वांझिया मानता हूँ। मुझे आपकी कृपा चाहिए और कुछ नहीं चाहिए।' इन मीठे वचनों के साथ मायावी शिष्य गुरु को प्रसन्न करने के लिए अच्छी-अच्छी गोचरी लाता है, ठंडी और गर्मी में गुरु का आसन उपयुक्त स्थल पर बिछाता है, गुरु के वस्त्रों का बार-बार काप निकालता है। इसी तरह के कामों से गुरु को सभी प्रकार की अनुकूलता देता है। लेकिन शिष्य के द्वारा की गई सभी मेहनत प्रायः इसलिए निष्फल रह जाती है, क्योंकि ये सारे कार्य वह बिना भाव से करता है। यदि ये ही कार्य भावपूर्वक किए जाएं तो कह नहीं सकते कितना लाभ सहज ही मिल जाता।

मायावी शिष्य के द्वारा की गई गुरुभक्ति कुलटा नारी की क्रिया के समान है। स्वयं का पति होने पर भी दूसरे पुरुष का सेवन करने वाली नारी कुलटा कहलाती है। वह कुलटा नारी स्वयं के पति से खुश नहीं होती है इसलिए दूसरे पति की इच्छा करती है। दूसरे पुरुष के साथ स्वयं का संबंध अपने पति को पता नहीं चले इसलिए बाहर से वह पति की अच्छी भक्ति करती है। लेकिन उसके मन में तो जारपुरुष ही रमता है। पति की अनुपस्थिति में वह उस जारपुरुष के साथ क्रीडा करती है। उस नारी को तब सभी क्रिया सुख देने वाली लगती है। उसका पाप का घड़ा लंबे समय तक नहीं टिकता। एक दिन फूट जाता है। उसकी दुष्ट चेष्टा जानकर पति उसे घर से बाहर निकाल देता है। जारपुरुष भी विचार करता है कि इसने स्वयं के पति को छोड़ा, ऐसे ही मुझे भी एक दिन छोड़ देगी। वह भी उसके ऊपर विश्वास नहीं करता और दोनों तरफ से उसे ठोकर मिलती है। जीवन में उसे मात्र दुःख ही दुःख मिलता है। इस तरह थोड़े लाभ के लिए उसने बहुत कुछ खो दिया। यदि भावपूर्वक पति की सेवा की होती तो वह जीवनपर्यंत सुखी रहती।

यही हाल मायावी शिष्य का होता है। बाहर से वह गुरु को खुश करता है अन्दर से भावना स्वयं की इच्छाओं को पूरा करने की होती है। मायावी शिष्य का घड़ा भी फूटता है तब गुरु उसका सच्चा स्वरूप जान जाते हैं। उसके ऊपर खुश नहीं होते, उसके ऊपर विश्वास नहीं करते हैं। उसकी इच्छाओं की पूर्ति नहीं करते हैं। शिष्य भी दोनों तरफ से भ्रष्ट हो जाता है। मायावी शिष्य के द्वारा की गई गुरुभक्ति थोड़े समय फल देती है लेकिन बाद में वह बहुत काल तक दुःख भोगता है। इस भव के थोड़े लाभ के लिए भवोभव बिगड़ जाते हैं। इसलिए शिष्यों को गुरुभक्ति में कभी भी माया नहीं करना चाहिए। भावपूर्वक गुरुभक्ति करना चाहिए।

आत्मा नित्य है

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्री जी)

आत्मा के अस्तित्व के विषय में विचार करने से एक सामान्य जन को उसका अस्तित्व संभव तो लगता है साथ ही यह शंका भी होती है कि यदि आत्मा है भी तो शायद वह अविनाशी अर्थात् नित्य नहीं है। तीनों कालों में रहने वाला पदार्थ नहीं है, मात्र देह के संयोग से उत्पन्न होता है और उसके वियोग से विनाश को प्राप्त हो जाता है।

इसके विपरीत ज्ञानी पुरुष आत्मा को नित्य मानते हैं। वे समाधान करते हुए कहते हैं कि मात्र देह ही परमाणु का संयोग है और जड़ रूप है। चूंकि देह जानने में आता है इसलिए वह अपने आप (आत्मा) को नहीं जान पाता है। स्वयं को नहीं जान पाता है तो फिर चेतन की उत्पत्ति और नाश को भला कैसे जानेगा?

विचार करें तो प्रतीत होगा कि देह का एक-एक परमाणु जड़ है। चमड़ी, मांस, हड्डी, रक्त आदि सभी कुछ जड़रूप है। इनमें ज्ञान का अंश भी नहीं है। ऐसा सबको समझ में आता है। इसलिए देह के संयोग से चेतन की उत्पत्ति मानना योग्य नहीं है। इसी प्रकार देह के नाश से चेतन का नाश मानना भी योग्य नहीं है। आत्मा अरूपी है और उसका स्वभाव तो जानना और देखना है जबकि देह पुद्गल परमाणुओं का संयोग है। पुद्गल का स्वभाव सड़न, गलन, पड़न है, जो स्पर्श, रस, गंध, वर्ण आदि से युक्त द्रव्य है। देह से चेतन की उत्पत्ति और उसमें ही नाश को प्राप्त होने की बात किसने जानी? यदि जानने वाली चेतन (आत्मा) की उत्पत्ति देह से पहले नहीं है, और नाश देह से पहले है, तब यह अनुभव हुआ किसे?

देह का जीव के साथ संयोग मात्र संबंध है। देह जड़ है, वह किसी को नहीं जानती। यहाँ तक कि अपने आप को भी वह नहीं पहचानती है। ऐसे में यह चेतन मेरी देह से उत्पन्न हुआ है और मेरी देह के छूट जाने के बाद यह चेतन भी नष्ट हो जाएगा, ऐसा यह जड़ (देह) कैसे जानेगा? जानने वाला पदार्थ तो आत्मा ही है, देह जानने वाली नहीं है।

देह की उत्पत्ति और उसके नाश को जो जानता है, निश्चित ही वह देह से भिन्न ही कोई वस्तु है। वह उत्पत्ति और नाश को प्राप्त होने वाला नहीं ठहरा बल्कि उस (देह) को जानने वाला ठहरा। इसलिए आत्मा संयोग से उत्पन्न नहीं हुआ है। अर्थात् असंयोगी है, स्वाभाविक पदार्थ है, इसलिए आत्मा प्रत्यक्ष प्रमाण से भी नित्य समझ में आता है। इसलिए आत्मा को अनुत्पन्न,

अविनाशी, नित्य और शाश्वत है, ऐसी प्रतीति करना योग्य होगा।

क्रोध आदि प्रकृतियों की विशेषता सर्प आदि प्राणियों में जन्म से ही देखने में आती है। जन्मते ही बच्चा स्तनपान करने लग जाता है। वर्तमान देह में तो उसने वह अभ्यास नहीं किया, वरन् जन्म के साथ ही वह अभ्यस्त है। अर्थात् यह पूर्व जन्म का ही संस्कार है, जो जीव की नित्यता सिद्ध करता है।

किसी भी वस्तु का किसी भी काल में सर्वथा नाश नहीं होता है, मात्र अवस्था में अन्तर होता है। चेतन का भी सर्वथा नाश नहीं होता। अवस्था में ही अन्तर होता है। जैसे घट आदि पदार्थ फूटने पर लोग कहते हैं कि घट का नाश हुआ है किन्तु घट के मिट्टीपन का नाश नहीं होता है। वह चूरा-चूरा हो जाए तो भी पुद्गल परमाणु के समूह रूप से रहता है, उसका सर्वथा नाश नहीं होता है। पुद्गल द्रव्य, पुद्गल रूप ही रहता है, उसके पुद्गलपने का नाश नहीं होता है। पुद्गल द्रव्य का अन्य में परिवर्तन भी नहीं होता है। इसी तरह आत्मा का भी सर्वथा नाश नहीं होता, केवल अवस्था अन्तर होता है। जैसे घट फूटकर भी टुकड़ों में, परमाणु समूह रूप में स्थित रहता है, इसी तरह आत्मा का सूक्ष्मरूप अर्थात् अव्यक्त चेतना निगोद के जीवरूप में रहती है। निगोद अवस्था में भी आत्मा के चेतनपने का नाश नहीं होता है। आत्मा असंख्य प्रदेशी ही रहती है। एक भी प्रदेश कम या ज्यादा नहीं होता है। ज्ञान, दर्शन आदि अनन्त गुण आत्मा में विद्यमान रहते हैं, किन्तु निगोदावस्था में ज्ञान का क्षयोपशम अक्षर के अनन्तवें भाग जितना ही होता है। निगोद अवस्था से ज्ञान का क्षयोपशम क्रमशः बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय अवस्था में बढ़ता जाता है। इस प्रकार आत्मा का नाश नहीं होता है, किन्तु आत्मा की अवस्थाओं का नाश होता है, अवस्थाएं बदलती रहती हैं, आत्मा नित्य है।

(क्रमशः)....

श्री तपागच्छीय श्रमण महासम्मेलन 3 अप्रेल को

अहमदाबाद। 28 वर्ष के बाद श्री शत्रुंजय गिरीराज की छत्र छाया में प.पू. श्री विजय प्रेम सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. श्री विजय हेमचंद्र सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. श्री विजय जयघोष सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. श्री विजय अभयदेव सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. श्री दौलत सागर सूरीश्वर के संयोजको द्वारा दि. 3 अप्रेल को श्री तपागच्छीय श्रमण महासम्मेलन का आयोजन होगा। इस सम्मेलन में 100 से अधिक आचार्य भगवंतों एवं 2100 से अधिक साधु-साध्वीजी भगवंतों पधारेंगे। शुभ स्थल पारणा भवन, तलेटी रोड पालीताणा है। (प्र.)

वीर सुश्रावक श्री दयाल शाह (मेवाड़)

(संकलन-श्री विमलकुमार चोरड़िया, पूर्व सांसद भानपुरा, म.प्र.)

महाराणा राजसिंह और संघवी दयालदास

मेवाड़ के इतिहास में राजनीति और सैनिक दोनों ही दृष्टियों से संघवी दयालदास का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दयालदास के समय रत्नगर्भा भारत वसुंधरा की छाती पर औरंगजेब के अमानुषिक अत्याचारों का तांडव नृत्य हो रहा था। उसकी धर्मान्धता से चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। अबलाओं, मासूमों, बेकसों पर दिन-दहाड़े अत्याचार होते थे। धार्मिक स्थल, मंदिर जमींदोज किये जाते थे। मस्तक पर लगा तिलक जबान से चाट लिया जाता था और चोटी बलपूर्वक मस्तक से जुदा कर दी जाती थी। इस अत्याचार को और भी बल मिला जब उसने हिन्दुओं पर जजिया कर लगाने का विचार किया। इससे सारे देश में असंतोष की आग प्रज्ज्वलित हो उठी। ऐसे संकट के समय में मेवाड़ के राणा राजसिंह ने औरंगजेब को एक पत्र लिखा, जिसमें ऐसा अमानुषिक कार्य न करने की सलाह दी। इससे औरंगजेब का क्रोध भड़क उठा और उसने अपनी विशाल सेना के साथ मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया। उसकी सेना ने वि.सं. 1736 के भाद्रपद शुक्ला 8 के दिन देहली से कूच किया। उस समय महाराणा राजसिंह के प्रधानमंत्री संघवी दयालदास थे। इस युद्ध में महाराणा राजसिंह ने जिस रण कुशलता और चतुराई के साथ औरंगजेब की विशाल सेना को पराजय दी, वह इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। यहाँ यह बात ध्यान रखने योग्य है कि इस सारी रणनीतिक कुशलता और चतुराई में मंत्री दयालदास कंधे-बकंधे महाराणा राजसिंह के साथ थे। महाराणा राजसिंह, संघवी दयालदास की सेवाओं से बड़े प्रसन्न हुए और औरंगजेब के द्वारा मेवाड़ पर की गई चढ़ाई का बदला लेने के लिए संघवी दयालदास को बहुत सी सेना के साथ मालवे पर आक्रमण करने के लिए भेजा। वीर दयालदास ने जिस बहादुरी और तेजस्विता के साथ मेवाड़ पर हुए हमले का बदला लिया इसका वर्णन कर्नल जेम्स टॉड ने इस प्रकार किया है-

'राणाजी के दयालदास नामक एक अत्यन्त साहसी और चतुर दीवन थे; मुगलों से बदला लेने की प्यास उनके हृदय में सर्वदा प्रज्ज्वलित रहती थी। उन्होंने शीघ्र चलने वाली घुड़सवार सेना को साथ लेकर नर्मदा और बेतवा नदी तक फैले हुए मालवा राज्य को लूट लिया। उनकी प्रचण्ड भुजाओं के बल के सामने कोई भी खड़ा नहीं रह सकता था। सारंगपुर, देवास, सरोज, माँडू,

उज्जैन और चन्देरी इन सब नगरों को इन्होंने अपने बाहुबल से जीत लिया। विजयी दयालदास ने इन नगरों को लूटकर वहाँ पर जितनी यवन सेना थी, उनमें से बहुतों को खत्म कर दिया। इस प्रकार बहुत से नगर और गाँव इनके हाथ से उजाड़े गये। इनके भय से नगर निवासी यवन इतने व्याकुल हो गए थे कि किसी को भी अपने बन्धु-बांधव के प्रति प्रेम न रहा। अधिक क्या कहें, वे लोग अपनी प्यारी स्त्री तथा पुत्रों को भी छोड़-2, अपनी-अपनी रक्षा के लिए भागने लगे। जिन सामग्रियों को ले जाने का कोई उपाय उनकी समझ में नहीं आया उन्हें अन्त में अग्नि के हवाले कर चले गए। अत्याचारी औरंगजेब निराश्रित राजपूतों के ऊपर पशुओं के समान आचरण करता था। आज उन लोगों ने ऐसे सुअवसर को पाकर उस दुष्ट को उचित प्रतिफल देने में कुछ भी कसर नहीं छोड़ी। संघवी दयालदास ने हिन्दू धर्म से बैर करने वाले बादशाह के धर्म से भी बदला लिया। क़ाजियों के हाथ पैरों को बांधकर उनकी दाढ़ी-मूँछों को मुंडा दिया और उनके कुरानों को कुएं में फेंक दिया। दयालदास का हृदय इतना कठोर हो गया था कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य अनुसार किसी भी मुसलमान को क्षमा नहीं किया। मुसलमानों के राज्य को एक बार मरूभूमि के समान कर दिया। इस प्रकार देशों को लूटने और पीड़ित करने से जो विपुल धन उन्होंने इकट्ठा किया, उसे अपने स्वामी के धनागार में दे दिया और अपने देश की अनेक प्रकार से वृद्धि की।'

'विजय से उत्साहित तेजस्वी दयालदास ने राजकुमार जयसिंह के साथ मिलकर चित्तौड़ के निकट बादशाह के पुत्र अजीम के साथ भयंकर युद्ध करना आरम्भ किया। इस भयंकर युद्ध में राठौड़ और खींची वीरों की सहायता से वीरवर दयालदास ने अजीम की सेना को परास्त किया। पराजित अजीम प्राण बचाने के लिए रणथंभोर को भागा परन्तु इस नगर में आने के पहले ही उसकी बहुत हानि हो चुकी थी। कारण कि विजयी राजपूतों ने उसका पीछा करके उसकी बहुत सी सेना को खत्म कर दिया। जिस अजीम ने एक वर्ष पूर्व अकस्मात चित्तौड़ नगर को अपने हाथ में कर लिया था, आज उसे उसका उचित फल दिया गया।'

वीर दयालदास ने इन युद्धों के अलावा भी कितने ही युद्ध किए। उनकी बहादुरी और राजनीतिक कुशलता से महाराणा राजसिंह बड़े प्रसन्न रहते थे। इन सिंघवी दयालदास के हस्ताक्षरों का राणा राजसिंह का एक आज्ञापत्र कर्नल टाड ने अंग्रेजी राजस्थान के परिशिष्ट नं. 5 पृष्ठ 697 में अंकित किया है जिसका मतलब इस प्रकार है:-

'महाराणा श्री राजसिंह मेवाड़ के दस हजार गाँवों के सरदार, मंत्री और पटेलों को आज्ञा देता है, सब अपने-अपने पद के अनुसार पढें।

1. प्राचीन काल से जैनियों के मन्दिरों

और स्थानों को अधिकार मिला हुआ है, इस कारण कोई मनुष्य उनकी सीमा में जीव वध न करे। यह उनका पुराना हक है।

2. जो जीव नर हो या मादा, वध होने के अभिप्राय से इनके स्थान से गुजरता है, वह अमर हो जाता है।

3. राजद्रोही, लुटेरे और काराग्रह से भागे हुए महा अपराधी को भी, जो जैनियों के उपासरे में शरण ग्रहण कर लेगा, उसको राज कर्मचारी नहीं पकड़ेंगे।'

4. फसल में कूंची (मुट्ठी), कराना की मुट्ठी, दान की हुई भूमि, धरती और अनेक नगरों में उनके बनाए हुए उपासरे कायम रहेंगे।

5. यह फरमान यति मान की प्रार्थना पर जारी किया गया है, जिसको 15 बीघे धान की भूमि के और 25 बीघे मालेटी के दान किये गये हैं। नीमच और निम्बाहेड़ा के प्रत्येक परगने में भी हरएक जती को इतनी ही पृथ्वी दी गई है। अर्थात् तीनों परगनों में धान के कुल 45 बीघे और मालेटी के 75 बीघे।

इस फरमान को देखते ही पृथ्वी नाप दी जाय और दे दी जाय और कोई मनुष्य जतियों को दुःख नहीं दे, बल्कि उनके अधिकारों की रक्षा करे। उस मनुष्य को धिक्कार है जो उनके अधिकारों का उल्लंघन करता है। हिन्दू को गौ और मुसलमान को सुवर और मुदारी कसम है। संवत् 1749 महा सुदी 5 ई.सं. 1693। शाह दयाल मन्त्री।

इन्हीं दयालदासजी ने राजसमंद के पास वाली पहाड़ी पर एक किलेनुमा श्री आदिनाथजी का भव्य मंदिर बनवाया। भव्य मंदिर की तलहटी में धर्मशाला एवं भोजनशाला संचालित है।

(आधार :- ओसवाल जाति का इतिहास)

उत्सव बना अनमोल

(प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागांव)

धन्य हो गई भूमि बागरा की,
अवसर आया पावन है,
समवसरण सी सजी है नगरी
उत्सव बना अनमोल है।

प्रभुवर के आशीर्वाद से,
गुरुवर के प्रताप से
सकल श्रीसंघ के सहयोग से
उत्सव बना अनमोल है।

जयकारा गूंज रहा है गुरु का
प्रभु पार्श्व के अवतार से,
पाटोत्सव के स्वर्णिम अवसर से
उत्सव बना अनमोल है।

भाग्यशाली हैं हम गुरुवर,
शरण आपकी मिल गई है,
कृपा ऐसी ही रहे बरसती
उत्सव बना अनमोल है।।

अतिथि रचना

घृणा और प्रेम

(आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी)

घृणा और प्रेम में हार-जीत के यथार्थ का ही फर्क है। घृणा से किसी को हराया तो जा सकता है मगर जीता नहीं जा सकता। प्रेम-हेत से, करुणा से किसी को हराया नहीं जाता मगर सहज जीत लिया जाता है। लोग प्रेम को समझने में भूल करते हैं। वे दया को प्रेम समझ लेते हैं। वे समझ नहीं पाते कि दया जिन अर्थों में प्रचलित है, उन अर्थों में प्रेम नहीं है, बल्कि घमण्ड का एक सजा-सजाया श्रृंगारित रूप है, जिसमें शक्कर मिला हुआ घमण्ड भरा रहता है। लोग लाखों रुपया खर्च कर गौशालाएं बनाते हैं, प्रचार करते हैं, दान देते हैं, मगर वे नहीं बता सकते कि उन्होंने किसी एक गाय का दिल जीता है या नहीं जीता है। किसी की सेवा करना आध्यात्मिक या नैतिक अर्थों में बुरा नहीं है मगर यह भी आवश्यक नहीं कि वह प्रेम हो।

अगर आप बर्दाश्त कर सकें तो मैं यह अवश्य पूछूँगा कि अपने यश के लिये अथवा अपने अहम् की संतुष्टिकरण के लिए दूसरे की स्वतंत्र सत्ता में दखल देना क्या प्रेम हो सकता है? हमारी बात पर गौर करने वाले जानते हैं कि इस हिन्दुस्तान में ऐसी जगह भी है , जहाँ तथाकथित धार्मिकों द्वारा गायों को प्रतिक्रमण करवाया जाता है, रात को पानी नहीं दिया जाता। हम पुरजोर शब्दों में कहते हैं कि किसी को बदलने की कोशिश करना, प्रेम देना नहीं है। आग्रह या दबाव प्रेम नहीं हो सकता। प्रेम व्यक्ति की स्वतंत्रता का आदर होता है। प्रेम में टीका-टिप्पणी नहीं होती है, मात्र सहयोग व सद्भावना होती है, एकात्म भाव होता है। वह तो भावना की एक तरंग मात्र है जो सामने वाले को अपनत्व का अहसास देती है, अच्छी लगती है।

अक्सर लोग अपने एकांगी विचारों से अथवा अपने पूर्व संग्रहित विचारों के दबाव में मान्यताएँ गढ़ लेते हैं। यथार्थ में यह मानना व सोचना कि सामने वाले व्यक्ति के लिए 'क्या अच्छा है?' हेत प्रेम है ही नहीं। वह तो अपने हठ व अंधविश्वास की कृत्रिम सुन्दरता से संवारा हुआ मुखौटा है। प्रेम तो मात्र एक भाव है कि बस सामने वाला सुखी हो। हार्दिक प्रेम और नाभिकीय (नाभि से उठने वाली) प्रेम तरंग से सम्पन्न व्यक्ति तो सामने वाले के आनन्द में स्वयं को आनंदित महसूस करता है। यह मानना कि आप व आपकी मान्यता सही है और सामने वाला गलत है, किसी को प्रेम देना है ही नहीं। सूअर को मिष्ठान्न खिलाकर और तोते को रोज ठंडे पानी से नहलाकर सुखी नहीं बनाया जा सकता। आप दया भी करो और बाद में समय-समय पर फूले ना समाओ, गाहे-बगाहे जगह-जगह अपनी दया का बखान करते रहो, तो आप उन्हें प्रेम नहीं दे रहे हैं बल्कि (कठोर शब्द मगर मानसिक सत्य है) आप उनके निजी व्यक्तित्व को लूट रहे डाकू हैं, और उन्हें छोटा बना रहे हैं। अगर हमारी बात में कुछ सार लगे तो चिंतन करना।

सहज आत्मानुभूति से किसी बात की वैज्ञानिक व्याख्या करना ज्ञान हो सकता है। मगर किसी की आलोचना करना, दोष मढ़ना,

शिकायत करना, उलाहने देना, अधिकार जमाना, आग्रह करना, अपनी बात रखने के लिए कसमें खिलवाना, लोभ-लालच देकर अपनी बात मनवाना अथवा अपना मूड ऑफ करना किसी का किसी से हेतमय होना या प्रेम करना कदापि नहीं है। ज्ञानी और प्रेमी परिस्थिति के अनुसार आवश्यक-अनावश्यक की सहज व्याख्या करता है। मगर तथाकथित प्रेमी, प्यार के लुभावने डायलॉग्स और आग्रह के बोझ से दूसरों को दबाने के उपक्रम का पराक्रम करता है। कुछ साधुओं में यह बीमारी खूब पाई जाती है। अनुभव की समझ तो उन्हें होती नहीं, बस जो भी उनके सामने आये, उसे जबर्दस्ती दान, त्याग, प्रत्याख्यान करवाने पर अड़े रहते हैं। नतीजे क्या होते हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। शर्तों और संबंधों की भीड़ में प्रेम मर जाता है। महिमाओं का इतिहास ज़रूर रचा जाता है। जबर्दस्ती के इस हिंसककर्म की यशपूरित चर्चाएं ज़रूर होती हैं कि हमने इतने लोगों को तप करवाया, जयकारे लगवाये, जबर्दस्ती ध्यान करवाया। भले उनमें से दो-चार भावुक व्यक्तियों पर इससे मानसिक रोगों का आक्रमण हो गया हो। कभी प्रश्न भी उठा तो कह दिया गया 'हमने तो धर्म की प्रभावना की है, ये तो कर्मों का खेल है, डॉक्टर से ईलाज करवाओ।'

हकीकत यह है कि हेत-प्रेम जैसे आध्यात्मिक भाव की शक्ति को हम पहचान ही नहीं पाये। प्रेम में तो ज्ञान होता है, प्रेरणा व सद्भाव होता है, उत्साह होता है। उसमें इतनी शक्ति होती है कि प्रेम से निकली दुआ रूग्ण को ठीक कर देती है। प्रेम आनन्द का दान है, सुखों का स्रोत है। अगर आपके तथाकथित प्रेम ने किसी को भ्रमित, चित्त भ्रमित कर दिया तो आपने क्या खाक प्रेम किया?

लोग अपनी मान्यताओं को प्रेम व धर्म का बाना पहनाकर प्रचार के घोड़े पर, शर्तों की लगाम खींचकर कुछ इस प्रकार सवारी करते हैं कि प्रेम, प्रेम न रहकर गेम बन जाता है। आजकल तो जयकारों की भी शर्तें होती हैं कि हमारे गुरु का जयकारा लगना चाहिए, दूसरों का नहीं... वगैरह .... वगैरह...। अब बताओ यह कौन सी दया है? कौन सा प्रेम है? हमने कई जगह जयकारों के विवादों को बड़े निकट से देखा है। इस हद तक बिखराव देखा है कि मामले सीधे कोर्ट-कचहरी तक गए हैं। फिर भी दोनों पक्ष कहते हैं कि हम 'दया धर्म' के रक्षक हैं। दोनों ही पक्ष, प्रतिपक्षी को गलत बताते हैं। कृपया सोचिए- क्या यह दया है? अगर दया शब्द को शुद्ध अर्थों में लिया जाए तो दया संकीर्ण नहीं हो सकती। किसी की स्वतंत्रता में बाधक नहीं हो सकती। किसी को साम-दाम-दंड-भेद से धार्मिक दान और त्याग नहीं करवा सकती। वह तो करुणा का एक भाव है, बहाव है जो दूसरों के सुखों में स्वयं को सुखी अनुभव करवाता है। जो उसे ठीक लगता है, उसका गुणानुवाद करता है, जो उसे ठीक नहीं लगता उस पर प्रतिक्रिया नहीं करता। उस पर दृष्टिपात ही नहीं करता। बहुत सी बातें शाब्दिक व्याख्याओं से नहीं समझाई जा सकतीं। कृपया स्वयं सद्भावपूरित होइये। अनुभव ज्ञान अंदर से ही उठेगा। जय हो!!!

श्रमण भगवान महावीर स्वामी

(श्री जसराज देवड़ा धोका)

जैन धर्म परंपरा के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी से भला कौन अपरिचित होगा? आज से करीब 2614 वर्ष पूर्व जब भारत वर्ष में वर्ण और जाति के नाम पर अंधविश्वास छाया हुआ था, यज्ञ के नाम पर देश का पशुधन नष्ट हो रहा था, हिंसा का तांडव हो रहा था, जन-जन में अज्ञानता फैली हुई थी, ऐसे समय में क्षत्रियकुंड नगर में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन पिता सिद्धार्थ महाराजा की महारानी त्रिशला की कुक्षी से प्रभु महावीर का जन्म हुआ। आपके आगमन के साथ राज्य में असीम समृद्धि होने लगी। समृद्धि के सूचक के रूप में आपका एक नाम वर्द्धमान भी रखा गया। आप बचपन से ही निडर, साहसी एवं विद्याध्ययन में मेधावी थे। संगम देव व अन्य देवों ने अनेक प्रकार से आपकी परीक्षा ली किन्तु सबमें वे खरे उतरे। उनकी प्रतिभाओं को परखकर उन्हें वीर, महावीर तथा सन्मति नाम से संबोधित किया गया।

उम्र में जैसे-जैसे बड़े होने लगे प्रभु महावीर का ध्यान मानव एवं प्राणी मात्र के कल्याण की दिशा में उन्मुख होने लगा। सब प्रकार की सम्पन्नता होते हुए भी आप संसार के कार्यों से विरक्त रहने लगे। माता-पिता के बहुत आग्रह करने से उन्होंने अपने विवाह की स्वीकृति दे दी। यशोदा नामक राजकुमारी से उनका विवाह हुआ। एक पुत्री भी हुई जिसका नाम प्रियदर्शना था। जमाई का नाम जमाली था। अपने ज्येष्ठ भ्राता नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर अपनी प्रबल इच्छानुसार 30 वर्ष की युवा अवस्था में ही वे दीक्षित हो गए। प्रभु महावीर ने असीम जनसमूह के समक्ष प्रतिज्ञा की कि सभी पापकर्म मेरे लिए अकरणीय होंगे तथा 'करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चखामि' आज से सम्पूर्ण सावधि कर्म का तीन करण और तीन योग से मैं त्याग करता हूँ। असीम वैभवी जीवन को त्यागकर प्रभु महावीर स्वामी कठोरतम साधना में संलग्न रहने लगे। 12 वर्ष 6 माह 15 दिन के छद्मस्थ साधना काल में प्रभु ने घोर तपस्या की। ग्वाले, चंडकौशिक सर्प, संगमदेव, शूलपाणि यक्ष, कटपूतना व्यंतरी आदि के द्वारा दिए गए महान उपसर्ग प्रभु ने समतापूर्वक सहन किए।

प्रभु महावीर स्वामी को जृंभक ग्राम के बाहर रिजुबालिका नदी के किनारे एक शालवृक्ष के तले वैशाख शुक्ला दशमी को गोदूहासन में केवल ज्ञान हुआ। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर जन कल्याण की भावना से सब जगह विचरण करते हुए उद्‌बोधन देने लगे। पाँच महाव्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य)

के महत्व को समझाते हुए इन्हें अपने जीवन में उतारने की शिक्षा जनसामान्य को देने लगे। उनके उपदेशों का जनजीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। आपने वैशाख शुक्ला एकादशी को चतुर्विध संघ (साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका) रूप में तीर्थ की स्थापना की थी। इसके प्रथम साधु गौतम स्वामी, प्रथम साध्वी चंदनबाला, प्रथम श्रावक शंख और प्रथम श्राविका सुलसा थी।

मातृशक्ति-नारी जाति का सम्मान

उस युग में स्त्रियों और लड़कियों को बाजार में खरीदा और बेचा जाता था। प्रभु महावीर स्वामी ने इसका घोर विरोध किया। धर्म संघ की सर्वप्रथम दीक्षित साध्वी चन्दनबाला का उदाहरण भी उस समय प्रचलित इस कुव्यवस्था का प्रत्यक्ष प्रमाण है। महावीर के धनाढ्य शिष्य शालीभद्र की माताजी-राजगृह नगरी की बड़ी व्यापारी थी। उनकी सम्पत्ति मगध सम्राट से बढ़कर थी। महावीर की शिष्या मृगावती ने अपने पति शतानिक की मृत्यु के बाद स्वयं राज्य संभाला था। दुनियां के कई हिस्सों में नारी आज भी प्रताड़ित है। भगवान महावीर से मिली विरासत के 2600 वर्ष बाद भी यह स्थिति है। भगवान महावीर ने कहा था 'एगा मनुष्य जाइ।' मनुष्य जाति एक है। सबको जीवन विकास के लिए धर्म साधना के लिए पूर्ण स्वतंत्रता है।

जीवन पर्यन्त जन-जन और जीवमात्र के कल्याण के उद्देश्य से धर्म प्रभावना करते हुए बहत्तर वर्ष की आयु में सोलह प्रहर की अखण्ड देशना में सुख-दुःख विपाक एवं उत्तराध्ययन सूत्र फरमाते हुए पावापुरी में स्वाति नक्षत्र में प्रभु निर्वाण पद को उपलब्ध हुए।

वर्धमान (महावीर स्वामी) के इस अमूल्य उवाच को वर्तमान जीवन में पालन करने की हम सबको नितान्त आवश्यकता है। उनकी सीख जीवन में लोक-परलोक दोनों के निःश्रेयस के लिए, दोनों के कल्याण के लिए है। जीवन का कहीं विराम नहीं। क्योंकि इस लोक में तो जीते ही हैं, परलोक में भी जीना है। अगर यह लोक सुन्दर नहीं हुआ तो परलोक कैसे सुन्दर होगा?

घर की शान्ति के लिए करें ये प्रयास....

1. वक्त बेवक्त चिल्लाएँ नहीं । 2. जानवरों एवं नौकरों से प्रेमपूर्ण बर्ताव करना और उनसे भी अच्छा बर्ताव अपने साथियों से करना । 3. अपनी गलती स्वीकार करने की कोशिश करें । 4. किसी को दबाने की कोशिश न करें । 5. एक-दूसरे की बुराई न करें । 6. सबकी भावनाओं की कद्र करें । 7. सबकी योग्यता एवं प्रतिभा को प्रोत्साहन दें । 8. गुस्से में जवाब नहीं दें । 9. क्रोध में किसी को गलती न बताएं, बल्कि अकेले में प्रेम से बताएँ । 10. आज का झगड़ा कल तक न चलाएँ ।

नर-नारी के भेद से दुनिया दंग

श्री विजयसिंह लोढ़ा
'विजय'
निम्बाहेड़ा (राज.)

भ्रूण हत्यारों! कान खोल सुनो, ध्यान से सभी।
बेटी के हत्यारों! शांति नहीं मिलेगी, तुम्हें कभी।
बेटे की चाह में, बेटी के खून से जो हाथ लिए रंग
'विजय' नर-नारी के भेद से दुनिया हो गई दंग।

जानो- समझो

अगर बेटा गीत है तो बेटी संगीत है।
अगर बेटा शब्द है तो बेटी अर्थ है।।

अगर बेटा शान है तो बेटी जान है।
अगर बेटा भाग्य है तो बेटी भाग्य विधाता।।

अगर बेटा हिमालय है तो बेटी गंगा है।
अगर बेटा मन्नत है तो बेटी जन्नत है।।

अगर बेटा वारिस है तो बेटी पारस है।
अगर बेटा ज्ञान है तो बेटी गुमान है।।

अगर बेटा भगवान है तो बेटी पूजा है।
अगर बेटा मंजिल है तो बेटी नींव है।।

अगर बेटा काजू है तो बेटी दाख है ।
अगर बेटा फूल है तो बेटी सुगंध है।।

अगर बेटा वंश है तो बेटी अंश है।
अगर बेटा दवा है तो बेटी दुआ है।।

अगर बेटा आग है तो बेटी बाग है।
अगर बेटा संस्कार है तो बेटी संस्कृति है।।

माता वामादेवी

ईसा से लगभग 850 वर्ष पूर्व भी वाराणसी नगरी संसार भर में विख्यात थी। 'वामादेवी' इसी वाराणसी के महाराज अश्वसेन की महारानी का नाम था। माता वामादेवी ने पौष कृष्णा दशमी के दिन एक ऐसे तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया जो आगे चलकर जैनधर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यह पुण्यमयी माता जब सगर्भा थी तो उसने अंधेरे में ही महाराज अश्वसेन के पार्श्व (पास) से निकलते हुए सर्प को देख लिया था और महाराज को सावधान कर उनकी रक्षा की थी। इसी आश्चर्यजनक घटना के आधार पर ही माता ने पुत्र का नाम 'पार्श्वनाथ' (परिवेश या आसपास के वातावरण के नाथ या रक्षक) रखा था।

माता वामादेवी श्रद्धामयी महिला थी। समय-समय पर तपस्वियों के दर्शनार्थ जाया करती थीं। कुमार पार्श्वनाथ भी उन्हीं के कदमों पर चले। माता उन्हें प्रोत्साहित करती रहीं।

पुत्र के अभिनिष्क्रमण के अनन्तर माता वामादेवी ने पुत्र से भी अधिक अपनी पुत्रवधु प्रभावती को स्नेह देकर एक आदर्श सास होने का निदर्शन उपस्थित किया।

वह दिन इतिहास में सदा स्मरणीय बन गया जब 83 दिन की कठिन तपस्या के अनन्तर भगवान् पार्श्वनाथ वाराणसी के आश्रमपद उद्यान में पधारे और वहाँ उन्हें 84 वें दिन केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। उनकी प्रथम उपदेश धारा में अवगाहन का अवसर मिला। इसके पश्चात् भगवान पार्श्वनाथ महाराज के साथ कमठ नामक उस तपस्वी के पास पहुंचे थे जो पंचाग्नि तप कर रहा था। उसकी धूनी में लगे लक्कड़ के नीचे नाग-नागिन का दम घुट रहा था। श्री पार्श्वनाथजी ने उनका उद्धार किया था।

वीरमाता वामादेवी का क्षत्रियोचित धैर्य उस समय विशेष रूप से दृष्टव्य था जब उन्होंने कलिंग नरेश यवनराज के आक्रमण से कुशस्थल नरेश प्रसेनजीत की रक्षा के लिए अपने वीर पुत्र कुमार पार्श्व को सोत्साह भेजा था।

माता वामादेवी के लिए वह भी एक कठिन परीक्षा की घड़ी थी, जब मात्र 30 वर्ष की अवस्था में ही उनके पुत्र ने वैराग्य पथ अपनाने की इच्छा व्यक्त की और धर्ममूर्ति माता ने धर्म मार्ग में आत्म कल्याण के मार्ग में बढ़ने का आशीर्वाद अपने पुत्र को दिया।

दानशीला माता वामादेवी अपने पुत्र के वर्षीदान के समय उसकी प्रेरणा शक्ति बनीं। अश्वसेन ने पुत्र को ही भगवान मानकर उनसे दीक्षा धारण की। अपने पति को भी साधना पथ पर जाते हुए देखकर माता वामादेवी का हृदय शोक से नहीं भरा बल्कि दिव्य ज्ञानालोक से आलोकित हो उठा और उन्होंने भी अपनी पुत्रवधु प्रभावती के साथ दीक्षित होकर संसार को चकित कर दिया।

भगवान श्री पार्श्वनाथ की 38000 साध्वियों की प्रमुखा का उन्हें स्थान प्राप्त हुआ। उनकी निश्रा में ही 38 हजार साध्वियों ने अपना साधना पथ प्रशस्त किया।

युग पुरुष पू. आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.

(डॉ. श्री प्रदीप संघवी)

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने 11 फरवरी 2016 को अपने संयम जीवन के 63 वर्ष पूर्ण किए। उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्यश्री ने मात्र 17 वर्ष की आयु में ही पूज्य आचार्य श्रीमद् यतीन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में संयम अंगीकार कर लिया था। आचार्यश्री के संयम जीवन के 63 वर्षों के सफर में कसौटियों का सैलाब आया, जिनमें हर बार खरे उतरे। निखर-निखर कर पू. आचार्य श्री ने ढेरों-ढेर रत्नसार इस जगत को दिए। आचार्यश्री के जीवन में आज भी वैसी ही पूर्वसी सजगता और परिश्रमशीलता परिलक्षित होती है। यही कारण है कि आचार्यश्री हर वक्त अपने भक्तों से घिरे रहते हैं।

विशाल गच्छ की अनगिनत जिम्मेदारियों का संपादन आचार्यश्री ने किया है। इन जिम्मेदारियों के निर्वहन के बीच आचार्यश्री को वाचना का समय तक नहीं मिल पाता है। आचार्यश्री का चलना, उठना, बैठना, बोलना और हर एक आचरण ही जैसे वाचना प्रदान करता है। उनके मुख से निकले एक-एक शब्द और एक-एक वाक्य रचना जैसे एक-एक ग्रंथ का सृजन कर जाते हैं। सामान्य चर्चाओं में भी पराकाष्ठा का 'तत्व चिंतन' वे परोस जाते हैं।

आचार्यश्री ने अपने सम्पूर्ण संयम जीवन में 2 लाख किलोमीटर से अधिक दूरी पैदल विहार कर भगवान महावीर स्वामी की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम कार्य किया है। आचार्य श्री की अत्यधिक ज्ञानरुचि, अत्यन्त सरलता और अपने दोषों की निःसंकोच स्वीकृति उनकी विशेषता है। आचार्य श्री की प्रेरणा से इस सम्पूर्ण संयम काल में चिकित्सालय, स्कूल, धार्मिक पाठशालाएं खोली गईं ताकि भावी पीढ़ियां संस्कारित हो सके।

अपने प्रवचनों के माध्यम से आपने हजारों व्यक्तियों को मांसाहार एवं अन्य कुव्यसनों को त्यागने हेतु प्रेरित किया। आचार्यश्री ने 100 से अधिक पुस्तकों का संपादन किया। अपने चिंतन को हमेशा व्यक्ति के जीवन पर केन्द्रित किया है। जीवन मूल्यों के प्रति सचेत करने, सभी की आँखें खोलने, जागृत करने, जीवन के रहस्यों की परतों की थाह लेने वाले युग पुरुष को यदि खोजा जायेगा तो हमारे आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी का नाम सबसे ऊपर होगा। केवल भारत ही नहीं विदेशों में भी भारतीय संस्कृति के प्रचार में आपकी प्रेरणा रही है। क्षण-क्षण प्रतिक्षण जागरूक रहने वाले आचार्य श्री के गुणों का अंश भी यदि हमें प्राप्त हो जाए तो आत्मकल्याण के लिए यह हमारी बड़ी उपलब्धि होगी, इसी भावना के साथ।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

(संकलन-मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी)

1. 1 से 100 के बीच 9 का अंक कितनी बार आता है? (उत्तर-21)
2. लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के पूर्व देश का प्रधानमंत्री कौन था? (उत्तर-लालबहादुर शास्त्री)
3. यदि गाय उत्तर की ओर मुँह करके खड़ी है तो उसकी पूँछ का रूख किस ओर होगा? (उत्तर-जमीन की ओर)
4. सत्तर में क्या जोड़ें कि वह 17 हो जाए? (उत्तर- ह या आ की मात्रा)
5. वह है जो सफेद रहने पर गंदा और काला रहने पर साफ समझा जाता है? (उत्तर-ब्लेकबोर्ड)
6. ऐसी कौनसी कन्या है जिसकी शादी करना असंभव है? (उत्तर-कन्याकुमारी)
7. वह कौन सा महल है जो महल नहीं है? (उत्तर-ताजमहल)
8. एक ऐसा फूल जिसमें हँसी का खजाना छुपा है? (उत्तर-अप्रैल फूल)
9. ऐसा कौन सा गेट है जिसके अंदर कोई नहीं जा सकता? (उत्तर-कोलगेट)
10. ऐसा कौन सा राईटर है जो स्वयं कुछ नहीं लिख सकता? (उत्तर-टाईपराईटर)

नवकार महामंत्र में ...

नवकार मंत्र में कितने अक्षर हैं	:	68
मंत्र में अनुस्वार कितने	:	13
मंत्र में पद कितने	:	9
मंत्र में संपदा कितने	:	8
मंत्र में स्वर कितने	:	6
मंत्र में व्यंजन कितने	:	62
मंत्र में गुरु अक्षर कितने	:	7
मंत्र में लघु अक्षर कितने	:	61
मंत्र कितने पूर्व का सार	:	14
मंत्र में किन्हें नमस्कार है	:	पंच परमेष्ठि को
मंत्र में पाँच परमेष्ठि के गुण कितने	:	108

सूत्र और उनके दूसरे प्रचलित नाम

नवकार मंत्र	:	पंचमंगल महाश्रुत स्कंध, पंच परमेष्ठि सूत्र
पंचिंदिय	:	गुरुस्थापना सूत्र
खमासमण	:	पंचांग प्रणिपात सूत्र
ईरियावहियं सूत्र	:	लघु प्रतिक्रमण, प्रायश्चित सूत्र, प्रतिक्रमण श्रुतस्कंध
इच्छकार	:	सुख शाता पूछने का सूत्र
जगचिंतामणि	:	चैत्यवंदन सूत्र
लोगस्स	:	नामस्तव सूत्र
करेमि भंते	:	प्रतिज्ञा सूत्र
सामाईय वयजुत्तो	:	सामायिक पारने का सूत्र
नाणम्मी	:	पंचाचार की 8 गाथा
नमुत्थुणं	:	शक्रस्तव सूत्र
पुक्खरवरदीवड्ढे	:	श्रुतस्तव सूत्र
जयवीयराय	:	प्रार्थना सूत्र

शाश्वत धर्म-सुडोकु ज्ञानायतन-1, पद : ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं

न		ता	रि			हं		मो
	मो		णं		ॐ			ता
		णं		मो				
ता			अ			ॐ		रि
	णं			ता			मो	
ॐ		हं			ह्रीं			न
	रि			णं		ता		
अ			ह्रीं		मो		हं	
णं		ॐ			रि			ह्रीं

-संकलनः मुनि श्री जिनागमरत्नविजय जी

अबाधित साधना करें तीनों वर्ग-धर्म, अर्थ और काम की

(श्री शांतिलाल जी सगरावत, मन्दसौर)

'अन्योऽन्याप्रतिबन्धेन, त्रिवर्गमपि साधयन्।'

धर्म, अर्थ और काम इन तीन वर्गों का परस्पर अबाध रूप से अपनी शक्ति अनुसार अतिथि, साधु और दीन-दुःखियों की सेवा करने वाला साधक व्यक्ति गृहस्थ धर्म (देशविरति चारित्र) पालन करने योग्य गृहस्थ धर्माधिकारी बन सकता है।

जिससे अभ्युदय हो और मोक्ष की सिद्धि हो, वह धर्म है, जिससे लौकिक सर्व-प्रयोजन सिद्ध होते हों, वह अर्थ है और अभिमान से उत्पन्न, इंद्रियों व इनसे संबंधित सभी सुखों से रसयुक्त प्रीति, वह काम है। सद्गृहस्थ को इन तीनों वर्ग की साधना इस प्रकार करना चाहिए कि ये तीनों वर्ग एकदूसरे के परस्पर बाधक न बनें, परन्तु तीनों में केवल किसी एक की या किन्हीं दो की साधना करना उचित नहीं है।

नीतिकार का भी कहना है कि धर्म, अर्थ और काम इन तीन वर्गों की परस्पर अविरोधी-रूप साधना किये बिना जिसका दिन व्यतीत होता है, वह पुरुष लोहार की धौंकनी के समान श्वास लेते हुए भी जीवित नहीं है। यदि कोई इन त्रिवर्ग की अपेक्षा करके तत्वहीन सांसारिक विषय सुखों में लुब्ध बनता है, तो वह जंगली हाथी के समान आफत का शिकार बनता है। जो धर्म और अर्थ से उदासीन होकर केवल विषय भोगों में ही आसक्त रहेगा; वह धर्म, अर्थ और शरीर तीनों को खोकर पराधीन और दुःखी हो जाएगा। इसी प्रकार जो धर्म और काम का अतिक्रमण करके केवल अर्थोपार्जन में ही लगा रहता है, वह भी जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त करने से वंचित रहकर, मानसिक अशांति को प्राप्त करता है।

धर्म, अर्थ और काम में से प्रत्येक के एकांत सेवी गृहस्थ तादात्विक, मूलहर और कदर्प के समान अपने जीवन के विकास में स्वयं रुकावट डालते हैं। बिना सोचे-विचारे जो उपार्जित धन खर्च कर देता है उसे **तादात्मिक** कहा जाता है। बाप दादाओं से या पूर्वजों से प्राप्त धन का अनीतिपूर्वक उपयोग कर उसे खत्म कर देने वाला **मूलहर** कहलाता है। इसी तरह नौकरों और स्वयं को परेशान करके जो धन इकट्ठा करता है और एकत्रित धन का सदुपयोग नहीं करता, वह **कदर्प** कहलाता है।

गृहस्थ को त्रिवर्ग के अबाधित रूप से सेवन में अंतराय नहीं डालना चाहिये। किसी भी पुरुषार्थ के सेवन में बाधा उपस्थित हो जाये तो पूर्व की पुरुषार्थयुक्त बाधा से रक्षा करना चाहिए। यदि काम में बाधा उपस्थित हो तो धर्म और अर्थ से बाधा की रक्षा करना चाहिये। क्योंकि धर्म और अर्थ के होने पर काम की प्राप्ति भी आसानी से हो सकती है। काम और अर्थ में बाधा आये तो धर्म की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि अर्थ और काम का मूल धर्म है। वास्तव में सज्जन धर्मरूपी धन से ही धनाढ्य होते हैं।

JATF www.jitoatf.org

जीतो ॲडमिनिस्ट्रेटिव्ह ट्रेनिंग फाउंडेशन

Shaping the future of India

मेधावी स्नातकों के लिए प्रदान कर रहा है

एक सुनहरा अवसर....!

1 **IAS/IPS/IFS/IRS और राज्य सेवा अधिकारी**

ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन के लिए अंतिम तारीख : 15 मई 2016

लिखित सी.ई.टी. परीक्षा : 29 मई 2016

2 **Bank P.O. अधिकारी (IBPS / SBI / RBI etc.)**

ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन के लिए अंतिम तारीख : 31 मार्च 2016

सुविधाएँ		पात्रता	प्रशिक्षण केंद्र	
* रियायिति दर में उत्तम कोचिंग	* नि:शुल्क भोजन और आवास व्यवस्था	* किसी भी संकाय से स्नातक या स्नातकोत्तर	* दिल्ली	* पुणे
* परीक्षा हेतु प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण	* सुसज्ज साधनों से परिपूर्ण केंद्र	* उम्र : 21 से 30 वर्ष	* चेन्नई	* इंदौर
* अधिकारियों और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन	* उपयुक्त ग्रंथालय और अधिक सुविधाएँ...		* जयपुर	

ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन के लिए वेबसाईट : www.jitoatf.org/www.jatfadmission.org

B-101, 1st Floor, Business Square at Solitaire Park, Opp. Apple Heritage & Bank of Baroda, Andheri Kurla Road, Andheri-East, Mumbai-400 093, Tel : 022-40233001/2

संपर्क : नलिनी राठोड़ 09423585832 ☎ : 020-24465832 विवेक जैन 09414044519

अनिल जैन 09999071711 ☎ : 011-69000081/82/83

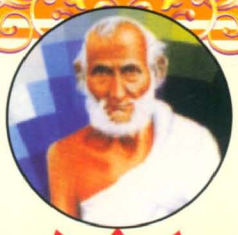

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

શ્રમણ નહીં તો શ્રાવક બનીએ...
સહુ ચાલો પૌષધ કરીએ

શ્રી લક્ષ્મીવલ્લભ પાર્શ્વનાથ દાદાની છત્રછાયામાં
સમર્થ ગુરૂ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ
ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત
વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી
મ.સા. ની પાવનકારી નિશ્રામાં
ભીનમાલ નગરે
શ્રી ૭૨ જિનાલય તીર્થે
૭૨ જિનાલયમાં.... ૭૨ પ્રહરી પૌષધ
સંસારી જીવનમાં પણ સંયમી જીવન નો સ્વાદ
એટલે
પૌષધ
તા. ૧૪-૪-૨૦૧૬ થી તા. ૨૨-૪-૨૦૧૬ સુધી
-: સંપક :-
પક્ષાલ કોરડીયા
મો. ૦૯૦૩૩૪૭૬૮૪૨

સંપૂર્ણ ભારતના અદ્વિતિય જિનાલય..
શ્રી ૭૨ જિનાલય તીર્થ ખાતે શ્રી નવપદ ઓળી આરાધના... મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪ અને ચાતુર્માસ ઘોષણાના પુલકિત અવસરની ઉજવણીના અવસરથી શ્રી ભીનમાલ નગરની ધન્યધરા હરખાઈ ઉઠશે..

- **શ્રી નવપદ ઓળી આરાધના**
  પ્રારંભ : સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૮ ગુરૂવાર તા. ૧૪-૪-૧૬
  સમાપન : સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૧૫ શુક્રવાર તા. ૨૨-૪-૧૬
- **મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪**
  તા. ૨૪-૪-૨૦૧૬ થી તા. ૩૦-૪-૨૦૧૬
- **ચાતુર્માસ ઘોષણા તા. ૨૨-૪-૨૦૧૬**

-: પાવન નિશ્રા :-

સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ, યુગ પ્રભાવક ૭૨ જિનાલય ના પ્રતિષ્ઠાચાર્ય, શ્રી નવકાર ૬૮ અક્ષર તીર્થધામ પ્રેરણાદાતા પરમપૂજ્ય વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., પૂજ્ય વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ વિશાળ શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદ

-: આયોજક :-

સંઘવી સુમેરલાલ હજારીમલજી લુંકડ પરિવાર

-: શુભ સ્થળ :-

શ્રી લક્ષ્મીવલ્લભ પાર્શ્વનાથ ૭૨ જિનાલયતીર્થ
જાલોર રોડ, મુ.પો. ભીનમાલ. જિલ્લા જાલોર (રાજ.) ૩૪૩૦૨૯
ફોન : (૦૨૬૯૬) ૨૨૨૫૪૬-૨૯૧૧૭૨

રાજસ્થાન વિહાર યાત્રા...

ઉગ્ર વિહારી સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના પાવન પગલે... નગરી... નગરી... ધ્વારે... ધ્વારે... હર્ષના તોરણીયા

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી, બહુ દીક્ષાના દાનેશ્વરી લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, ઉગ્ર વિહારી, સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના પાવન પગલે નગરી-નગરી, ધ્વારે-ધ્વારે હર્ષના તોરણીયા રચાયાં હતાં. અને ઢોલ-ધમાકાથી રાજસ્થાન-જાલોર જિલ્લાની ધન્યધરા જય જયકારના બુલંદ નારાઓથી ગુંજી ઉઠી હતી.

તટસ્થ મનોબળના સ્વામી અતિ ઉગ્ર વિહારી નામથી પ્રસિધ્ધ એવા પૂજ્યશ્રીએ ગત તા. ૨૦-૧-૨૦૧૬ ના રોજ પાલીતાણા ખાતેથી વિહારી કરી તા. ૧૦-૨-૨૦૧૬ ના રોજ મંગલ પ્રભાતે શ્રમણ સમુદાય અને શ્રમણીવૃંદ સાથે હજ્જારો ભક્તોની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે રાજસ્થાનની ધન્યધરા વાગરા નગરે પધરામણી કરી હતી અને રંગે-ચંગે વાજતે-ગાજતે ધામધૂમ પૂર્વક ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયાથી ઐતિહાસિક નગર પ્રવેશ કર્યો હતો.

વાગરાનગરની વૈભવી વસુંધરા પર શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ જિનાલય શતાબ્દી મહાશતકોત્સવમાં શુભંકરી નિશ્રા પ્રદાન કરી શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ પંચધાતુ પ્રતિમાને અંજનશલાકા, ધ્વજારોહણ, સંયમોત્સવ, પાટોત્સવ સહિત એકાદશાન્હિકા મહોત્સવ સંપન્ન કરાવી તા. ૨૪-૨-૨૦૧૬ ના રોજથી ગામો-ગામ નગરો-નગર પધરામણી કરવા વિહાર યાત્રાનો પ્રારંભ કર્યો હતો. સીયાણા, આકોલી, સરત, મોદરા, બોરટા, ૬૮ જિનાલય, ધાણસા, થલવાડ, પાંથેડી, ઉન્નડી, પોષાણા, સુરાણા, દાધાલ, વાગોડા વિગેરે ગામો-નગરોમાં પધરામણી કરતાં ધ્વારે ધ્વારે હર્ષના તોરણીયાં રચાયાં હતાં. દરેક સ્થળે ગહુલીઓ અને ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે વાજતે-ગાજતે નગર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. તા. ૧૭-૩-૨૦૧૬ ના રોજ ધુમડીયા ખાતે પ્રવેશ કર્યો હતો.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના પાવન પગલે ધન્ય બન્યું ધુમડિયા નગર

તા. ૧૭-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારનો ધુમડિયા નગરે શ્રી જૈન શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક ત્રિસ્તતિક સંઘ ધુમડિયા દ્વારા નગરના મુખ્ય દ્વારેથી ભવ્યાતિભવ્ય નગર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. ત્યારબાદ ત્યાંથી શોભાયાત્રાનો પ્રારંભ થયો હતો. આ શોભાયાત્રા વાજતે-ગાજતે નગરના મુખ્ય માર્ગો પર ફરી શ્રી શીતલનાથ ભગવાનના જિનાલયે પહોંચી હતી ત્યાં પરમાત્માના દર્શન કરી શોભાયાત્રા જિનાલય નજીક ધર્મશાળામાં પહોંચી હતી ત્યાં શોભાયાત્રા ધર્મસભા રૂપમાં પરિવર્તન પામી હતી. અહીં પૂજ્યશ્રીએ મંગલાચરણ સંભળાવી તેમના પ્રવચનમાં માનવ જીવનના મહત્વ પર સાર ગર્ભિતિ સમજણ આપી હતી. પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાથી ભવ્ય શિખર યુક્ત જિનાલયનું નિર્માણ કરાવવાનો નિર્ણય લેવાયો હતો.

ધુમડિયાનગરમાં કેટલાય દશકાથી શ્રાવકોના મનમાં કડવાશ ઉભી થઈ હતી. તેનો ખાત્મો બોલાવી પૂજ્યશ્રીએ દરેક કડવાશોને દુર કરી એકતા સ્થાપિત કરાવી હતી સંઘમાં એકતાનું બ્યુગલ ફુંકાતા ધુમડિયાનગર અને આજુબાજુના સંઘોમાં હર્ષની લાગણી ફેલાઈ ગઈ હતી અને ખુશીનો માહોલ રચાઈ ગયો હતો. એકતાના આ વાતાવરણથી શ્રધ્ધાળુ ગુરૂભક્તોએ સંઘ એકતાના શિલ્પી પૂજ્યશ્રીનો જય-જયકાર કરી ભારે ઉત્સાહ બતાવ્યો હતો.

આ અવસરે બેંગલોર, દિલ્હી, મુંબઈ, અમદાવાદ, બિજાપુર, સેલમ વિગેરે સ્થળોએથી ધુમડિયા નિવાસીઓ આવી પહોંચ્યા હતા.

ભાંડવપુર તીર્થમાં પૂજયશ્રી સપરિવારનો વાજતે-ગાજતે ભવ્યાતિભવ્ય પ્રવેશ

અતિ પ્રાચીન મહાતીર્થ ભાંડવપુર ખાતે સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની તા. ૧૯-૩-૨૦૧૬ ના રોજ પાવન પધરામણી થતાં ભાંડવપુર તીર્થ ટ્રસ્ટી મંડળ સહિત આસપાસના સંઘોમાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાઈ ગયો હતો અને આનંદોલ્લાસની લાગણી ફેલાઈ ગઈ હતી.

તીર્થ પ્રેરક મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. તથા મુનિરાજશ્રી અશોકવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી આનંદવિજયજી મ.સા. ના માર્ગદર્શન મુજબ પૂજ્યશ્રીની ભાંડવપુર તીર્થમાં પધરામણી અંગે જિનાલયને રંગબેરંગી રોશની અને ફુલોની સજાવટ દ્વારા શણગારવામાં આવ્યું હતું. ભાંડવપુરતીર્થને નવી દુલ્હન રીતે સજાવવામાં આવ્યું હતું.

પ્રવચનકાર મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા ની નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ સુદ-૧૧ ને શનિવાર તા. ૧૯-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે બેંડવાજા-ઢોલ ધમાકા અને મહિલાઓના મંગલ ગીત સાથે પૂજ્યશ્રી સપરિવારનો ધામધૂમ પૂર્વક સામૈયું કરી તીર્થમાં પ્રવેશ કરાવાયો હતો.

પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાએ ૨૬૦૦ વર્ષ પ્રાચીન શ્રી મહાવીર સ્વામી આદિ જિનબિંબોના અને ગુરૂવર્યોના દર્શન-વંદન કર્યા હતા. ત્યારબાદ ધર્મસભાને સંબોધિત કરી મુનિરાજ શ્રી જયરત્ન વિજયજી મ.સા. એ જણાવ્યું હતું કે જાલોર જીલ્લાના ભ્રમણ અંતર્ગત પૂજ્યશ્રી, મુનિવૃંદ, સાધ્વીજીવૃંદ સહિત ધુમડિયા-બાગોડા વિગેરે સ્થળોએ પધરામણી કરી તા. ૧૯-૩-૨૦૧૬ ના રોજ ભાંડવપુરમાં પ્રવેશ કર્યો છે તા. ૨૪-૩-૨૦૧૬ સુધી પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંત ભાંડવપુર તીર્થમાં જ બિરાજમાન રહેશે.

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ તેમના પ્રવચનમાં ફરમાવ્યું હતું કે જરૂરિયાત કરતાં અધિક ધન નો સંગ્રહ કરવો પાપ છે.

કડી મહેનતથી કમાયેલ ધન ને વ્યર્થમાં નહીં ખરચવું જોઈએ. માણસે ધનનો વ્યય પરમાર્થ માટે વિવેક પૂર્વક ખર્ચ કરી પુણ્યના રસ્તે ચાલવું જોઈએ. વધુમાં કહ્યું કે ભાવના સાથે ભગવાનની ભક્તિ થી જીવ માત્રનું કલ્યાણ થાય છે. માનવ પાસે વિશાળ બુધ્ધિ છે જેનો ઉપયોગ કરી માનવ લાંબી ઉંચાઈઓને

સહજતાથી પાર કરી લે છે. પ્રેમ થી માનવ દરેક મુશ્કીલ ને આસાન બનાવી દે છે. જીવમાત્રના કલ્યાણની ભાવના રાખી હિંસા થી દૂર રહેવાની શિખામણ આપી હતી.

શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ જીર્ણોધ્ધાર અંતર્ગત નૂતન નિર્મિત વર્ધમાન રાજેન્દ્ર જૈન સભા ભવનનો શુભારંભ પણ કરાયો હતો. આ પ્રસંગે આસપાસના ગામોના શ્રાવક-શ્રાવિકા અને ટ્રસ્ટી મંડળના દરેક સદસ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

ભાંડવપુર તીર્થમાં પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશ નિમિત્તે ભવ્ય આકર્ષણ

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ભાંડવપુર તીર્થ ખાતેના પ્રવેશ સમયે ઢોલ-ધમાકા અને બેંડવાજાની ધૂન પર યુવક-યુવતીઓ નાચી કુદી રહ્યાં હતાં. મહિલાઓ મંગલ ગીતો ગાઈ રહી હતી. બાલિકાઓ માથા પર કળશ ધારણ કરી સામૈયું કરી રહી હતી.

આ સમયે ગૈર નૃત્ય એ ભવ્ય આકર્ષણ જમાવ્યું હતું. બિજલી ગામેથી આવેલ ગૈર ના ગૈરિયા ધ્વારા કરેલા નૃત્યથી લોકો પ્રભાવિત બની ગયા હતા અને વિશેષ આકર્ષણ નું કેન્દ્ર બન્યું હતું.

પૂજ્યશ્રીએ એક કલાક સુધીનો જાપ કર્યા

સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ભાંડવપુર તીર્થમાં બિરાજમાન હતા ત્યારે પાટગાદિથી મંડિત ભાંડવપુરતીર્થમાં સવારે પગે ચાલીને પાવન ભૂમિનો સ્પર્શ કરી શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલયમાં પૂજ્યશ્રીએ લગભગ એક કલાક સુધીનો જાપ કર્યો હતો. ત્યારબાદ યાત્રિક ભવન (ચેન્નઈ-વિજયવાડા) નૂતન ભોજનશાળા, વર્ધમાન રાજેન્દ્ર જૈન સભા ભવન સહિત પુરા તીર્થ સ્થળનું મુનિરાજ શ્રી જયરત્ન વિજયજી આદિઠાણા સાથે અવલોકન કરી પગલાં પણ કર્યા આ સમયે સમસ્ત મુનિમંડળ પૂજ્યશ્રી સાથે હતું.

ભાંડવપુર તીર્થમાં માળવાના રતલામ અને નિમ્હાહેડા બે સંઘોનું મિલન થયું જે સંયોગની વાત હતી કે બન્ને સંઘોએ જોર જોરથી જય જયકાર કરી પૂજ્યશ્રીને આગામી ચાતુર્માસ માટે વિનંતી કરી હતી. આલાસન શ્રી સંઘના સભ્યોએ પૂજ્યશ્રીને આલાસન પધારવા વિનંતી કરી હતી. થરાદ સંઘના સભ્યો સાથે સાથે સાંચોર શ્રી સંઘ અને જાવરા નગરપાલિકા અધ્યક્ષ અનિલજી દસેડા વિગેરેએ દર્શન-વંદન કરી આશિર્વાદ લીધા હતા.

બ્રજેશ બોહરા

ભાંડવપુર પ્રવેશ તસ્વીરી ઝલક

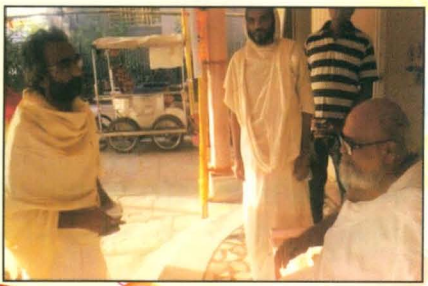

ભાંડવપુર પ્રવેશ તસ્વીરી ઝલક

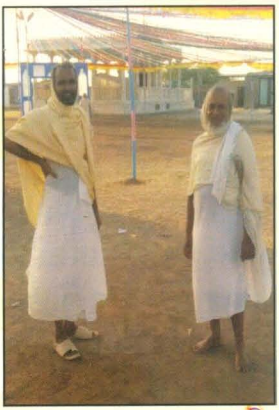

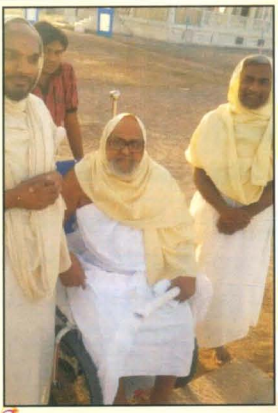

પૂજ્યશ્રીનો લોચ કાર્યક્રમ સંપન્ન

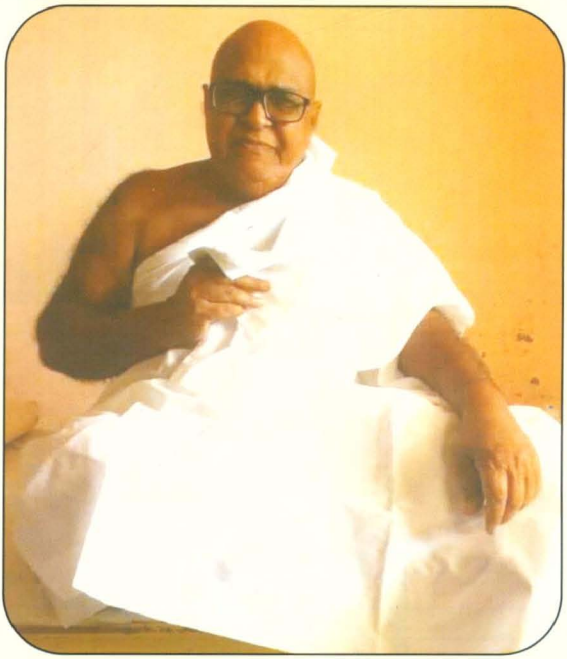

ભાંડવપુર મહાતીર્થની પાવન ભૂમિ પર તા. ૨૧-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. નો લોચ વિધિ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. પૂજ્યશ્રી સહિત કેટલાય મુનિરાજ ભગવંતોએ પણ લોચ કરાવ્યો હતો.

આ લોચવિધિના અવસર પર મેંગલવા, સાયલા, જીવાણા, તિલોડા વિગેરે સંઘોના સદસ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા અને પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

આ પ્રસંગે મેંગલવા શ્રી સંઘના કાંતીલાલજી એ પૂજ્યશ્રીના લોચ નિમિત્તે પાંચ જીવોને છોડાવવાનો લાભ લીધો હતો. અહીં બિરાજમાન સાધુ-સાધ્વીજી મંડળને ગરમ પાણીના થરમોશ વોરાવાયા હતા. અને પૂજ્યશ્રી સાથે રહી સેવા આપી રહેલ ગુરૂભક્તોને પણ થરમોશનું વિતરણ કરાયું હતું. ગુરૂભક્ત ઉતમચંદજી (હૈદરાબાદ) દ્વારા ૨૧ હજાર ની રકમ જીવદયામાં ભેટ આપવામાં આવી હતી. લોચ બાદ પૂજ્યશ્રી અને મુનિરાજ ભગવંતો શાતામાં છે.

૭૨ જિનાલય તીર્થ-ભીનમાલ નગરે...
મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪ નું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન

જ્ઞાનાયતન થી જ્ઞાનની જ્યોત પ્રજ્વલિત....

વર્તમાન સમયમાં સમાજની નવી પેઢીમાં ધાર્મિક શિક્ષણ અને સંસ્કારોનું બીજારોપણ અત્યંત જરૂરી જણાતાં મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતનના સંસ્થાપક સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવન નિશ્રામાં મધુકર જ્ઞાનાયતન એટલે જ્ઞાન નું યતન, ૧૪ થી ૨૪ વર્ષના તરૂણો અને યુવાનોને ધાર્મિક જીવન, ધાર્મિક શિક્ષણ અને સંસ્કારો મળી રહે તે હેતુએ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ ધ્વારા સંચાલિત જૈન દાદાવાડી, અહિંસા ભવન પુના ખાતે ગત તા. ૨૬-૩-૨૦૧૫ ના રોજથી તા. ૧-૪-૨૦૧૫ ના રોજ દરમ્યાન મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૧ નું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. પ્રભુભક્તિ અનુભવજ્ઞાન, પ્રવચનધારા, પ્રશ્નોતરી, ગુરૂસેવા, પ્રતિયોગિતા, સમૂહ સામાયિક, કંદમૂળત્યાગ, રાત્રિ ભોજન ત્યાગ તત્વદર્શન તેમજ વિશિષ્ઠ વક્તાઓ દ્વારા વક્તવ્ય વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૧ માં પૂજ્યશ્રીના વાત્સલ્યભર્યા સાનિધ્યમાં તેમના દરેક શિષ્યરત્નોએ ચોટદાર પ્રવચનો દ્વારા સુંદર શૈલીમાં સમજણ આપી હતી તેના ફળસ્વરૂપે મધુક સંસ્કાર જ્ઞાનાયતનમાં જોડાયેલા વિદ્યાર્થીઓ એ કંદમૂળ ત્યાગ, રાત્રિભોજન ત્યાગ, માતા-પિતાને પગે લાગવું પ્રભુપૂજા વિગેરે નિયમો લીધા

હતા જે પ્રથમ મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન અત્યંત સફળતાને વરી હતી. ત્યારબાદ સમર્થ યુગ પ્રભાવક સવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ મુનિ મંડળની નિશ્રામાં અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા સુરત દ્વારા મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૨ નું ભવ્ય આયોજન ગત તા. ૧૬-૫-૨૦૧૫ ના રોજથી તા. ૨૨-૫-૨૦૧૫ ના રોજ દરમ્યાન રત્નરાજ એન્કલેવ પાલ સુરત ખાતે કરાયેલ હતું. જેમાં તામિલનાડુ, આંધ્રપ્રદેશ, કર્ણાટક, મહારાષ્ટ્ર, ગુજરાત, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ વિગેરે સ્થળોએથી જ્ઞાન પિપાસુ ૪૦૦ થી અધિક વિદ્યાર્થીઓ જોડાયા હતા. પૂજ્યશ્રીના સુરત ખાતેની પ્રવેશ સભામાં મુમુક્ષુરત્ન શ્રી કિરણભાઈ વોહેરાએ (વર્તમાનના મુનિરાજ શ્રી પવિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.) જણાવ્યું હતું કે મને જે વૈરાગ્ય ભાવ આવ્યો અને દીક્ષા અંગીકાર કરવા જઈ રહ્યો છું એનું મુખ્ય કારણ મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૧ જ છે. વેકેશન દરમ્યાન આ જ્ઞાનાયતનનું આયોજન થતું રહે તો બાળકો-યુવાનોના સંસ્કારોની વૃધ્ધિ થશે. ગુરૂગચ્છની નજીક આવશે. ભારતભરના રાજ્યોમાંથી આવતા વિદ્યાર્થીઓ વિચારોની આપ લે કરી નવા સંબંધો બાંધશે પરિણામે સંઘ અતિ મજબુત અને તંદુરસ્ત બનશે.

શ્રી ગુરૂરાજ નવકાર તીર્થ છત્રાલ ખાતે અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવાર દ્વારા સંચાલિત અને નેનાવા નિવાસી શા. દલીચંદ નથમલજી કટારીયા સંઘવી પરિવારના લાભાર્થે તા. ૨૭-૬-૨૦૧૫ ના રોજથી ૧-૭-૨૦૧૫ ના રોજ દરમ્યાન મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૩ નું સુંદર આયોજન કરાયું હતું. જ્યારે મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતનના સંસ્થાપક સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના સમતાભર્યા સાનિધ્યમાં શા. સુમેરમલ હજારીમલજી લુંકડ પરિવારના આયોજન થકી ૭૨ જિનાલય તીર્થ, રામસીન રોડ, ભીનમાલ ખાતે તા. ૨૪-૪-૨૦૧૬ ના રોજથી તા. ૩૦-૪-૨૦૧૬ ના રોજ દરમ્યાન મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪ નું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયેલ છે.

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪

જય-જય જ્ઞાનાયતન તા. ૨૪-૪-૧૬ થી ૩૦-૪-૧૬

સમતાભર્યું સાનિધ્ય એમ.એસ.જી. સંસ્થાપક સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. "મધુકર" આદિ શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદ

: આયોજક :

શા સુમેરમલજી હજારીમલજી લુંકડ પરિવાર

: સંચાલક :

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવાર

सद्‌गुरुनो संयोग

એક માટીનો પીંડ બની જાય છે ઘડી કારણ કે...
કુંભારનું અનુશાસન.... પરિણામ...
અનેકોને આપે છે તૃપ્તિ

એક પત્થરનો અવશેષ બની જાય છે પ્રતિમા કારણ છે..
શિલ્પીનું અનુશાસન... પરિણામ...
અનેકોને આપે છે પરમ શાંતિ...

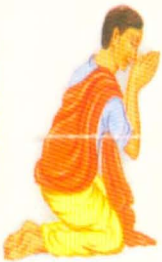

એક આરાધક બની જાય છે સમર્પિત સુશિષ્ય કારણ કે...
સદ્‌ગુરુનું અનુશાસન..... પરિણામ...
અનેકોને આપે છે સમર્પણનો સંદેશ...

એક બાળક બની જા છે ધર્માનુરાગી-સન્માર્ગગામી કારણ છે...
મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન..... પરિણામ...
અનેકોને આપે છે સંસ્કારોનો સંદેશ...

નિત્યક્રમ

૬-૦૦ સમૂહ સામાયિક /વાંચના	૧-૦૦ આરામ
૭-૦૦ પ્રભુદર્શન	૨-૦૦ અનુષ્ઠાન
૭-૧૫ ગુરૂવંદન	૪-૦૦ ક્લાસ
૭-૩૦ નવકારશી	૫-૩૦ ચૌવિહાર
૯-૦૦ પ્રવચન ધારા	૭-૦૦ પ્રતિક્રમણ
૧૦-૦૦ પ્રભુ પૂજા	૮-૦૦ સ્પે. પ્રોગ્રામ
૧૦-૩૦ અભિષેક ભક્તિ	૯-૦૦ રાત્રી આરામ
૧૨-૩૦ ભોજન	

શું લાવશો ?	**શું લઈ જશો ?**
પૂજાની જોડ	પ્રભુની પ્રીતિ
સામાયિક ની જોડ	સમતાનો સ્વાદ
અનુશાસન	સદ્‌ગુરૂનું વાત્સલ્ય
જિજ્ઞાશા	સંસ્કારોની સરગમ
સિંપલ ડ્રેસ	સદ્‌ગુણોની સૌરભ

અઢળક ઈનામોની વણઝાર

મારા વ્હાલા પ્રભુ...
પ્રસ્તુતિ : વિશાલભાઈ પંડિત
આ વાત કદી ના ભુલાય...
પ્રસ્તુતિ : નીલભાઈ શાહ - મુંબઈ
જય-જય હોજો મંગલ હોજો
અતુલભાઈ શાહ - મુંબઈ
શુભ સ્થળ
૭૨, જિનાલય તીર્થ, રામસીન રોડ,
પો. ભીનમાલ. જીલ્લો જાલોર (રાજ.)
ફોન : ૦૨૯૬૯-૨૯૧૧૭૨, ૨૨૨૫૪૬

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪ માં સંસ્કારોનું ભાથું બાંધવા ના ભાવ સાથે જોડાવા માગતા દરેક પુણ્યશાળી એ નામ-સરનામું અને કોન્ટેકટ નંબર ૧૦ એપ્રિલ ૨૦૧૬ સુધી નીચેના સંપર્ક સુત્રો ને જાણ કરી પ્રવેશ મેળવી લેવો.

ગુજરાત	મધ્યપ્રદેશ	રાજસ્થાન
પક્ષાલ કોરડીયા	પવન કટારીયા	દર્શિત જૈન
૦૯૦૩૩૪૭૬૮૪૨	૦૯૯૦૭૦૩૦૯૩૬	૦૯૭૮૪૫૯૮૮૪૪

સાઉથ	મહારાષ્ટ્ર
કીરણ વાણી ગોતા	અભિષેક વોહેરા
૦૮૧૪૭૯૨૮૮૪૯	૦૯૬૧૯૧ ૬૯૩૧૧

અવિચલ સગાઈ

રાજસ્થાનના ભીનમાલ શહેરથી નીકળીને થરાદ શહેર વસાવનાર શ્રી થીરપાલ ધરૂએ નાણદેવી માતાનો રથ જ્યાં અટક્યો ત્યાં થીરપુર (હાલનુ થરાદ) ની સ્થાપના વિક્રમ સંવત ૧૦૧૧મા કરેલ હતી. ખૂબ મોટા પ્રદેશનું આધિપત્ય ધરાવતાં શ્રી થીરપાલ ધરૂ સંપૂર્ણ જૈન ધર્મી હતા. તેમના બહેન હરખુનું વેવિશાળ-લગ્ન થરાદ નજીક બુરભૂજા શેઠ પરિવારમાં થયેલ. પિયરપક્ષના ઉચ્ચ ધાર્મિક સંસ્કારોના લીધે હરખુબેને વાવ શહેરમાં ભવ્ય દિવ્ય ઉત્તુંગ શિખરોથી શોભતું જિનાલય નિર્માણ કરાવેલ. જિનાલયની પ્રતિષ્ઠા સમયના થીરપુરના રાજા અને માડીજાય વીર એવા શ્રી થીરપાલ ધરૂ એ રાજાશાહી ઠાઠ માઠ સાથે મહાજનો અને પ્રજાજનોની વિશેષ ઉપસ્થિતિમાં પ્રસંગને શોભાવવા પધારી ચૂક્યા હતા.

તેવા સમયે ભાઈએ બહેન હરખુને આ પાવન પ્રસંગની કાયમી સંભારણુ રહી જાય તેવું કંઈક આપવાની વાત કરી. બહેન હરખુએ ભાઈ થીરપાલ ધરૂ સાથે વાત કરતાં પહેલા શરત મૂકી : 'હું માંગીશ તે આપવા તું પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ છે ?' થીરપાલ ધરૂ એ હા પાડી. બહેને વીરા પાસે માંગણી મૂકી કે આ જ પછી મારા સંતાનો અને તમારા સંતાનોની મામા-ભાણેજની અવિલય સગાઈ રહેશે. આજે પણ બે-બે હજાર વર્ષના વહાણા વહી ગયા બાદ તમામ બરભૂજા શેઠના સંતાનો દરેક ધરૂ પરિવારને 'મામા' કહીને બોલાવીને અવિચલ સગાઈને જાળવી રાખી છે. અર્થાત્ બરભૂજા શેઠ પરિવારો અને ધરૂ પરિવારો વચ્ચે મામા-ભાણેજના પવિત્ર સંબંધો ચાલુ હોઈ બંને પરિવારો વચ્ચે કોઈ સગાઈ સગપણ થતાં જ નથી.

આજ બરભૂજા શેઠ પરિવારના નંદન કલિકુંડ તીર્થોદ્ધારક પૂ.આ.ભગવંત વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. અને ધરૂ પરિવારના નંદન રાષ્ટ્રસંત પૂ.આ. ભગવંત જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ઊભય સૂરિવરોએ બનાસકાંઠાથી લઈને હિન્દુસ્તાનના ખૂણે ખૂણે વિચરીને ઘણી મોટી શાસન પ્રભાવના કરી. ધરૂ અને બરભૂજા શેઠ પરિવારોનું નામ ઈતિહાસ અંકિત કરેલ છે. ધન્ય મામા ધન્ય ભાણેજ.

નોંધ : પૂ. આચાર્ય ભગવંત જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સાહેબના વાર્તાલાપમાંથી. સંકલન : હસમુખભાઈ વેદલીયા

સ્મિત વેરો વિના મુલ્યે

જાડી ચામડીના નેતાઓની મહેરબાનીથી ચારે બાજુ ભ્રષ્ટાચાર અને મસ. મોટા આર્થિક કૌભાંડોની હારમાળા અને કાળઝાળ મોંઘવારી વચ્ચે પીસાતી પ્રજાને વર્તમાન સમયમાં શાંતિ પામવાનું કોઈ આશાનું કિરણ દેખાતું નથી તો તનાવ ભરી જીંદગીમાં હસવાનું તદ્દન મફત મળતું હોય તો શું કામ ન હસવું જોઈએ..! ડાયાબીટીસ, બ્લડપ્રેશરને કાબુમાં રાખે છે હાસ્ય.

જાહેર નોટીસ

આ નોટીસથી અમારા ભાડુઆત બગ ભગત ઠગ ભગતને જણાવવાનું કે તમે છેલ્લા પંદર પખવાડિયાથી તમને ભાડે આપેલ અમારૂં ભોંયતળિયાનું મકાન તમે બદદાનતથી ઉઠાવીને ભાગી ગયા છો તો આ નોટીસથી તમો ત્રણ દિવસમાં તે મકાન તેની મૂળ જગ્યાએ પાછું નહીં મુકી જાવ તો અમે કોઈ જંતર મંતરના સાધક પાસે કાચના ગોળામાં જોવડાવીને તમારો પતો મેળવીશું ને તમારી સાથે કાયદેસરના પગલાં લઈશું. તેની નોંધ લેશો.

લિ. અમો છીએ
ખોટાશંકર દુઃખ શંકર
ભોળાશંકર દુઃખ શંકર

અલબેલી કંકોત્રી દ્વારા ભાવભર્યું આમંત્રણ

શ્રી કાકડીદેવી નમઃ

શ્રીમાન ભીંડાભાઈ તુરીયાભાઈ દાણાવાળા

એતાન શ્રી બગીચાનગરેથી લિ. વટાણાલાલ કેળાભાઈ કંકોડાના જય નાગરવેલ.

સહર્ષ જણાવવાનું કે અમારે ચિ. ચીભડાલાલ ના કુપુત્ર ટામેટાકુમારના અશુભ લગ્ન છઠ વદ તા. ૩૨-૧૩-૧૬ વાર અમંગળના રોજ કાળ ચોઘડીયે દુધીચંદ ચોળાભાઈ કારેલાની કુપુત્રી સાંગરીબેન સાથે ન છુટકે નિરધાર્યા છે તો આ અશુભ પ્રસંગે આપને ગેરહાજર રહેવા હાર્દિક આમંત્રણ છે.

નોંધ :- ચાંદલો રૂા. ૧૦૧ રાખેલ છે. ૩૦ દિવસમાં ચાંદલો મોકલી આપવો. ૩૦ દિવસ પછી ૧૮% વ્યાજ ગણાશે.

ચાંદલો મળ્યા પછી વાસી મીઠાઈ મોકલવા પ્રયત્નશીલ રહીશું.

:: લગ્ન સ્થળ ::
વટાણાલાલ કેળાભાઈ કંકોડા
સરગવા સોસાયટી, બાવળીયા ચોક, તાંદલજા ભાજીપુરા, બગીચાનગર

લિ. સ્નેહાધિન
વટાણાલાલ કેળાલાલ કંકોડા　　તુરીયાભાઈ વાલચંદ કંકોડા
અડદભાઈ કેળાલાલ કંકોડા　　કોઠીબાભાઈ મતીરાલાલ કંકોડા

માત્ર રમુજ માટે જ છે તેની નોંધ લેવી

|| श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथाय नमः ||

प्रातः स्मरणीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद विजय राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः

Age 14 to 24 year only Boys.

Start 24/4/2016
End 30/4/2016

72 जिनालय तीर्थ - भीनमाल के पावन प्रांगण में...

मधुकर संस्कार Gyanayatan-4

आमंत्रण ★ નિમંત્રણ ★ *Invitation*

ज्ञानायतन मे चालो भैया, मिलता अमृतपान है
संस्कारो का सिंचन करता, सुंदरतम् अभियान है

जय-जय ज्ञानायतन ★ જય-જય જ્ઞાનાયતન ★ *Jay-Jay Gyanayatan*

समताभरा सानिध्य : सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, MSG संस्थापक, युग प्रभावक
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर' आदि श्रमण-श्रमणीवृंद

सद्गुरु का संयोग।

એક માટીનો પીંડ બની જાય છે ઘડો
કારણ છે કુંભારનું અનુશાસન
પરિણામ અનેકોને આપે છે તૃપ્તિ

એક પત્થરનો અવશેષ બની જાય છે પ્રતિમા
કારણ છે શિલ્પીનું અનુશાસન
પરિણામ અનેકોને આપે છે પરમશાંતિ

એક આરાધક બની જાય છે સમર્પિત સુશિષ્ય
કારણ કે સદ્ગુરુનું અનુશાસન પરિણામ...
અનેકોને આપે છે સાધનનો પણ સમર્પણનો સંદેશ

એક બાળક બની જાય છે ધર્માનુરાગી સન્માર્ગગામી
કારણ કે MSG
પરિણામ અનેકોને આપે છે સંસ્કારોનો સંદેશ

परमादरणीय जन्मदाता
माता-पिता...
सादर जय जिनेन्द्र!

देव-गुरु की परम कृपादृष्टि से आपके परिवार मे परमानंद मंगल प्रवृतमान होगा।

आपके लाडले संतान भविष्य में जिनशासन के सच्चे रत्न बने, इसी शुभाशय से प.पू. गच्छाधिपति, युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित "मधुकर संस्कार ज्ञानायतन" का शुभारंभ किया गया है। इस वर्ष 72 जिनालय तीर्थ-भीनमाल में आयोजित MSG-4 में अपने बालक को अवश्य भेजे।

उनके भविष्य को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमान का परिश्रम परमश्रेष्ठ साबित होगा।

SCHEDULE/नित्यक्रम

06.00	સમૂહ સામાયિક / વાચના
07.00	प्रभुदर्शन
07.15	Guruvandan
07.30	નવકારશી
09.00	प्रवचनधारा
10.00	Prabhu Puja
10.30	અભિષેક ભક્તિ
12.30	ભોજન
01.00	Rest
02.00	અનુષ્ઠાન
04.00	क्लास
05.30	Food
07.00	પ્રતિક્રમણ
08.00	સ્પેશલ પ્રોગ્રામ
09.00	Sleeping

શું લાવશો?	શું લઈ જશો?
પૂજાની જોડ	પ્રભુની પ્રીતિ
सामायिक की जोड	समता का स्वाद
Anushasan	Sadguruno Vatsalya
જિજ્ઞાસા	સંસ્કારોની સરગમ
सिंपल ड्रेस	સદ્ગુણોની સૌરભ

રમઝટ ઈનામોની
વણઝાર

- शुभ स्थल -
72 जिनालय तीर्थ,
रामसीन रोड, पो. भीनमाल,
जि. जालोर (राज.)
02969-291172
02969-222546

મારા વ્હાલા પ્રભુ...
પ્રસ્તુતિ : વિશાલભાઈ પંડિત, મુંબઈ

આ વાત કદી ના ભૂલાય...
પ્રસ્તુતિ : નીલભાઈ શાહ, મુંબઈ

Jay-Jay Hojo - Mangal Hojo
Present by : Atulbhai Shah, Mumbai.

आयोजक : शा. सुमेरमलजी हंजारीमलजी लुकड परिवार - भीनमाल (राज.)
संचालक : अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार

संयम संवेदनम् · अहो जिनशासनम् · मातृ-पितृ वंदनम् · सद्गुरु समर्पणम् · प्रभु पधारम्

ज्ञानायतन मे शामिल होनेवाले सभी पुण्यशाली अपना Name, Address & Contact No. निम्न सम्पर्क सूत्रों पर Join MSG Type करके SMS या Whatsapp 10 April तक करे।

GUJRAT	MADHYA PRADESH	RAJASTHAN	SOUTH	MAHARASHTRA
Paxal Kordiya	Pawan Kataria	Darshit Jain	Kiran Vanigota	Abhishek Vohra
09033476842	09907030936	09784598844	08147928849	09619169311

कुमकुम सने पगलिये

संयम दिवस पर पूरे देश में स्नात्रपूजन एवं सामायिक के आयोजन हुए

पाटोत्सव भी विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया

दिनांक 11 फरवरी को सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरिश्वरजी म. 'मधुकर' के दीक्षा (संयम) ग्रहण करने के 62 वर्ष पूर्ण होने के सुअवसर को पूरे देश में संयम दिवस के रूप में मनाया गया। मंदिरों में स्नात्र पूजन महोत्सव के आयोजन सम्पन्न हुए।

मन्दसौर । मन्दसौर में भी अ.भा.त्रिस्तुतिक जैन समाज एवं श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला, तरूण व बाल परिषदों के तत्वावधान में नगर के श्री अजितनाथ मंदिर, श्री पार्श्व पद्मावती मंदिर जनकूपुरा, श्री आदिनाथ जिनालय, श्री पार्श्व राजेन्द्र सूरि मंदिर सहित सभी मंदिरों में स्नात्र महोत्सव के आयोजन हुए। बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने आयोजनों में उत्साह से भाग लेकर गुरु गच्छ की महिमा बढ़ाई। दिनांक 20 फरवरी को पूज्य राष्ट्रसंत साहेब के 33 वें पाटोत्सव (आचार्यपद ग्रहण) के उपलक्ष्य में बड़ी संख्या में श्रद्धालु महिला पुरुषों ने सामायिक की। श्री भक्ताम्बर स्तोत्र, गुरु गुण इक्कीसा प्रार्थना, नवकार गीत, स्तवन का सामूहिक पाठ हुआ। गुरुदेव के मंदिर में आकर्षक अंगरचना की

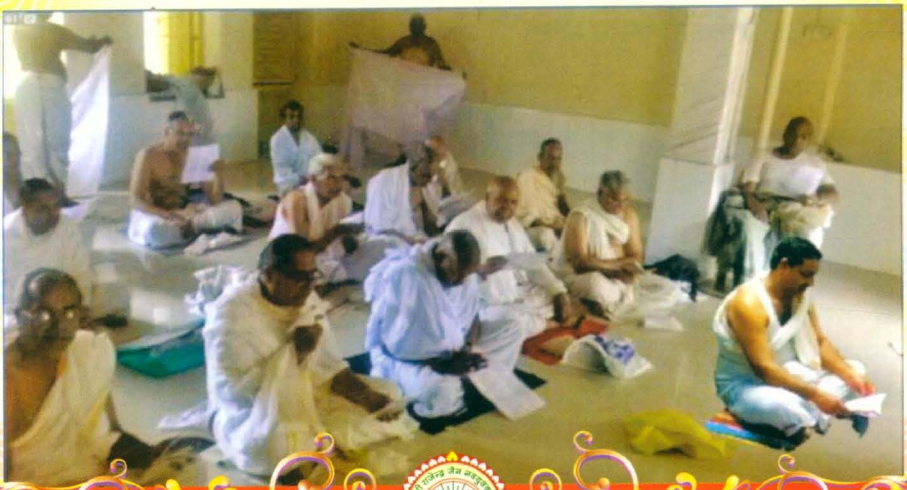

गई। वर्तमानाचार्य श्री के पाट को भी सजाया गया। गुरुदेव की आरती का लाभ श्री मिश्रीलाल हींगड़ परिवार ने लिया। संघ पूजा व प्रभावना श्री गजेन्द्र हींगड़, श्री मानमल खाबिया, श्री पूनमचंद दुग्गड़, श्री हीरालाल चपरोत परिवार की ओर से हुई। रात्रि गुरु भक्ति तरुण परिषद् द्वारा की गई। उपरोक्त सभी कार्यक्रम श्री पार्श्व पद्मावती मंदिर (गुरु मंदिर) में आयोजित किए गए। इस दौरान श्री संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, श्री संघ अध्यक्ष गजेन्द्र हींगड़, परिषद् अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र डोसी, श्री हस्तीमल चपरोत, श्री पारस खाबिया, श्री पारस लोढ़ा, श्री निर्मल सुराणा, श्री देवेन्द्र चपरोत, श्री निर्मल खाबिया, श्री जिनेन्द्र डोसी, श्री दिलीप संघवी, श्री यशवंत छिंगावत, श्री उमरावसिंह सोनगरा, श्री पारस हिंगड़, श्री विमल चौधरी, श्री कुशाल सगरावत, श्री हेमन्त चपरोत, श्री दिलीप कर्नावट आदि मौजूद थे। उक्त जानकारी श्रीसंघ सचिव श्री अशोक खाबिया ने दी।

बैंगलूर। परिषद् शाखा बैंगलूर के तत्वावधान में पाटोत्सव दिवस पर श्री गुरु राजेन्द्र भवन में सामूहिक सामायिक आराधना का आयोजन किया गया। इसमें शहर की विभिन्न महिला मंडलों की 250 सदस्याओं द्वारा सामायिक की गई। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष श्री बाबुलाल रामाणी, उपाध्यक्ष श्री हंसराज जैन, सचिव डूंगरमल

चौपड़ा, कोषाध्यक्ष श्री उमेशकुमार, श्री अशोक भण्डारी, श्री प्रकाश बालगोता, श्री लक्ष्मीचंद पालगीता सहित कई सदस्यगण उपस्थित थे। सामायिक करने वाली महिलाओं को परिषद् की ओर से विशेष प्रभावना वितरित की गई।

राणापुर। श्री महाविदेह मधुकर धाम में प.पू.राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत का 33 वाँ पाटोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस दौरान मंदिरजी में सामूहिक स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। दोपहर में अ.भा.श्री राजेन्द्र महिला परिषद् द्वारा प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकार पूजन का आयोजन भी किया गया। लाभार्थी कोकिला अभय भंसाली दाहोद थीं। सायं मंदिरजी में आरती पश्चात् श्री राजेन्द्र भवन पर पुरुष एवं महिला वर्ग द्वारा सामूहिक प्रतिक्रमण अलग-अलग समूह में रखा गया। प्रतिक्रमण समरथ नाहर द्वारा कराया गया। महिला वर्ग में श्रीमति हंसा नाहर, रेखा सियाल, अलका तलेरा, मंजू सकलेचा, प्रेमलता

सकलेचा, पद्मा सेठ, पुरुष वर्ग में श्री दिलीप सकलेचा, श्री राजेन्द्र सियाल, श्री मांगीलाल जैन सहित विभिन्न सदस्यों ने उपस्थित रहकर गुरुदेव के स्वस्थ संयम जीवन व यशस्वी पाटोत्सव की मंगलकामना की। उक्त जानकारी श्री राजेन्द्र सियाल ने दी।

हुबली। शासन सम्राट के 63वें दीक्षा दिवस उपलक्ष में परिषद् शाखा हुबली द्वारा श्री शांतिनाथ धार्मिक पाठशाला में स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। इस अवसर पर परिषद् के सहमंत्री श्री संजय सेठ, श्री सुभाष मूथा, श्री गुणवंत जैन, श्री कैलाश गांधीमूथा, श्री राजू जैन, श्री अक्षय मांडोत सहित पाठशाला के छात्र एवं समाजजन उपस्थित थे।

दिनांक 20 जनवरी को पूज्य गुरुदेव श्री के 33 वें पाटोत्सव को सामयिक दिवस के रूप में मनाया गया। कुबसद गली स्थित गुरुमंदिर में अनेक महिला मंडल की महिला सदस्यों सहित अन्य महिलाओं ने सामायिक का लाभ लिया। सामायिक करने वाली महिलाओं का परिषद् द्वारा प्रभावना से बहुमान किया गया। परिषद् के सहमंत्री श्री संजय सेठ ने बताया कि 33 वर्ष पहले राजस्थान के

भांडवपुर तीर्थ में कई संघ संस्थाओं की उपस्थिति में मुनि श्री जयन्तविजयजी को आचार्य पद से नवाजा गया। संयम ग्रहण करने के बाद से उन्होंने करीब 2 लाख किलोमीटर का पैदल विहार कर महावीर जिनवाणी को जन-जन तक पहुंचाने का उत्कृष्ट कार्य किया। पैदल विहार के दौरान लोगों को शराब, मांसाहार सहित सभी दुर्व्यसनों को त्यागने, प्राकृतिक आपदाओं में सहयोग करने के लिए प्रेरित किया। सामायिक में परिषद् के नीलेश जैन, विक्रम मांडोत, हर्षल जैन, भावेश जैन, बंटी जैन, कैलाश जैन आदि उपस्थित थे।

अलीराजपुर। राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के 63 वां दीक्षा दिवस श्रीसंघ, नवयुवक, महिला, बालक एवं बालिका परिषद् द्वारा उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रातः सामूहिक स्नात्र पूजन किया गया। पूज्यश्री का 33 वाँ पाटोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया। प्रातः से ही श्रीसंघ एवं परिषद् की चारों शाखाओं में बड़े उत्साह एवं उमंग के वातावरण में श्री आदेश्वरजी मंदिर में सामूहिक स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। शाम को सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम कर प्रभावना का वितरण किया गया।

राजगढ़ । पू. गच्छाधिपति श्री के 33 वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में नवयुवक परिषद् एवं परिषद् परिवार शाखा द्वारा आयोजित दादा गुरुदेव की पुण्यभूमि राजगृही नगरी से शत्रुंजयावतार मोहनखेड़ा तीर्थ की चोविहार बेला सह सात यात्रा में 42 आराधकों ने सम्मिलित होकर पुण्यार्जन किया।

धार। पू.राष्ट्रसंत साहेब के दीक्षा दिवस पर रावेला स्थित जिनालय एवं कालोनी स्थित मंदिरजी में स्नात्र पूजा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसी प्रकार राष्ट्रीय परिषद् के आह्वान पर पाटोत्सव पर दोनों स्थानों पर सामुहिक सामायिक एवं गुरु गुणानुवाद के आयोजन हुए। उक्त जानकारी श्री सुभाष श्रीश्रीमाल धामंदावाला ने दी।

महिदपुर। पूज्य वर्तमानाचार्य श्री का 33 वां पाटोत्सव दिवस भक्तिभावपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञानमंदिर में श्री मोतीलाल नरेन्द्रकुमार धाड़ीवाल परिवार की ओर से सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी भाग लिया। गुरुदेव के दीर्घायु जीवन की मंगल कामना की गई। उक्त जानकारी श्री नरेन्द्रजी धाड़ीवाल ने दी।

दो दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव ठाठ से मना

पारा। पारा में जैन समाज द्वारा दो दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ ठाठ से सम्पन्न हुआ। महोत्सव के प्रथम दिवस जन-जन की आस्था के केन्द्र वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी का 33 वां पाटोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। 32 वर्ष पूर्व आचार्य देवेश को राजस्थान के भांडवपुर तीर्थ में मुनि शांतिविजयजी म.सा. द्वारा आचार्य की पदवी से विभूषित किया गया था। तब से लेकर वर्तमान तक गुरुदेवश्री ने पैदल विहार कर, अभूतपूर्व तरीके से चारों दिशाओं में भ्रमण कर जिन शासन एवं गुरु गच्छ की महिमा का डंका बजाया है।

शनिवार को सुबह भक्तामर के पाठ के बाद गुरुगुण इक्कीसा एवं गुरु गुणानुवाद किया गया। पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई। प्रातः पूजा अर्चना के बाद आचार्यश्री के चित्र के साथ नगर के मुख्य मार्गों से शोभायात्रा भी निकाली गई, जिसमें समाज के प्रत्येक घर से गुरुदेव के चित्र के समक्ष गहुली की गई। शोभायात्रा का समापन पुनः गुरुज्ञान मंदिर पहुंचने पर हुआ, जहाँ धर्मसभा का आयोजन किया गया। धर्मसभा में आदर्श नागौरी ने स्तवन एवं विभाष ए. जैन ने स्वरचित काव्य के माध्यम से अपनी गुरुभक्ति प्रकट की, जिसकी सभी ने सराहना की। इसके बाद कार्यक्रम में निश्रा प्रदान करने के लिए पधारीं साध्वी तत्वलोचनश्रीजी म.सा. , संवरवसिताश्रीजी म.सा., तत्वसुचीश्रीजी म.सा. ने गुरुगुणों की व्याख्या करते हुए जीवन में गुरु के महत्व को समझाया।

विदित हो कि दो वर्ष पूर्व ही पारा के छाजेड़ परिवार की बेटी प्राची छाजेड़ ने आचार्यश्री से संयम जीवन का अंगीकर कर जिनांगयशाश्रीजी का नाम पाकर संयम पथ को ग्रहण किया था। समाज द्वारा पारा की बेटी की भी अनुमोदना की गई। कार्यक्रम में आचार्यश्री के चित्र पर वासक्षेप पूजन एवं स्वामी भक्ति का लाभ धनराजमल गट्टुलालजी ब्होरा परिवार ने लिया। कार्यक्रम के अंत में श्रीसंघ महामंत्री राजेन्द्र कोठारी ने अपने भाव प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन सुरेश कोठारी ने किया। दोपहर में परिषद् परिवार द्वारा विश्वपूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई।

कार्यक्रम की जानकारी देते हुए श्रीसंघ अध्यक्ष मनोहर छाजेड़ तथा परिषद् महामंत्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि पारा के आदिनाथ-शंखेश्वर-सिमंधर धाम जिनमंदिर की दूसरी वर्षगांठ पर सुबह की धार्मिक क्रियाओं के बाद श्रीसंघ ध्वजा के लाभार्थी शांतिलाल

मगनीलाल पंवार के घर बैंडबाजों के साथ पहुंचा। साध्वी म.सा. की अगवानी में ध्वजा की शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा पुनः जिन मंदिर पहुंची जहां सम्पूर्ण श्रीसंघ की उपस्थिति में लाभार्थी परिवार द्वारा 'ॐ पुण्यहाम पुण्यहाम ॐ प्रियंताम प्रियंताम' के स्वरों के साथ ध्वजा चढ़ाई गई। ध्वजा के बाद हुई धर्मसभा में सर्वप्रथम चैत्यवंदन किया गया। विभाष ए जैन ने अपनी सुमधुर वाणी में एक शानदार गीत प्रस्तुत किया। उसके बाद साध्वी म.सा. ने प्रवचन में ध्वजा चढ़ाने का महत्व बताते हुए कहा कि प्रतिवर्ष ध्वजा चढ़ाने से न केवल प्रतिष्ठा का दिन स्मरण रहता है बल्कि धर्ममय हर्ष भी प्राप्त होता है। ध्वजा लहराने से चारों ओर का वातावरण शुद्ध होता है। ध्वजा को देखकर 'नमो जिणाणं' कहने भर से अगले जन्म में फिर से जैन धर्म की प्राप्ति होती है।

श्रीसंघ द्वारा सुबह स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया। दोपहर में आदिनाथ पंचकल्याण पूजन पढ़ाई गई। महिला परिषद् द्वारा सामुहिक सामायिक तथा रात्रि में चौबीसी का आयोजन किया गया।

गुमाश्ता नगर इन्दौर। परम पूज्य आचार्य देवेश का दीक्षा दिवस और पाटोत्सव अति उल्लास और आनन्द में सम्पूर्ण धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के निर्धारित कार्यक्रमों के अनुपालन में दीक्षा दिवस पर स्नात्र पूजन विभिन्न जिनालयों में विधि विधान सहित हुए। इन्दौर के राजेन्द्र उपाश्रय, गुमाश्ता नगर में सीमंधर जिनालय, राधानगर जिनालय, पार्श्वनाथ सोसायटी सहित विभिन्न जिनालयों में संगीतमय लय आयोजित हुई। अनेक श्रावक श्राविकाओं ने नियमित स्नात्रपूजन का संकल्प भी लिया।

आचार्यश्री के पाटोत्सव पर भी परिषद् के आह्वान पर दो दिवसीय आयोजन हुआ। प्रथम दिवस श्री राजेन्द्र उपाश्रय में आयोजित सामुहिक सामायिक में लगभग 200 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया। परिषद् परिवार ने प्रभावना का लाभ लिया। दोपहर में श्री राजेन्द्र-जयन्त महिला मंडल द्वारा गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई।

द्वितीय दिवस गुमाश्ता नगर स्थित श्री सीमंधर जिनालय ज्ञानमंदिर में भव्य पैमाने पर सामुहिक सामायिक व गुरु गुणानुवाद का आयोजन हुआ। सामायिक में भक्तामर व विविध स्तवना की गई।

गुरु गुणानुवाद करते हुए समाज के वरिष्ठ श्री यशवंतजी बोराना ने कहा कि हम सभी

का प्रबल पुण्योदय है कि पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी की पाट परम्परा में हमें ऐसे गुरुदेव आचार्य के रूप में मिले जो अपने ज्ञानबल, ध्यानबल, तपोबल से न केवल संघ-समाज-समुदाय को नई ऊंचाइयाँ दे रहे हैं बल्कि सम्पूर्ण जैन जगत के साथ प्राणी जगत के हित को सर्वोपरि रखकर अपने स्वास्थ्य व शरीर की परवाह किए बिना इस दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। सद्गुरु सच्चा मार्ग बताते हैं। गुरुकृपा की एक बूंद सम्पूर्ण सिंधु को अमृतमय बना देती है। हमारी श्रद्धा और गुरु के प्रति समर्पणता हमारा मार्ग प्रशस्त करती है।

गुणानुवाद सभा में श्री मनोहरलालजी बाफना सहित अन्य गुरुभक्तों ने भी गुरु के प्रति अपने उद्गारों को व्यक्त किया। दोनों कार्यक्रमों में श्रीसंघ के साथ परिषद् की सभी इकाइयों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

सामुहिक सामायिक एवं गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन

रतलाम। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की पाट परम्परा के पट्टधर, विश्वपूज्य, प्रातः स्मरणीय मोहनखेड़ा तीर्थोद्धारक दादा गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय श्री राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के छद्म पट्टधर गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के 33 वें पाटोत्सव महोत्सव को सम्पूर्ण भारत में परिषद् परिवार ने एकरूपता का परिचय देते हुए सामुहिक सामायिक एवं गुरु गुणानुवाद के भव्य आयोजन के साथ मनाया एवं गुरुदेव के लिए दीर्घायु एवं मंगलमय जीवन की प्रभु से कामना की।

रतलाम परिषद् ने सामुहिक सामायिक का आयोजन किया जिसमें लगभग 85 पुरुष महिलाओं ने सामायिक का लाभ लिया। इसके पश्चात् आयोजित गुरु गुणानुवाद सभा में राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री सुशीलजी छाजेड़ ने कहा कि गुरु के सान्निध्य से ही जीवन का कल्याण होगा। गुरु एवं गुरु सान्निध्य की महिमा का बखान करना सूर्य को रोशनी दिखाना है। म.प्र.इकाई के उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी लुणावत ने कहा कि गुरु बिना जीवन वैसा ही है जैसे जल बिन मछली। वरिष्ठ वक्ता प्रो. वी.के. जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि इतने बड़े विशाल संघ एवं परिषद् को एकसूत्र में पिरोये रखने का काम ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है। यह शक्ति हमारे गुरुदेव में है। श्री गेंदालालजी सकलेचा ने कहा कि गुरु की महिमा का बखान हम श्रावकगण नहीं कर सकते। इसका सच्चा लाभ तभी होगा जब हम उनके आदेशों का अक्षरशः पालन करेंगे। श्री श्रेणिकजी बाठिया ने कहा कि इस संसार में माँ सर्वप्रथम गुरु

हैं तो दूजे महात्मा (गुरुदेव) और तीजे परमात्मा भी गुरु हैं। यदि हमने महात्मा का सान्निध्य पा लिया तो निश्चित ही सद्गति के मार्ग पर प्रशस्त हो सकेंगे।

इस अवसर पर सर्वश्री अभयजी बरबोटा, निलेश लोढ़ा, विनय सुराणा, पंकज राठौर, डॉ. निर्मल मेहता, संजय कोठारी, नरेन्द्र घोचा, प्रवीण संघवी, यशवंतजी नांदेचा, सौरभ मेहता, अभय जी सकलेचा, देवेन्द्रजी मेहता,अप्रित आंचलिया सहित सभी परिषदों से विभिन्न सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात् नवकारसी हुई एवं प्रभावना वितरित की गई। समस्त कार्यक्रमों के लाभार्थी सर्वश्री सुशीलजी छाजेड़, राजेन्द्रजी लुणावत, पंकजजी राठौर, राजकमल दुगड़, राजेन्द्रजी खाबिया, सतीशजी खेड़ावाला, मुकेश ओहटा परिवार रहे।

अंत में आभार के साथ परिषद् सचिव राजकमल दुगड़ ने 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े , काके लागूँ पाय। बलिहारी गुरु आपकी जो गोविंद दियो बताय' के साथ गुरु की महत्ता को पुनः रेखांकित किया।

श्रद्धापूर्वक उत्साह से मनाई गुरु सप्तमी

बदनावर। विश्वपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. का जन्मोत्सव गुरु सप्तमी के रूप में धूमधाम से मनाया गया। प्रातः स्नात्र पूजा श्री अनिल मूणत एवं श्री नीलेश लोढ़ा ने पढ़ाई। दोपहर में गुरु श्री राजेन्द्रसूरिश्वर जी की अष्टप्रकारी पूजा महिला मंडल द्वारा पढ़ाई गई। इसका लाभ श्री चम्पालाल पगारिया ने लिया। पू. गुरुदेवश्री की रथयात्रा निकाली गई एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भवमुक्ति परिवार द्वारा बदनावर से पालीताणा छठ यात्रा में जाने वाले 120 यात्रियों का बहुमान परिषद् परिवार द्वारा किया गया। कुरनूल। गुरु सप्तमी के उपलक्ष्य में कुर्नूल सकल संघ द्वारा आयोजित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ गुरु जन्म दिवस मनाया गया। भक्तामर पाठ, गुरुदेव मंत्र जाप, मौन सामायिक, आयंबिल, गुरुपद पूजन, अंग रचना, सामूहिक भक्ति के आयोजन सम्पन्न हुए। विशाल वरघोड़ा निकाला गया। स्वामी वात्सल्य का आयोजन भी हुआ। प्रातः दादा गुरुदेव की आरती का लाभ शा रणजीतमलजी ताराचंदजी परिवार ने एवं सायं की आरती का लाभ संघवी भुरमलजी रिखबदासजी परिवार ने लिया।

उज्जैन–गुरूसप्तमी महोत्सव पर भव्य वरघोड़ा

उज्जैन। गुरु सप्तमी के शुभ अवसर पर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ नमकमंडी एवं श्रीसंघ नयापुरा उज्जैन द्वारा सामूहिक रूप से धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। पूज्य गुरुदेव का भव्य वरघोड़ा ज्ञानमंदिर नयापुरा से आरंभ हुआ जिसका समापन नमकमंडी स्थित ज्ञानमंदिर पर हुआ। वरघोड़े में महिला एवं बहु परिषद की सदस्याएँ एक सी वेशभूषा में सिर पर कलश धारण कर चल रही थीं।

नमक मंडी त्रिस्तुतिक श्रीसंघ अध्यक्ष श्री राजबहादुरजी मेहता के स्वागत भाषण एवं बहु परिषद् के स्वागत गीत के साथ गुरु गुणानुवाद सभा प्रारंभ हुई। श्री माणकलालजी गिरिया ने बताया कि गुरुदेव ने समाज में व्याप्त मिथ्या परम्परा को दूर कर साधु परम्परा को पुनः स्थापित किया। श्री प्रकाशजी गादिया ने धार्मिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर जोर दिया। नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष श्री नितेश नाहटा ने गुणानुवाद का अर्थ समझाया। महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती गुणमाला बेन नाहर ने गुरुदेव से पुनः जन्म लेकर सोये हुए भारत के भाग्य को जगाने की प्रार्थना की। श्री प्रतापजी मेहता ने क्षणिक सुखों से दूर रहकर समाज सुधार का संकल्प लेने का सुझाव दिया। श्री शांतिलालजी रूनवाल ने जीवन में शुद्ध आचरण अपनाने को सही रूप में जन्मोत्सव मनाना बताया। श्री राजेश पगारिया ने गुरुदेव के मंत्र जाप को विघ्न एवं अशांति दूर करने का उपाय बताया। संचालक श्री संजय कोठारी ने वर्तमान आचार्यश्री का आगामी चातुर्मास उज्जैन में कराने के लिए सबको प्रेरित किया। आभार श्री मदनलालजी रूनवाल ने व्यक्त किया।अन्त में श्री सुनीलकुमार, अनिलकुमार भटेवरा परिवार द्वारा गुरुदेव की सामूहिक आरती सम्पन्न कराई गई। दोपहर में श्री राजेन्द्र सूरि

गुरूसप्तमी महोत्सव पर कलश के साथ
वरघोड़े में शामिल महिलाएँ

अष्टप्रकारी महापूजन श्री राजमलजी रूनवाल परिवार द्वारा पढ़ाई गई। रात्रि में श्री कांतिलाल योगेशकुमार पगारिया एवं श्री राजमल शांतिलालजी रूनवाल परिवार द्वारा भव्य आरती की गई। सकल श्रीसंघ द्वारा भावपूर्वक भक्ति की गई। इसी उपलक्ष्य में दिन में परिषद् परिवार द्वारा जिला चिकित्सालय में मरीजों को भोजन कराया गया। उक्त जानकारी श्री वीरेन्द्र गोलेचा ने दी।

कुमकुम पगलियों से पावन हुई राजस्थान की माटी

डूडसी। पू.आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. विशाल श्रमण-श्रमणी मंडल के साथ बागरा शताब्दी महोत्सव सम्पन्न कर विहार करते हुए दिनांक 23 फरवरी 2016 को डुडसी नगर पधारे। पूज्यश्री के आगमन पर सकल मूर्तिपूजक जैन संघ द्वारा भव्य समैया किया गया एवं जयकारों-जयघोषों के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई। नगर के राजमार्ग से चलकर शोभायात्रा धर्मशाला पहुंची जहाँ गुरुदेव ने मांगलिक प्रदान की। इस अवसर पर पूरे नगर को सजाया गया। देश के विभिन्न प्रांतों से गुरुभक्त गुरुदेव के दर्शन हेतु यहाँ पधारे थे।

बोरटा। सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश ने दिनांक 7 मार्च 2016 को यहाँ निर्माणाधीन 68 जिनालय का अवलोकन किया एवं सियाणा निवासी कु. रविना कुमारी शेषमलजी को दीक्षा मुहूर्त प्रदान किया। मुमुक्षा बहन की दीक्षा दिनांक 11 मई 2016 को

पूज्य गच्छाधिपति की पावन निश्रा में होगी। मुमुक्षा बहन साध्वी श्री कोमललता श्रीजी म.सा. के परिवार में संयम जीवन स्वीकार करेंगी। इस प्रसंग पर मुमुक्षु बेन के परिवार एवं 68 जिनालय ट्रस्ट के सदस्यों सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे। इसके पश्चात् पूज्य गुरुदेव का विहार श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ तीर्थधाम बाकरारोड़ की ओर हुआ। पूज्य गुरुदेव के पधारने पर ट्रस्ट की ओर से उनका भव्य स्वागत एवं समैया की गई।

धाणसा। पू. आचार्यश्री का दिनांक 9 मार्च 2016 को धाणसा नगर में भव्यातिभव्य नगर प्रवेश हुआ। अनेक श्रीसंघों ने यहाँ पहुंचकर आचार्यश्री का वंदन किया एवं आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर धर्मसभा में बड़ी संख्या में भक्तजन मौजूद थे, जिन्होंने गुरुदेव की अमृतवाणी का श्रवण किया।

पाथेड़ी। दिनांक 11 मार्च 2016 को पूज्य गुरुदेव का पाथेड़ी में भव्य नगर प्रवेश हुआ। इस अवसर पर मुख्य द्वार पर समैया कर नगर प्रवेश कराया गया। शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई गोड़िजी मंदिर पहुंची। सभी गुरुभक्तों ने पू. आचार्यश्री के साथ प्रभु दर्शन किए और श्री शीतलनाथजी जिनालय भवन पहुंचे। यहाँ धर्मसभा में पू. गुरुदेव ने मांगलिक प्रदान की तथा मानव जीवन के महत्व पर सारगर्भित प्रवचन दिया।

पोषाणा। अनेक नगरों का विहार करते हुए 13 मार्च 2016 को पूज्य गच्छाधिपति जी विशाल श्रमण-श्रमणी मंडल के साथ पोषाणा नगर में पधारे। जैन मूर्तिपूजक संघ द्वारा भव्य समैया किया गया। जयकारों के बीच गुरुदेव का भव्य प्रवेश हुआ। नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए शोभायात्रा का समापन धर्मशाला पर हुआ जहाँ गुरुदेव ने सभी भक्तों को मांगलिक प्रदान की। 14 मार्च को पूज्यश्री का सुराणा में भव्य नगर प्रवेश हुआ। धर्मसभा में गुरुदेव ने आशीर्वचन प्रदान किए।

भाण्डवपुर तीर्थ। पूज्य राष्ट्रसंत श्री के 19 मार्च को तीर्थ आगमन पर पूरे तीर्थ को आकर्षक रूप से सजाया गया। तीर्थ जीर्णोद्धार के अन्तर्गत नवनिर्मित श्री वर्द्धमान राजेन्द्र जैन सभा भवन का शुभारंभ पूज्य गच्छाधिपति के करकमलों से सम्पन्न हुआ। नगर प्रवेश पर भक्तों का मेला लग गया। तीर्थ के ट्रस्ट मंडल द्वारा कई धार्मिक आयोजन किए गए जिसमें राजस्थान सहित विभिन्न प्रांतों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन एवं विशेष अतिथि उपस्थित हुए। 24 मार्च 2016 तक यहाँ स्थिरता प्रदान कर गुरुदेवजी ने भीनमाल की ओर विहार किया।

अहमदाबाद। दिनांक 6 मार्च 2016 को मुनिश्री डॉ.वैभवरत्न विजयजी म.सा. आदि

ठाणा का श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञानमंदिर रतनपोल में भव्यातिभव्य प्रवेश हुआ। इस अवसर पर मुनिवर ने उत्तराध्ययन सूत्र व पंचसूत्र के आधार पर 'मन के विचार समाधि या संक्लेश' विषय पर अत्यन्त मनोहारी प्रवचन दिए। इसके पश्चात् अपने सांसारिक घर 'अंकुर फ्लेट' पर पधारे एवं जनमेदिनी की विनती पर प्रवचन दिए। मुनिवर के आगमन से भक्तों में अपार आनन्द छाया रहा।

रानी स्टेशन। मुनि श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा., मुनि श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा., साध्वी श्री अर्पितमल श्री म.सा., साध्वी श्री मेट्रिमलश्रीजी म.सा. की निश्रा में रानी स्टेशन (राज.) में श्री कुंथुनाथ जिनमंदिर जी की ध्वजा का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग-4 का आयोजन

भीनमाल। श्री 72 जिनालय तीर्थ के पावन प्रांगण में सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन सान्निध्यता में दिनांक 24 अप्रैल से 30 अप्रैल 2016 तक 14 से 24 वर्ष की आयु के बालकों-युवाओं के लिए 'मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग-4' का आयोजन किया जा रहा है। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा संचालित इस ज्ञानायतन में अवधान, संवेदनामय भक्ति, प्रवचन धारा, पिरामिड महोत्सव, सामुहिक पौषध, भोजन शुद्धि, अभिषेक धारा, वैराग्य की वाचना सहित विभिन्न विषयों का ज्ञान दिया जाएगा। सभी पालकगणों से अधिकाधिक संख्या में अपने बच्चों को शिविर में भेजकर उनके जीवन को धर्मज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करने का निवेदन किया गया है।

श्री नरेन्द्रजी को समाज गौरव अलंकरण

बागरा। श्री चिंतामण पार्श्वनाथ महाशतकोत्सव के पावन अवसर पर साहित्य मनीषी पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने श्रीसंघ व समाज के प्रति समर्पण भावना के लिए सुश्रावक परम गुरुभक्त श्री नरेन्द्रकुमार रायचन्द को 'समाज गौरव' अलंकरण से गौरवान्वित कर आशीर्वाद प्रदान किया। अपने आशीर्वचन में कहा कि आपको सरस्वती माँ का वरदान प्राप्त है, आप कलम के धनी हैं, शब्दों के शिल्पी हैं। इस पावन अवसर पर सकल बागरा जैन संघ ने अनुमोदना की है।

भक्तिभाव से चढ़ाई शिखर ध्वजा

राणापुर। महाविदेह मधुकर धाम पर त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन दिनांक 28 से 30 जनवरी तक साध्वी श्री दर्शनरेखाश्रीजी की सान्निध्यता में किया गया। महोत्सव के पहले दिन 28 जनवरी को श्री सीमंधर स्वामी जिन मंदिर में महिला मंडल द्वारा सीमंधर स्वामी की पंच कल्याणक पूजा पढ़ाई गई। दूसरे दिवस 29 जनवरी को प्रातः विधिकारक श्री अरविंद चोरड़िया के निर्देशन में जिन प्रतिमाओं का अभिषेक किया गया। समापन दिवस 30 जनवरी को ध्वजा का वरघोड़ा कटारिया परिवार के निवास से बैंड बाजों के साथ निकाला गया। 8.30 बजे जिनालय के शिखर पर लाभार्थी श्री सुजानमल, श्री सज्जनलाल, श्री रखबचंद कटारिया परिवार की ओर से ध्वजा चढ़ाई गई। इस दौरान दाहोद निवासी स्व. श्रीमती शांताबाई भंसाली की स्मृति में उनके परिवार द्वारा सीमंधर स्वामी भगवान की रजत आंगी भेंट की गई। सम्पूर्ण आयोजन का लाभ कटारिया परिवार ने लिया। श्री देवेन्द्र शैतानमल नाहर परिवार द्वारा मंदिर में त्रिगड़ा एवं इंदरमल लुणाजी कटारिया परिवार द्वारा भंडार भेंट किया गया। सभी लाभार्थी परिवारों का श्री सीमंधर राजेन्द्रसूरी ट्रस्ट की ओर से बहुमान किया गया।

महोत्सव के दौरान ट्रस्ट अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सकलेचा, उपाध्यक्ष श्री चन्द्रसेन कटारिया, श्री सज्जनलाल कटारिया, सचिव श्री राजेन्द्र सियाल, श्रीसंघ अध्यक्ष श्री दिलीप सकलेचा, श्री सुजानमल जैन, श्री रखबचन्द्र जैन, श्री ओमप्रकाश जैन, श्री दिनेश नाहर, श्री हितेश जैन, श्री कमलेश नाहर सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

कुक्षी। दिनांक 13 फरवरी को कुक्षी नगर के पांचों जिन मंदिरों में ध्वजा चढ़ाई गई। श्री शांतिनाथजी मंदिर पर ध्वजा चढ़ाने का लाभ श्री त्रिलोकचंदजी चौधरी परिवार ने लिया। इसी तरह आदिश्वर मंदिर के लाभार्थी छगनलालजी हस्तीमलजी नाहर परिवार, छोटे शांतिनाथ मंदिर के लाभार्थी श्री लुणाजी केशरीमलजी परिवार एवं सुरेशचन्द्र बाबुलालजी परिवार, महावीर मंदिर के लाभार्थी श्री राजमलजी भंवरलालजी उकावत परिवार एवं श्री सीमंधर स्वामीजी मंदिर पर श्री रमेशचन्दजी भंवरलालजी परिवार ने लाभार्थी के रूप में ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर साध्वी श्री दर्शनरेखाश्रीजी की निश्रा प्राप्त हुई। स्व. श्री सुगंधिलालजी चांदमलजी की पुण्यस्मृति में सुश्री सविता बहन के परिवार द्वारा स्वामीवात्सल्य का लाभ लिया गया। उक्त जानकारी श्री स्वस्तिक जैन ने दी।

पूनम पर्व मेला हर्षोल्लास से मना

राणापुर। श्री महाविदेह मधुकर धाम पर परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के पावन आशीर्वाद से प्रतिमास पूर्णिमा पर मेले का आयोजन लाभार्थियों के सहयोग से प्रारंभ किया गया। पन्द्रहवें पूनम पर्व मेले का लाभ लक्ष्मीचंद, मनीष, सतीश नाहर परिवार ने लिया। प्रातः से ही श्रीसंघ, भक्तों का पूजन, भक्ति, आरती, दर्शनार्थ आने का दौर चल पड़ा जो दोपहर तक चलता रहा। लाभार्थी परिवार द्वारा प्रत्येक दर्शनार्थी का तिलक लगाकर एवं लड्डू की प्रभावना वितरित कर बहुमान किया गया।

इस मौके पर ट्रस्ट अध्यक्ष शांतिलाल सकलेचा, राजेन्द्र सियाल, कमल कटारिया, चन्द्रसेन कटारिया, मांगीलाल जैन, विनय जैन, प्रकाश सालेचा, ललित सालेचा विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री सीमंधर स्वामी राज राजेन्द्र जयन्तसेन सूरि जैन ट्रस्ट ने लाभार्थी परिवार का आभार माना और भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं। यह जानकारी श्री राजेन्द्रजी सियाल ने दी।

खेरादीवास का नामकरण श्रीमद् राजेन्द्रसूरि मार्ग करने की पहल

रतलाम। स्थानीय सर्किट हाउस पर प्रदेश के शिक्षामंत्री एवं जिला प्रभारी मंत्री पारस जैन से मुलाकात कर नगर निगम द्वारा खेरादीवास का नामकरण 'श्रीमद् राजेन्द्रसूरी मार्ग' के रूप में घोषित करने संबंधी पारित ठहराव की कापी उन्हें प्रदान की गई। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ एवं ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन, पूर्व अध्यक्ष पारसमल खेड़ावाला, सचिव अनोखीलाल भटेवरा, वरिष्ठजन शांतिलाल तलेरा, उपेन्द्र कोठारी, संजय कोठारी आदि ने लम्बे समय से अटके कार्य को गुरु सप्तमी 16 जनवरी को ही मार्ग का नामकरण श्रीमद् राजेन्द्र सूरि मार्ग के रूप में करने की मांग की। प्रभारी मंत्री ने श्रीसंघ पदाधिकारियों की मांग पर जिला प्रशासन को ठहराव की कापी प्रदान कर जिला योजना मंडल में इसे पारित करवाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला भाजपा अध्यक्ष बजरंग पुरोहित उपस्थित थे। नामकरण में उचित पहल के लिए स्व संचालित वार्षिक धर्मानुष्ठान संयोजक श्री सुरेश बोराना एवं निर्मल कटारिया, धर्माराधक सेवा प्रकल्प प्रभारी ममता धनसुख भंडारी, निर्णायक मंडल के

सुजानमल सोनी, सोहनलाल मूणत, गेंदालाल सकलेचा, महावीर पोरवाड़ तथा सरोज तेजमल कांसवा, ट्रस्टीगण संजय घोचा, श्रेणिक घोचा, शिखर दुगड़, रमणिक मालक आदि ने पूर्व महापौर श्री शैलेन्द्र डागा एवं तत्कालीन नगर निगम परिषद् का भी आभार व्यक्त किया है।

थाने। श्री के.के.संघवी के संयोजन में श्री शांतिधाम मानपाड़ा में राजस्थान के तीर्थों की यात्रा का आयोजन 22 जनवरी से 28 जनवरी तक निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस दौरान आबु तलेटी, मानपुर, भाण्डवपुर, जैसलमेर, जिरावला, 72 जिनालय भीनमाल, भीनमाल तीर्थ, ओसियाजी आदि तीर्थों के दर्शन, वंदन का लाभ सभी यात्रियों को मिला। इस दौरान नवकारसी, रात्रि भोजन का त्याग, आयंबिल आदि तपस्याएं सभी यात्रियों ने की। यात्रा में श्री राजेन्द्र ग्रुप के कार्यकर्ताओं की सेवाएं सराहनीय रहीं।

राजस्थान के गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया द्वारा सीडी का विमोचन सम्पन्न

बागरा। पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के 33 वें 'आचार्य पाटोत्सव' के शुभ अवसर पर आपश्री के गुणानुवाद को भव्य सुरीले शब्दों के साथ मुनिभगवंत श्री चरित्ररत्न विजयजी म.सा. की प्रेरणा से जैन समाज के सुप्रसिद्ध गीतकार, कवि, लेखक और हाल ही में 'साहित्य रत्न' से सम्मानित प्रदीपभाई ढालावत, मुम्बई द्वारा गीतों में पिरोया गया है।

गुणानुवाद के इन्हीं गीतों की सी.डी. का विमोचन राजस्थान के गृहमंत्री गुलाबचंदजी कटारिया द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2016 को किया गया।'भक्तों के मानों भगवान...' शीर्षक से सीडी का यह तृतीय संस्करण नेल्लोर निवासी गुरुभक्त शांतिलालजी शेषमलजी रामाणी के सहयोग से संभव हुआ है।

इस सीडी का प्रथम प्रकाशन 8 वर्ष पूर्व भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिलजी द्वारा राष्ट्रपति भवन में जैन समाज के 200 से ज्यादा गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था। दूसरा विमोचन 4 वर्ष पूर्व श्री गौतमजी अदानी के शुभ हस्ते हुआ था।

भक्तों की गुरुदेव के प्रति श्रद्धा और सीडी की मांग को देखते हुए आज फिर इसका तीसरा विमोचन हुआ है। ये गीत गच्छाधिपति आचार्य भगवंत के प्रेरणास्पद जीवन पर बनी रचनाओं पर आधारित हैं।

यह जानकारी नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भरत एन. कोठारी (कोसेलाव) द्वारा दी गई।

नवाणु यात्रियों का बहुमान

इन्दौर। परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावन सान्निध्यता में श्री सिद्धाचल तीर्थ पर नव्वाणु यात्रा कर आये इन्दौर शहर के 27 यात्रियों का अभिनंदन श्री जिनेन्द्र कुमारजी बांठिया परिवार द्वारा एक सम्पूर्ण धार्मिक कार्यक्रम के साथ किया गया। धार रोड़ स्थित श्री राज-राजेन्द्र जयन्तधाम पर आयोजित कार्यक्रम में सामुहिक पक्षाल-पूजा-आरती, चैत्यवंदन, सामुहिक रूप से श्री सिद्धाचल पट वंदना की गई। पट वंदना के पूर्व जय-जयश्री आदिनाथ के नारों के साथ शोभायात्रा पट स्थल पहुंची।

अभिनंदन कार्यक्रम में दीप-धूप प्रज्ज्वलन के पश्चात् सर्वप्रथम संघ,समाज व संबंधीजनों की ओर से कार्यक्रम आयोजन व नवाणु यात्री श्री जिनेन्द्रजी बांठिया का अभिनंदन शाल,-साफा व अभिनंदन पत्र के साथ किया। इसी बीच 'चौबीसी', 'सामायिक का महत्व' व 'युवावस्था में ही धार्मिक कार्य कर लो' विषयों पर रोचक नाटिका भी प्रस्तुत की गई।

बाठियाँ परिवार द्वारा सभी 26 यात्रियों को अति आत्मीय सम्मान दिया गया। परिवार की बुजुर्ग महिलाओं का भी सत्कार किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल ने सभी नव्वाणु यात्रियों का व्यक्तिगत परिचय कराने के साथ उनकी तप उपलब्धियों से सभी को अवगत कराया। आभार श्री विकास बांठिया व नीतेश सोनगरा ने व्यक्त किया।

यात्रियों का अभिनंदन

मेंगलवा। परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के शुभाशीर्वाद तथा पूज्य मुनिरज श्री जयरत्न विजयजी म.सा., पूज्य साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्री जी म.सा. की पावन प्रेरणा से मेंगलवा-दिल्ली निवासी श्री कांतिलालजी डामराणी परिवार द्वारा मेंगलवा-नाकोड़ाजी-बाडमेर-जैसलमेर-लोदखा-बह्मासर-अमरसागर-भाण्डवाजी में पंचतीर्थों के दर्शन के आयोजन का समापन कार्यक्रम भाण्डवाजी में पू.श्री जयरत्नविजयजी म.सा., पू.श्री अशोक विजयजी म.सा. व पू.श्री आनन्दविजयजी म.सा. के पावन सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर पंजाब से आए सिख समुदाय द्वारा गुरु भक्ति का अनूठा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

पूज्य मुनिराजश्री ने कहा कि जैन संस्कृति, हिन्दू संस्कृति के साथ सिख समुदाय की गुरुभक्ति भी बेजोड़ है। यह भी एक संयोग है कि त्रिस्तुतिक जैन समुदाय व सिख समुदाय की दो महत्वपूर्ण तिथियाँ कार्तिक पूर्णिमा व पौष सुदी सप्तमी (गुरु सप्तमी) का अपना

विशिष्ट महत्व है। सिख समुदाय में कार्तिक पूर्णिमा को गुरु नानकदेव का जन्म हुआ वहीं जैन समुदाय में तो इस दिन अनन्त आत्मा सिद्धगति को प्राप्त हुई थी। इसी तरह पौष सुदी सप्तमी को पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी का जन्म तथा पुण्यतिथि है, तो सिख समुदाय के गुरु गोविन्दसिंहजी का जन्म दिवस भी है।

आपने डामराणी परिवार की भक्ति भावना की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस परिवार की भावना उच्च है। परिवार की गीताबाई ने उपधान तप किया था तब भाण्डवपुर में गुरु सातम का लाभ लिया था। संघ निकालने की प्रबल भावना थी, सो पूर्ण हुई। तीर्थ यात्रा, दर्शन, पूजन, भव-भव की यात्रा का अन्त करते हैं। दर्शन से विशुद्धि तथा पूजन से भावों की पवित्रता आती है।

कार्यक्रम का आरंभ परिवार के प्रमुख श्री खुशालजी बाबुलालजी, कांतिलालजी रूपचन्द्रजी तथा संघ समाज के ट्रस्ट सदस्य ने दीप-धूप-माला से किया। पश्चात् चारों भाइयों व परिवारजनों का अभिनंदन श्रीसंघ में शामिल यात्रियों की ओर से किया गया। एक अभिनंदन पत्र भी दिया गया।

संघ का प्रस्थान पूज्य गुरुदेव के पाट महोत्सव निमित्ते उसी दिन पूज्य मुनिराज श्री आनंदविजयजी म.सा. की मांगलिक के साथ हुआ। पहला पड़ाव श्री नाकोड़ा तीर्थ पर करने के पश्चात् कुशलवाटिका के दर्शन-वंदन कर संघ जैसलमेर पहुँचा।

उस क्षेत्र की पंच तीर्थी के दौरान लौद्रबाजी में दर्शन-पूजन किए। बहनासर में पूज्य आचार्य सूर्यचन्द्र सागरजी म.सा. अपने 56 साधु समुदाय के साथ विराजमान थे। 350 से अधिक यात्रियों के साथ संघ ने गुरुवंदना कर छः-छः आचार्य भगवंतों की मंगलाचरण प्रवचन का लाभ लिया। संयोग से इस क्षेत्र में सोमवार और पूर्णिमा का अपना अलग ही महत्व है और संघ को यह लाभ भी मिला।अमर सागर दर्शन के पश्चात् पुनः जैसलमेर किला में हजारों-हजार प्रतिमाओं के दर्शन-पूजन का लाभ लिया।

संघवी-डामराणी परिवार ने शानदार संघ भक्ति की। भाण्डवपुर तीर्थ विकास और जीवदया ने भी अपनी सुकृत लक्ष्मी के सदुपयोग का भरपूर लाभ लिया। समापन अवसर पर डामरानी परिवार और पंजाब के जत्थेदार परिवार ने पूज्य मुनिराज को काम्बली-चादर अर्पण किया। कार्यक्रम का संचालन सहयात्री परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल ने किया।

नवकार आराधना का महा आयोजन हुआ

रतलाम। श्री नवकार आराधना परिषद् के 15 वर्ष पूर्ण होने पर नीमवाला उपाश्रय पर सामायिक एवं नवकार आराधना का महा आयोजन हुआ जिसमें सैकड़ों आराधकों एवं उपासकों ने भाग लिया।

जानकारी देते हुए श्री पारसमल खेड़ावाला ने बताया कि श्री सुजानमल सोनी बालोदावाला ने राष्ट्रसंतश्री के नवकारमय जीवन से प्रभावित होकर 15 वर्ष पूर्व कुछ श्रद्धालुओं के साथ नवकार आराधना परिषद् का गठन किया था। आज यह अपने विशाल रूप में है। सैकड़ों आराधकों ने उपस्थित होकर जप-तप करते हुए इसकी सार्थकता को सिद्ध कर दिया।

उपाश्रय में दोपहर में 1 से 3 बजे के बीच हुए इस आयोजन में श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन, संस्थापक श्री सुजानमल सोनी बालोदावाला, संस्था के कार्यकर्ता सर्वश्री रमेश सोनी, कीर्तिकुमार सोनी, सतीश चौरड़िया, राजमल भण्डारी, नरेन्द्र भटेवरा, कन्हैयालाल जैन,राजेश बम, राकेश जैन, मुकेश धाकड़, श्रेणिक छाजेड़, डाडमचन्द जी गुगलिया, दिनेश चौपड़ा, भेरूलाल पीपाड़ा, प्रकाशचन्द्र गुगलिया आदि उपस्थित थे।

इन्दौर। आचार्य देवेश श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस 'गुरु तीज' सम्पूर्ण परिषद् परिवार ने आदरांजलि के साथ मनाया। गुरुपूजा, गुरुभक्ति, आरती की गई। विभिन्न शाखाओं द्वारा गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। दोपहर में महिलाओं द्वारा गुरु महाराज की पूजा पढ़ाई गई।

गुमाश्ता नगर इन्दौर में भक्तामर सह सामुहिक सामायिक में पूज्य यतीन्द्रसूरिजी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल ने बताया कि बाल्यावस्था से ही आचार्य (रामरतन जी) कुशाग्र बुद्धि और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। एक सच्चे गुरु की तलाश करते हुए पूज्य राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. के सम्पर्क में आए तो उन्हें लगा कि सही पथ यहाँ मिल जाएगा। पूज्य गुरुदेव ने भी शिष्य बनाने से पूर्व उनकी परीक्षा ली। कहाँ से आये? कौन हो? और कहाँ जाना है? जैसे प्रश्नों के आध्यात्मिक जवाब 'निगोद से आया हूँ।', 'एक आत्मा', 'आत्मा का यथा स्थान अर्थात् मोक्ष' के रूप में दिए। इस तरह गुरु को सुयोग्य शिष्य और शिष्य को सुयोग्य गुरु मिल गए।

श्री पारस लोढ़ा गौशाला उपाध्यक्ष निर्वाचित

मन्दसौर। स्थानीय त्रिस्तुतिक समाज के अग्रणी श्री पारसमल लोढ़ा नगर की जीवदया की

प्रमुख संस्था श्री गोपाल कृष्ण गौशाला की साधारण सभा में निर्विरोध उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। अध्यक्ष के रूप में श्री अनिल संचेती सहित अन्य सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी भी निर्विरोध चुनी गई। स्नेहीजनों ने निर्वाचन पर बधाइयाँ दीं।

परिषद प्रांगण से

श्री नितेश अध्यक्ष व वीरेन्द्र सचिव नियुक्त

निलेश नाहटा
अध्यक्ष-नवयुवक परिषद
उज्जैन

विरेन्द्र गोलेचा
सचिव-नवयुवक परिषद
उज्जैन

संतोष कोठारी
कोषाध्यक्ष-नवयुवक परिषद
उज्जैन

उज्जैन। आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा नमकमंडी की नवीन कार्यकारिणी का गठन सम्पन्न हुआ। इसमें श्री नितेश नाहटा अध्यक्ष, श्री सुधीर मेहता व श्री रितेश खाबिया उपाध्यक्ष, श्री वीरेन्द्र गोलेचा सचिव, श्री मनोज पगारिया सह-सचिव, श्री संतोष कोठारी कोषाध्यक्ष, श्री जितेन्द्र नारेलिया शिक्षामंत्री, श्री विजय राठौर प्रचार मंत्री, श्री मनोज कटारिया अल्प बचत मंत्री, श्री विनम्र धारीवाल संगठन मंत्री, श्री विजय श्रीश्रीमाल सह-संगठन मंत्री, श्री दिलीपजी नारेलिया एवं श्री मुकेश बाफना केन्द्रीय प्रतिनिधि मनोनीत किए गए। इसी तरह कार्यकारिणी सदस्य के रूप में श्री हेमन्त पीपाड़ा, श्री शीतल चत्तर, श्री दिनेश बाफना, श्री संजय कोठारी, श्री प्रमोद तांतेड़, श्री राजेन्द्र रूनवाल, श्री आशीष जैन, श्री पीयूष चौरड़िया, श्री प्रशांत फागनिया, श्री राजेश सोनी, श्री संजय लोढ़ा, श्री नरेन्द्र श्रीश्रीमाल, श्री गौतम सेठिया, श्री दीपेश कोठारी, श्री राजेन्द्र रांका को सम्मिलित किया गया है।

आदित्य अध्यक्ष एवं अक्षय सचिव मनोनीत

आदित्य भटेवरा
अध्यक्ष–तरूण परिषद्, उज्जैन

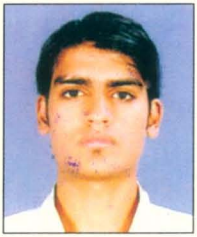

अक्षय लोढ़ा
सचिव–तरूण परिषद्, उज्जैन

उज्जैन। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् नमकमंडी शाखा की साधारण सभा में नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें श्री आदित्य भटेवरा को अध्यक्ष एवं श्री अक्षय लोढ़ा को सचिव मनोनीत किया गय है। इस अवसर पर श्री नितेश नाहटा, श्री दीपक डागरिया, श्री संजय कोठारी, श्री संजय गिरिया, श्री वीरेन्द्र गोलेचा, पूर्व अध्यक्ष श्री विकास पगारिया आदि ने सभा में परिषद् के रचनात्मक कार्यों पर चर्चा कर चयन प्रक्रिया सम्पन्न की।

श्री पलाश भंडारी, श्री संयम नाहटा, श्री अभिषेक सकलेचा, श्री रमेश जैन, श्री रोहित कोठारी, श्री कुशाग्र जैन आदि उपस्थित महानुभावों ने हर्ष व्यक्त किया।

बदनावर। नगर की 10 वर्षीय बालिका ईहा पिता श्री पीयूष जी जैन द्वारा शत्रुंजय तीर्थ पर जाकर उपधान तप की तपस्या की गई। तप पूर्ण कर बदनावर आने पर परिषद् परिवार द्वारा बालिका का बहुमान किया गया।

अलीराजपुर। पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के स्वास्थ्य की मंगलकामना से 31 जनवरी 2016 को पटेल पब्लिक स्कूल में पाँचवा निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण केम्प आयोजित किया गया। इसमें 500 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इनमें से विशेष बीमारियों से ग्रस्त 33 रोगियों को अलीराजपुर से धीरज हॉस्पीटल बड़ौदा निःशुल्क ले जाया गया। आयोजन में 25 चिकित्सकों एवं 15 अन्य सदस्यों की टीम ने अपनी सेवाएं प्रदान की। सेवाओं के लिए परिषद् अध्यक्ष श्री कमलेश काकड़ीवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

चैन्नई। अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र की ओर से प्राकृत भाषा प्रशिक्षण के लिए पत्राचार प्रमाण पत्र कक्षाएं पुरुषवाक्कम स्थित सी.यू.शाह भवन में आयोजित हुईं। इसमें जैन व जैनेत्तर, हिन्दी व अन्य भाषा-भाषियों के अलावा साधु-साध्वी सम्मिलित हुए। यह प्रशिक्षण पिछले 16 वर्षों से निरंतर प्रदान किया जा रहा है।

थाने। श्री के.के.संघवी की पौत्री व श्री धीरज संघवी की पुत्री कु. रिया संघवी ने 10 वर्ष की आयु में आचार्य श्री जयानंदसूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में भीनमाल तीर्थ पर आयोजित उपधान तप में भाग लेकर निर्विघ्न आराधना सम्पन्न की। 24 जनवरी को मालारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस तप आराधना में 47 दिन तक साधु जैसा जीवन व्यतीत करना होता है। ऐसी कठिन तपस्या करने पर जिन शासन नन्ही तपस्वी आत्मा की अनुमोदना करता है।

इन्दौर। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा इन्दौर की नवीन कार्यकारिणी का गठन सर्वानुमति से किया गया। निवृत्तमान अध्यक्ष श्री दिनेशजी मेहता द्वारा अध्यक्ष पद हेतु श्री श्रेणिक जी कोठारी एवं सचिव पद हेतु श्री रमेशजी श्रीश्रीमाल के नाम के प्रस्ताव को हर्षध्वनि के साथ पारित किया गया। अन्य पदाधिकारियों में श्री तेजकुमार उपाध्यक्ष, श्री सुनिल जी बांठिया कोषाध्यक्ष, श्री संजय लुक्कड़ सह सचिव, श्री शैलेष कोठारी संगठन सचिव, श्री नरेन्द्र राठौर उत्सव सचिव, श्री संजय वागरेचा प्रचार सचिव मनोनीत किए गए। नवनियुक्त सभी पदाधिकारियों को सभी परिषद् साथियों ने शुभकामनाएं दीं।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. का राजस्थान विहार का कार्यक्रम

मार्च 2016			अप्रैल / मई 2016		
दिनांक से दिनांक तक	:	स्थल	1-2-3 अप्रैल	-	रेतवड़ा
19 से 24 मार्च	-	भांडवपुर तीर्थ	4 अप्रैल	-	बाकरा गांव
25 मार्च	-	पीवाणा	5 अप्रैल	-	भोदरा
26 मार्च	-	मेगलवा	6 अप्रैल	-	भागल
27 एवं 28 मार्च	-	चौराऊ	7 अप्रैल	-	नरता
29 एवं 30 मार्च	-	सायला	8-9-10 अप्रैल	-	भीनमाल
31 मार्च (प्रातः)	-	गोल	11 से 30 अप्रैल	-	72 जिनालय तीर्थ
31 मार्च (सायं)	-	आलासण	4-12 मई	-	सियाणा

(* उपरोक्त तारीख एवं समय में परिवर्तन संभावित है।)

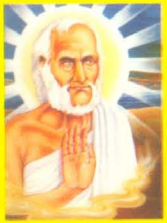

हार्दिक बधाई

हार्दिक बधाई

सुश्रावक श्रेष्ठीवर्य श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी पोरवाल, बागरा को

समाज गौरव अलंकरण

प.पू. गच्छाधिपति साहित्य मनीषी राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने आपकी श्रीसंघ समाज के प्रति समर्पण सेवा भावना को लेकर, बागरा नगर में आयोजित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ महाशतकोत्सव के पावन अवसर पर "समाज गौरव" अलंकरण से गौरवान्वित कर आशीर्वाद प्रदान किया है ।

आपको सरस्वती माँ का वरदान प्राप्त है । आप कलम के धनी है, शब्दों के शिल्पी है । आपकी गुरुभक्ति अनुमोदनीय है । इस मंगल अवसर पर हम अनुमोदना करते हुए अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं ।

श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी पोरवाल बागरा को "समाज गौरव" का सम्मान राजस्थान के माननीय गृहमंत्री श्रीमान गुलाबचंदजी कटारिया के शुभ हस्ते दिनांक 20.2.2016 वि.सं. 2072 माघ शुक्ल 13 को बागरा नगर में आयोजित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ महाशतकोत्सव के पावन अवसर पर प्रदान किया गया

अनुमोदनकर्ता

सौधर्म बृहद्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, बागरा

(जिला जालोर-राज.)

श्री बागरा जैन संघ, चेन्नई

विशेष : श्री नरेन्द्रजी को भरतपुर ट्रस्ट मण्डल का ट्रस्टी नियुक्त किया गया

जैन विश्व

पदयात्री तीर्थ में ध्वजारोहण सम्पन्न

थाने। थाने तीर्थ के निकटस्थ मानपाड़ा में श्री शांतिधाम पदयात्री तीर्थ में 23वाँ ध्वजारोहण माघसुद 13 शनिवार दिनांक 20 फरवरी 2016 को प्रातः शुभ बेला में मुनिराज श्री जिनेशचन्द्र सागरजी म.सा. की निश्रा में आहोर निवासी संघवी कुंदनमलजी भुताजी परिवार द्वारा सम्पन्न किया गया। स्मरण रहे गच्छाधिपति आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित इस तीर्थ में पिछले 22 वर्षों से श्री के.के. संघवी के संयोजन में थाने तीर्थ से पदयात्रा निरंतर जारी है।

थाने। श्री कोंकण शत्रुंजय तीर्थ मुनिसुव्रत जिनालय, टेंभी नाका थाने में इस वर्ष लब्धि विक्रम समुदाय के आचार्यश्री यशोवर्मसूरिजी, आचार्यश्री पद्मयशसूरिजी, आचार्य श्री वीरयशसूरिजी, आचार्य श्री अजितयशसूरिजी आदि चार आचार्यों के मुनि मंडल एवं विशाल साध्वी मंडल का चातुर्मास होने जा रहा है। पूज्यश्री का भव्य चातुर्मास प्रवेश आषाढ़ सुदी 6 रविवार दिनांक 10 जुलाई 2016 को होगा।

सोनगढ़। मथुरा की जैन संस्कृति एवं पुरातत्व पर आधारित डॉ.रेणुका पोरवाल द्वारा लिखित प्रमाणित विशालकाय ग्रंथ का विमोचन 23 वें जैन साहित्य समारोह के अन्तर्गत सोनगढ़ (गुजरात) में हुआ। महावीर जैन विद्यालय मुंबई द्वारा आयोजित इस समारोह में जैन धर्म से संबंधित प्राचीन अभिलेखों, मूर्तिकला आदि को संजोकर अंग्रेजी में द जैन स्तूपा एट मथुरा : आर्ट एंड आईकन्स (The Jain Stupas at Mathura : Art & Icons) शीर्षक से प्रकाशित यह ग्रंथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

उपधन मोक्षमाला समारोह सम्पन्न

शंखेश्वर। श्री शंखेश्वर प्रवचन श्रुततीर्थ पर आचार्य श्रीमद् विजयपूर्णचन्द्र सूरिश्वरजी म. एवं श्री युगचन्द्रसूरिजी म. के सान्निध्य में श्रीमति चन्द्रिकाबेन हेमेन्द्रभाई कापड़िया परिवार द्वारा आयोजित उपधान तप मोक्ष मालारोपण महोत्सव में दिनांक 22 जनवरी को 74 आराधकों को मोक्ष माला पहनाई गई। इस अवसर पर 7 आचार्य भगवंत

सहित 250 साधु-साध्वीगण की निश्रा में 3500 से ज्यादा श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

चैन्नई। मद्रास विश्वविद्यालय में भारतीय परम्परा में समाधिमरण विषय पर 18 से 20 फरवरी तक तीन दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें लोमोला मेरीमाऊंट विश्वविद्यालय, लांस एंजिला के प्रो. क्रिस्टोफर चेप्पल, मारबर्ग फिलिप्स विश्वविद्यालय जर्मनी के प्रो. जयेन्द्र सोनी, प्रो. लुइटगार्ड सोनी, शगुन सी जैन, प्रो. पी. सी. त्रिपाठी आदि ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ.प्रियदर्शना जैन और श्री राहुल बोरदिया ने अंतगड़दसा सूत्र के आलोक में निर्वाण के लिए संलेखना की आवश्यकता बताई। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने भगवती आराधना में संलेखना की प्रक्रिया से अवगत कराया। अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए।

पेदमीरम। श्री पेदमीरम तीर्थ (भीमावरम) से 45 कि.मी. दूर स्थित श्री आचन्ता तीर्थ पर आचार्य श्रीमद् राजतिलक सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैत्र मस की ओली शा राजेन्द्रकुमार शेषमलजी निमसोलंकी परिवार -पालकोल द्वारा आयोजित की जा रही है।

भोपालगढ़। श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय भोपालगढ़ जिला जोधपुर में अनुभवी विज्ञान व वाणिज्य वर्ग से प्रधानाचाय4, व्याख्याता (अकाउंटेंसी, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, संस्कृत आदि) के लिए 40 वर्ष से ऊपर या सेवानिवृत्त जैन परिवारों के भाई-बहन अपना आवेदन दे सकते हैं। इस हेतु मोबा.नं.093801-02607 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

निम्बाहेड़ा। जैन जागृति सेन्टर निम्बाहेड़ा के दूसरे कार्यकाल के अध्यक्ष श्री अशोक नवलखा ने नवीन कार्यकारिणी की घोषणा की जिसमें पदाधिकारियों के साथ सलाहकार व कार्यक्रम संयोजक मनोनीत किए गए।

मंगल गुरू प्रार्थना प्रतियोगिता का परिणाम

राजगढ़। श्री त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ व परिषद् परिवार राजगढ़ (धार) द्वारा साध्वी श्री काव्यरत्ना श्रीजी, साध्वी श्री कुलरत्ना श्री जी एवं साध्वी श्री विरतीरत्ना श्रीजी की निश्रा में 'मंगल गुरु प्रार्थना' का प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पुरस्कृत सहभागियों की सूची इस प्रकार है:-

क्र.	नाम	शहर	पुरस्कार का प्रकार
01	श्रीमती प्रीतिबेन विक्रमभाई बोहरा	सूरत	प्रथम
02	श्रीमती प्रेमलता अशोकजी मेहता	दाहोद	द्वितीय (प्रथम)
03	श्रीमती प्रमिला वीरेन्द्रजी कीमती	इन्दौर	द्वितीय (द्वितीय)
04	श्रीमती पूर्वी सी. धरू	मुम्बई	द्वितीय (तृतीय)
05	श्रीमती विंध्या अशोकजी संघवी	बदनावर	द्वितीय (चतुर्थ)
06	श्रीमती विजया हीरालालजी दंगवाड़ावाला	बड़नगर	तृतीय
07	श्रीमती सुधा पंकजजी	इन्दौर	चतुर्थ (प्रथम)
08	श्रीमती लता कमलजी इमलीवाला	रिंगनोद	चतुर्थ (द्वितीय)
09	श्रीमती क्रिना दिनेशभाई शाह	अहमदाबाद	चतुर्थ (तृतीय)
10	श्रीमती सारिका विनयजी बाफना	लिमड़ी	पंचम (प्रथम)
11	श्रीमती शारदा बेन वागजीभाई वोहरा	थराद	पंचम (द्वितीय)
12	सुश्री मोक्षा हीरालालजी दोसी	सूरत	पंचम (तृतीय)
	सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागी		
13	श्रीमती कल्पना मनोहरलालजी चण्डालिया	राजगढ़(धार)	सांत्वना
14	कु. श्रेया संजयजी काग्रेसा	राजगढ़(धार)	सांत्वना
15	श्री रमेशचन्द जी रतनलालजी भण्डारी	राजगढ़(धार)	सांत्वना
16	श्रीमती मंजुला मांगीलालजी पावेचा	राजगढ़(धार)	सांत्वना
17	श्रीमती संगीता विनोदजी छजलानी	राजगढ़ धार	सांत्वना
18	श्रीमती सुरेखा शैलेषजी शाह	अहमदाबाद	सांत्वना
19	श्रीमती गीताबेन दिनेशजी वोरा	अहमदाबाद	सांत्वना
20	श्रीमती हेमा विक्रमजी शाह	अहमदाबाद	सांत्वना
21	श्रीमती हंसाबेन भरतभाई शाह	अहमदाबाद	सांत्वना
22	श्रीमती भारती बेन उदयभाई व्होरा	अहमदाबाद	सांत्वना
23	श्रीमती शिल्पा राजेशजी मोदी	अहमदाबाद	सांत्वना
24	श्रीमती ललिताबेन एच.शाह	अहमदाबाद	सांत्वना
25	श्रीमती रेणु पी. शाह	अहमदाबाद	सांत्वना
26	श्रीमती विजय राजकुमारजी शाह	अहमदाबाद	सांत्वना
27	श्रीमती कैलाशबेन अशोक भाई शाह	आणंद	सांत्वना
28	श्रीमती किंजलबेन अंकितजी अदाणी	आणंद	सांत्वना

29	श्रीमती गुणीबेन कांतिलालजी गांधी	आणंद	सांत्वना
30	श्रीमती वर्षाबेन रमेशभाई व्होरा	आणंद	सांत्वना
31	श्रीमती सुशीला बेन नवीनभाई देसाई	थराद	सांत्वना
32	श्रीमती मीना बेन वसंतभाई धरु	थराद	सांत्वना
33	श्रीमती चंद्रिका बेन महेशजी संघवी	थराद	सांत्वना
34	श्रीमती रसिला बेन अरविंदभाई व्होरा	थराद	सांत्वना
35	श्रीमती भारती प्रकाशभाई व्होरा	मुम्बई	सांत्वना
36	श्रीमती कोकिलाबेन नवीनजी संघवी	मुम्बई	सांत्वना
37	श्रीमती अंकिता विशालजी दोसी	मुम्बई	सांत्वना
38	श्रीमती कंचनबेन सेवन्तीलालजी देसाई	मुम्बई	सांत्वना
39	श्रीमती बच्चीबेन आर. दोसी	मुम्बई	सांत्वना
40	श्री प्रकाशजी मफतलालजी वोहरा	मुम्बई	सांत्वना
41	श्रीमती निकिता प्रज्ञेशभाई शाह	मुम्बई	सांत्वना
42	श्रीमती हेतल आर. शाह	मुम्बई	सांत्वना
43	श्रीमती अर्पिता मयंक भाई शाह	सूरत	सांत्वना
44	श्रीमती सिल्वी हितेशभाई संघवी	सूरत	सांत्वना
45	श्रीमती सृष्टि विनोद भाई व्होरा	सूरत	सांत्वना
46	श्रीमती रिंकू निलेश जी धरु	सूरत	सांत्वना
47	सुश्री दिशा महेन्द्रभाई व्होरा	सूरत	सांत्वना
48	श्रीमती रसिला बेन जयन्तिलालजी अदाणी	सूरत	सांत्वना
49	श्रीमती साधना बेन छाजेड़	करही	सांत्वना
50	श्रीमती सरोज बेन डाकोलिया	करही	सांत्वना
51	श्रीमती राजू बेन कीर्ति जी बाफना	लिमड़ी	सांत्वना
52	श्रीमती योगिता सोहिल जी सोनी	लिमड़ी	सांत्वना
53	श्रीमती प्रमिला अजय जी भंसाली	लिमड़ी	सांत्वना
54	श्रीमती निर्मला झमकलालजी जैन	राजोद	सांत्वना
55	श्रीमती अंगूरबाला चिमनलालजी मूणत	जावरा	सांत्वना
56	श्रीमती अनिता दिलीपजी जैन	मोहनखेड़ा	सांत्वना
57	श्रीमती प्रियंका जैन	सैलाना	सांत्वना
58	श्री मुकेश जी कोठारी	लाबरिया	सांत्वना
59	श्री राजेन्द्र जी शरदचन्दजी कटारिया	लाबरिया	सांत्वना

60	श्रीमती नेहा मयंकजी कटारिया	लाबरिया	सांत्वना
61	श्रीमती अनिता संजय जी संघवी	उज्जैन	सांत्वना
62	श्री राजेन्द्र जी पगारिया	उज्जैन	सांत्वना
63	श्रीमती अरुणा अम्बोर	धार	सांत्वना
64	श्रीमती शकुंतला जैन	धार	सांत्वना
65	श्रीमती पुष्पा रविन्द्रजी जैन	धार	सांत्वना
66	श्रीमती श्रीकांता जैन	धार	सांत्वना
67	श्री आदित्य धोका	धार	सांत्वना
68	श्रीमती रानी श्रीश्रीमाल	धार	सांत्वना
69	श्री अर्हम श्रेणिकजी धोका	धार	सांत्वना
70	श्रीमती संगीता मंडलेचा	दसई	सांत्वना
71	श्रीमती संतोष मंडलेचा	दसई	सांत्वना
72	श्रीमती पूजा मंडलेचा	दसई	सांत्वना
73	श्रीमती चायना अभिषेक जी जैन	कुक्षी	सांत्वना
74	श्रीमती रीना रितेशजी जैन	कुक्षी	सांत्वना
75	श्रीमती दीपा नितेश जी डूंगरवाल	कुक्षी	सांत्वना
76	श्रीमती सारिका सुरेन्द्र जी जैन	कुक्षी	सांत्वना
77	श्रीमती तृप्ति राहुल जी जैन	कुक्षी	सांत्वना
78	श्रीमती श्वेता पीयूष जी जैन	कुक्षी	सांत्वना
79	श्रीमती खुशबू सपनजी पोरवाल	कुक्षी	सांत्वना
80	कु. वेदिका अश्विन जैन	कुक्षी	सांत्वना
81	श्रीमती अंजना रसिकजीजैन	कुक्षी	सांत्वना
82	श्रीमती रूचि अक्षय जी डूंगरवाल	कुक्षी	सांत्वना
83	श्रीमती रोमी प्रियंकेशजी जैन	कुक्षी	सांत्वना
84	श्रीमती खुशबू रजतजी जैन	कुक्षी	सांत्वना
85	श्रीमती अरुणा संजयजी बाठिया	रिंगनोद(धार)	सांत्वना
86	श्रीमती ज्योति झमकलालजी कोठारी	रिंगनोद(धार)	सांत्वना
87	श्रीमती चेलसी धोका	रिंगनोद(धार)	सांत्वना
88	श्रीमती अंजलि हरण	रिंगनोद(धार)	सांत्वना
89	श्रीमती मुक्ता भंसाली	रिंगनोद(धार)	सांत्वना

90	श्रीमती सुनिता लुणावत	रिंगनोद(धार)	सांत्वना
91	श्रीमती सरोज जैन	रिंगनोद(धार)	सांत्वना
92	श्रीमती रश्मि मोहितजी तांतेड़	धार	सांत्वना
93	श्रीमती मंजू उत्तमजी भण्डारी	विजयवाड़ा	सांत्वना
94	श्री सुशील रविन्द्रजी नाहर	कुशलगढ़	सांत्वना
95	श्रीमती सुषमा सुराणा	इन्दौर	सांत्वना
96	श्रीमती सुभद्रा सकलेचा	इन्दौर	सांत्वना
97	श्रीमती मोना मेहता	इन्दौर	सांत्वना
98	श्रीमती सुधा प्रदीपजी डूंगरवाल	इन्दौर	सांत्वना
99	श्रीमती मोनिका मनीषजी जैन	इन्दौर	सांत्वना
100	श्रीमती स्नेहलता शांतिलालजी डूंगरवाल	इन्दौर	सांत्वना
101	श्रीमती राशिका पारिख	इन्दौर	सांत्वना
102	श्रीमती प्रमिला अशोकजी जैन	इन्दौर	सांत्वना
103	श्रीमती गोयम बेन जैन	इन्दौर	सांत्वना
104	श्रीमती मोनिका गौरव जी कर्नावट	पारा	सांत्वना
105	श्रीमती सीमा मनीष जी व्होरा	पारा	सांत्वना
106	श्रीमती राखी मनोज जी भंडारी	पारा	सांत्वना
107	श्रीमती जयन्ति आशीष कोठारी	पारा	सांत्वना
108	श्रीमती कीर्ति सेठिया	रतलाम	सांत्वना
109	श्रीमती रीना कोठारी	रतलाम	सांत्वना
110	श्री अनिल जी छीपानी	रतलाम	सांत्वना
111	कु. नेहा जैन	रतलाम	सांत्वना
112	श्रीमती राजकुमारी प्रकाशजी जैन	रतलाम	सांत्वना
113	श्रीमती सरोज तेजमलजी कांसवा	रतलाम	सांत्वना
114	श्रीमती इन्दुबेन मानमलजी गोलेचा	बड़नगर	सांत्वना
115	श्रीमती विजया बेन जैन	बड़नगर	सांत्वना
116	श्रीमती रेणु चौधरी	बड़नगर	सांत्वना
117	कु. ऋषित संघवी	बदनावर	सांत्वना
118	श्रीमती शिखा मोहित वागरेचा	खाचरोद	सांत्वना
119	श्रीमती किरणबेन भंडारी	करवड़	सांत्वना

गुरु राजेन्द्र जन्मभूमि

भरतपुर महातीर्थ

तीर्थ संस्थापक एवं मार्गदर्शक
सुविशाल गच्छाधिपति
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

इस महातीर्थ परिसर में.....

- त्रिमंजिला विशाल महाप्रसाद
- गुरु राजेन्द्र शताब्दी अखण्ड ज्योत
- विश्व का सर्वप्रथम श्रीऋषभ केशरी माँ स्मृति मन्दिर
- सुविधायुक्त धर्मशाला एवं भोजनशाला की सम्पूर्ण व्यवस्था
- नूतन धर्मशाला, भोजनशाला, तीर्थ पेढ़ी का निर्माण कार्य गतिशील है।

दर्शनार्थ अवश्य पधारें!

निवेदक-
श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट
सेवर रोड़, भरतपुर (राज.) ☎ 05644-260405

आगरा से 44 कि.मी. दिल्ली एवं जयपुर से 180 कि.मी. दूरी पर स्थित है।
मुम्बई एवं मेघनगर से जनता एक्सप्रेस, पश्चिम एक्सप्रेस व देहरादून एक्सप्रेस प्रतिदिन मिलती है।

॥ तीर्थ मंडन श्री सुमतिनाथ स्वामिने नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

प्रकृति की पावन गोद में निर्मित

राजेन्द्र नगर तीर्थ

तीर्थ प्रेरक -
सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दर्शनार्थ अवश्य पधारें।

इस परिसर की परिधि में...

- श्री सुमतिनाथ जिन मन्दिर
- श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर (विश्व की सर्वप्रथम खड़ी प्रतिमा)
- जयन्तसेन साधना मन्दिर
- गुलाब बाग
- जयन्तसेन स्वाध्याय वाटिका
- धर्मशाला एवं भोजनशाला

निमन्त्रक

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर तीर्थ ट्रस्ट, देवीसपेटा, जिला–नेल्लोर (आ.प्र.)
मोबाईल : 09440279500

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव
श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : श्री जयन्तसेन म्युजियम
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

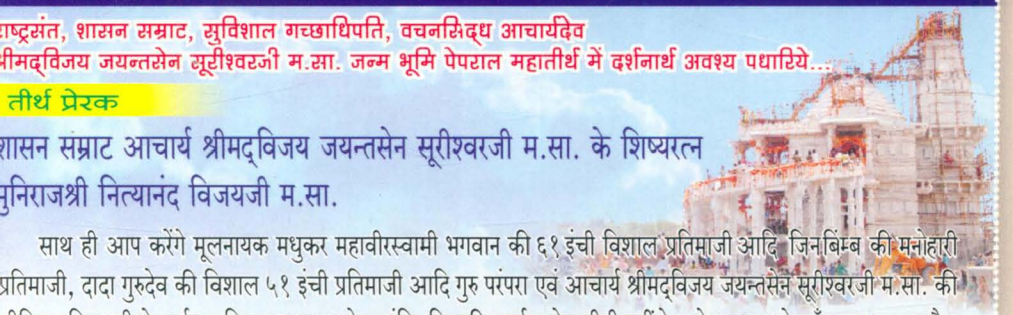

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 112

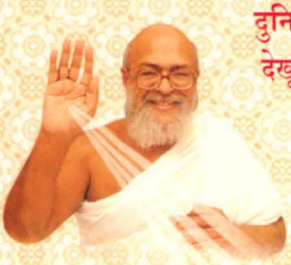

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता	:	अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक	:	शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनिजर	:	आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष	:	नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष	:	श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001